ओ३म्

चमत्कारी ओषधियाँ

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

8।

* ओ३म् *

चमत्कारी औषधियाँ

लेखक
परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६

मूल्य : रूपये १२.००

प्रकाशक : गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६/ संस्करण : १९९३, मुद्रक : जयमाया ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CHAMATKAARI AUSHADHIYAN
by Swami Jagdishwaranand Saraswati

भूमिका

महान् वेदज्ञ, योगिराज, वैदिक धर्मोद्धारक, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज का छठा नियम इस प्रकार बनाया है—

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

इस पुस्तक से मनुष्यों की शारीरिक उन्नति होगी, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। आयुर्वेदिक चिकित्सा के अनमोल रत्नों का इसमें संग्रह है। इस ग्रन्थ में उल्लिखित नुस्खों का सेवन कर रोगी नीरोग होंगे, स्वस्थ व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट-बलिष्ठ और दीर्घायु होंगे।

इस छोटे-से ग्रन्थ में हमने गागर में सागर को उँडेला है। इसमें सहस्रों पृष्ठों का निचोड़ है, अनेक विद्वानों, संन्यासियों, आयुर्वेदाचार्यों के जीवनभर के अनुभवों का समावेश है।

आयुर्वेद-चिकित्सा-पद्धति अत्यन्त सस्ती और अत्यधिक लाभप्रद है। बड़, पीपल, गूलर, कीकर, फिटकरी, नीलाथोथा, धनिया आदि के द्वारा ही बहुतसे भयंकर रोगों को दूर किया जा सकता है। ग्रन्थ में दिये सभी नुस्खे अनेक बार के परीक्षित हैं, आप भी निर्भय होकर प्रयोग कीजिए और लाभ उठाइए।

पुस्तक में कोश का क्रम है फिर भी विषय-सूची दे दी गई है।

देश और विदेश में निरन्तर भ्रमण में रहने के कारण अब मैं पत्रोत्तर देने में असमर्थ हूँ, अतः कोई भी पाठक पत्र न लिखें। पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़कर लाभ उठाएँ।

वेद सदन
माडल टाउन,
दिल्ली-११०००९

(स्वामी) जगदीश्वरानन्द सरस्वती
२०.३.८५

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

जन्म—२० जनवरी, १९३१

शिक्षा— पंजाव विश्वविद्यालय से 'प्रभाकर' तथा बी.ए., दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए.।

लेखन कार्य—वेद, रामायण, महाभारत, दर्शन और आयुर्वेद पर अब तक आपके ६५ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं जिनकी विद्वानों और पाठकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्रभावशली वक्ता—लेखक होने के साथ आप प्रभावशाली वक्ता भी हैं। वेद और योग के रहस्यों को अत्युत्तम रीति से प्रकट करनें में दक्ष हैं। पाखण्डवाद के प्रति बड़े जोश से बोलते हैं।

विदेश-भ्रमण—संन्यास में दीक्षित होने के पश्चात् आपने सूरिनाम गुयाना, ट्रीनिडाड, हालैण्ड, फिजी-द्वीप, श्रीलंका में भी वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाई। आपके जीवन और उपदेश दोनों ने ही लोगों को प्रभावित किया।

पुस्तकालय—आपका व्यक्तिगत पुस्तकालय वहुत विशाल है। इतना बडा धार्मिक पुस्तकालय देहली में शायद ही कोई हो।

संन्यास-प्रवेश— आप नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। आपने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए अर्पित किया हुआ है। १६ फरवरी, १९७५ वसन्त पञ्चमी के ऐतिहासिक तथा पावन पर्व पर आप अपने अति समृद्ध परिवार को त्यागकर संन्यासाश्रम में दीक्षित हो गयें।

आप वेद के विद्वान् हैं, उपनिषदों का आपने मन्थन किया है, रामायण और महाभारत के समालोचक हैं। मत-मतान्तरों पर आपका गम्भीर अध्ययन है, सिद्धान्तों के आप मर्मज्ञ हैं, वैदिक क्रर्मकाण्ड के आप विशेषज्ञ हैं। इस सबके साथ आप योगाभ्यासी भी हैं। स्वभाव के बड़े मधुर हैं, सादगी के पुञ्ज हैं, सच्चरित्र और ईमानदार हैं, बड़े मिलनसार और विनोदी हैं।

विषय-सूंची

स्वामीजी की एक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक

घरेलू ओषधियाँ

आयुर्वेदिक ओषधियों के सम्बन्ध में यह स्वामीजी की सर्वप्रथम कृति है। पुस्तक कितनी उपयोगी है इस बात का अन्दाजा इसी से लगा लें कि पुस्तक के आठ संस्करण छप चुके हैं। लाखों व्यक्तियों ने इसे पढ़ा है, सहस्रों रोगियों के रोग नष्ट हुए हैं, बहुतों के जीवन में आशा का सञ्चार हुआ है, कितनों को ही नया जीवन मिला है। पाठकों ने पुस्तक की बहुत प्रशंसा की है और इसे हृदय से अपनाया है। प्रतिदिन इसकी प्रशंसा में पत्र आते रहते हैं। पुस्तक में २५० रोगों के लिए एक सहस्र नुस्खे दिये गये हैं। इसे अवश्य पढ़िए और लाभ उठाइए।

।। ओ३म् ।।

चमत्कारी ओषधियाँ

अण्डकोश-वृद्धि

१. इन्द्रायण की जड़ को पानी में पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करें। यह लेप अण्डकोश के वर्म और दर्द को दूर करता है।

२. गूगल शुद्ध ६ ग्राम, अरण्डी का तेल १२ ग्राम, गोमूत्र १२० ग्राम—इन तीनों को मिलाकर निरन्तर एक मास तक पीने से अण्डकोश-वृद्धि रोग दूर हो जाता है।

३. अरण्डी की जड़ का चूर्ण ४ ग्राम को १२० ग्राम दूध में पीस एवं छानकर और १० ग्राम अरण्डी का तेल मिलाकर पीने से १' २० दिन में रोग नष्ट हो जाता है।

४. वच और सरसों को पानी में पीसकर तथा गर्म करके सुहाता-सुहाता लेप करें।

अतिसार = दस्त

१. इन्द्रजौ (कड़वे) का चूर्ण ३ ग्राम प्रतिदिन पानी के साथ लेने से खून गिरना, अतिसार और पथरी दूर होती है।

२. दो ग्राम घी में भुनी हुई ३ ग्राम भाँग को शहद में मिलाकर रात्रि में चाटने से नींद खूब आती है। प्रत्येक प्रकार के दस्त, संग्रहणी और बदहज़्मी दूर होती है।

३. इन्द्रजौ की जड़ की छाल और अतीस—दोनों समभाग = बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर छान लें। इसमें से डेढ़-डेढ़ ग्राम दवा दिन में कई बार शहद के साथ चाटने से हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

४. सूखे आँवले २५० ग्राम लेकर सिलबट्टे से पानी के साथ बारीक पीस लें और नाभि के चारों ओर एक गोल चक्र में लगा दें। नाभि बीच में से खाली

रहे। इसमें तुरन्त अदरक का रस भर दें और रोगी को बराबर चित् लेटा रहने दें। इस क्रिया से बिना औषध खाये भयंकर-से-भयंकर पानी की भाँति बहनेवाले दस्त भी ठीक हो जाते हैं। आयुर्वेद की अद्‌भुत एवं चमत्कारी ओषधि है।

५. जायफल का चूर्ण आधा ग्राम से एक ग्राम तक पानी अथवा दही के पानी के साथ दिन में दो बार खिलाने से हर प्रकार के दस्तों को तुरन्त आराम आ जाता है।

६. आम की गुठली की मींगी निकालकर इसे दही के पानी में पीस लें और रोगी की नाभि पर लेप कर दें। दस्त अवश्य ही बन्द हो जाते हैं।

७. ५० ग्राम चावलों को २५० ग्राम पानी में भिगो दें। २ घण्टे पश्चात् चावलों का पानी तैयार हो जाएगा। इस पानी में मिश्री मिलाकर पिलाने से खूनी दस्त बन्द हो जाते हैं।

८. नागकेसर का चूर्ण ३ ग्राम, गाय का मक्खन १० ग्राम में मिलाकर दिन में दो-तीन बार खिलाने से खूनी दस्त बन्द हो जाते हैं।

९. इन्द्रजौ (कड़वे) की जड़ की छाल ८० ग्राम को एक लीटर (१ किलो) पानी में औटाएँ। जब १०० ग्राम पानी रह जाए तब छानकर १०० ग्राम बकरी का दूध मिलाकर औटाएँ। जब पानी जलकर केवल दूध रह जाए तब इसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से खूनी दस्त तुरन्त बन्द हो जाते हैं।

१०. गूलर की पत्तियाँ १० ग्राम लेकर बारीक पीस लें और २५० ग्राम पानी में छान लें। इस पानी के पिलाने से हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

११. इन्द्रजौ (कड़वे) की जड़ की छाल ४० ग्राम को बारीक पीसकर आठगुणे पानी में पकाएँ। जब आठवाँ भाग पानी शेष रह जाए तब मलकर छान लें। इसी प्रकार अनार का छिलका भी ४० ग्राम लेकर आठगुणे पानी में औटाएँ। इसे भी आठवाँ भाग शेष रहने पर उतारकर छान लें। फिर दोनों को मिलाकर अग्नि पर इतना पकाएँ कि गाढ़ा हो जाए। बस, दवा तैयार है। इसमें से ६ ग्राम दवा मठे के साथ रोगी को पिलाएँ। मृत्यु के मुख में पहुँचे हुए रोगी को भी लाभ होता है।

१२. दालचीनी को पीसकर बारीक कर लें। २ ग्राम चूर्ण प्रतिदिन ताज़ा पानी से दें। अतिसार मिट जाता है।

१३. बकरी के २५० ग्राम दूध में ६ ग्राम तिल का चूर्ण और मिश्री

मिलाकर पिलाने से अतिसार मिट जाता है।

१४. बिहीदाना १० ग्राम को रात्रि में २५० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः ज़ोरदार हाथों से मलकर कपड़े में छान लें। फिर थोड़ी-सी मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाएँ। पुराने-से-पुराना अतिसार दूर हो ज़ाता है।

१५. भाँग का चूर्ण २ ग्राम, मधु (शहद) अथवा अर्क सौंफ के साथ लेने से आम-अतिसार तत्काल नष्ट हो जाता है।

१६. आधा ग्रेन (२ चावल) इन्द्रजौ का चूर्ण पानी के साथ खिलाने से बच्चों का अतिसार मिट जाता है।

१७. बच्चों के पुराने दस्तों को दूर करने के लिए सोडा-बाई-कार्ब (खाने का सोडा) चौथाई ग्राम (२ रत्ती) दिन में कई बार माता के दूध के साथ दें।

१८. यदि बच्चे को बदहज्मी के कारण दस्त आते हों तो सौंफ १ ग्राम, अजवायन १ ग्राम और जायफल आधा ग्राम—तीनों को बारीक पीसकर २ ग्रेन से ४ ग्रेन (एक रत्ती से २ रत्ती) दवा अर्क सौंफ के साथ दें।

अनेक रोगों की एक दवा

१. धतूरे की कोंपल १० ग्राम, अरण्ड की कोंपल १० ग्राम, मदार (आक, अकौड़ा, अक़वन) की कोंपल १० ग्राम—तीनों को अच्छी प्रकार खरल करके मटर के दाने के बराबर गोलियाँ बना लें। २ से ३ गोली तक गुनगुने पानी के साथ दें।

ये गोलियाँ गठिया, बुखार, हर प्रकार के जोड़ों का दर्द आदि के लिए अतीव गुणकारी हैं। इनके सेवन से कब्ज़ की शिकायत भी दूर हो जाती है।

२. तुलसी के पत्ते २५ से ५० तक लेकर खरल में अथवा ऐसे सिलबट्टे पर पीस लें जिसपर कोई मसाला न पीसा गया हो। यह पीसी हुई तुलसी ६ ग्राम से १० ग्राम तक मीठी दही में मिलाकर खिलाएँ। यदि मीठी दही न मिले अथवा अनुकूल न हो तो उपयुक्त मात्रा में शहद मिलाकर खिलाएँ। दूध के साथ भूलकर भी न दें। छोटे बच्चों को आधा ग्राम दवा शहद में मिलाकर दें।

ओषधि प्रातः निराहार लें। आध घण्टे पश्चात् नाश्ता ले सकते हैं। दवा दिनभर में एक बार ही लें परन्तु असह्य दर्द और क़ष्टप्रद रोगों में २-३ बार भी ले सकते हैं।

इसके निरन्तर ३-४ मास सेवन करने से गठिया का दर्द, खाँसी, सर्दी,

जुकाम (यदि जन्म से हो तो भी), गुर्दे की बीमारी, गुर्दे का काम न करना, गुर्दे की पथरी, सफेद दाग़ या कोढ़, शरीर का मोटापा, वृद्धावस्था की दुर्बलता, पेचिश, अम्लता, मन्दाग्नि, कोष्ठबद्धता = कब्ज़, गैस, दिमाग़ी कमजोरी, स्मरणशक्ति का अभाव, पुराने से पुराना सिरदर्द, बुख़ार, रक्तचाप (उच्च अथवा निम्न), हृदय-रोग, शरीर की झुर्रियाँ, बिवाई (कितनी भी पुरानी हों) और श्वास-रोग दूर हो जाते हैं। इसके सेवन से विटामिन 'ए' और 'सी' की कमी दूर हो जाती है। स्त्री का रुका हुआ रक्तस्राव ठीक हो जाता है। आँख आने या दुखने में लाभदायक है। खसरा-निवारण के लिए रामबाण है।

३. गेहूँ का दलिया भुना हुआ २५ ग्राम, मूसली सफेद का चूर्ण १० ग्राम—दोनों को आधा किलो गो-दुग्ध में उबालें। जब दलिया गल जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर गोघृत १० ग्राम और मधु २० ग्राम मिलाकर खिला दें। सात दिन तक सेवन कराएँ। अनेक रोग नष्ट होकर शरीर में बल-वीर्य की वृद्धि होती है।

४. प्रातः सूर्योदय से पूर्व जो मनुष्य १०० ग्राम जल नासिका-छिद्र से पान करता है, वह बुद्धिमान्, नेत्रज्योति में गरुड़ के समान, वली और बाल पकने जैसे सभी रोगों से मुक्त हो जाता है।

५. ८ अञ्जलि (२५० ग्राम) जल सूर्योदय से पूर्व पान करने से वात-पित्त से होनेवाले रोग नष्ट होते हैं, सुख स्थिर होता है।

नोट—लाभ सूर्योदय के पूर्व पीने से ही होता है। सूर्यास्त के पश्चात् जल कभी नहीं पीना चाहिए। रात्रि के प्रथम पहर में जल विष है, मध्य रात्रि में दुग्ध के सदृश्य और प्रातः सूर्योदय से पूर्व माँ के दुग्ध के समान गुणकारी है।

६. वज्रवल्ली का चूर्ण ६ ग्राम को मिश्री और घृत के साथ एक मास तक सेवन करने से सभी रोग दूर हो जाते हैं।

७. हल्दी का चूर्ण ६ ग्राम, गोघृत ६ ग्राम और मधु १० ग्राम—तीनों को मिलाकर चटाने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं। २-३ मास सेवन करें।

८. निर्गुण्डी (सम्हालू) की जड़ के चूर्ण १० ग्राम को एक सप्ताह तक गोमूत्र के साथ सेवन करने से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

अन्धराता = नक्तान्धता, रतौंधी

१. सफेद प्याज का रस निचोड़कर २-२ बूँद प्रातः-सायं आँखों में डालें।

ो सप्ताह तक डालते रहें। साथ ही सिरस के २० ग्राम पत्ते ठण्डाई की भाँति ोट-छान और मिश्री मिलाकर प्रतिदिन प्रातः पिलाते रहें। नक्तान्धता के लिए रीक्षित प्रयोग है।

२. काली गौ का मूत्र २-२ बूँद प्रातः-सायं २-३ मास तक निरन्तर आँखों ं डालें, नक्तान्धता के लिए चमत्कारी दवा है।

पस्मार = मृगी

१. ब्राह्मी का रस ६ ग्राम, शहद ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर पिलाने से र प्रकार की मृगी ठीक हो जाती है।

२. मालकाँगनी का तेल ५ से १० बूँद मक्खन या मलाई में खिलाने से तज पागलपन, भुलक्कड़पन, दिमाग़ की निर्बलता और मृगी दूर होती है। स तेल की सिर में मालिश भी करें।

३. रीठे का छिलका अत्यन्त बारीक पीसकर प्रतिदिन इसकी नस्य सवार) देने से मृगी दूर हो जाती है।

४. यदि मृगी का रोग पुरुष को हो तो मरे मनुष्य की और स्त्री को हो तो ी की खोपड़ी की हड्डी श्मशान भूमि से लाकर खूब बारीक पीस लें। १ ग्राम ा में १ ग्राम मिश्री मिलाकर प्रतिदिन प्रातः निराहार ताज़ा पानी के साथ एक स तक दें। इस ओषधि के सेवन से मृगी का रोग शर्तिया जाता रहता है। र्वश्रेष्ठ और अद्वितीय दवा है। यदि किसी रोगी को इस दवा से भी लाभ न हो फिर कर्म-रोग समझकर चिकित्सा बन्द कर दें।

५. आक (अकवन, अकौड़ा, मदार) का दूध ५-७ बूँद प्रतिदिन रात्रि में व के दोनों तलवों में मलें। ४० दिन तक प्रयोग करें। प्रभु-कृपा से मृगी भाग एगी।

नोट—४० दिन तक पैरों को पानी से न भिगोएँ। स्नान करते समय पैरों ऊँचा करके रक्खें। तौलिया आदि पैरों में लपेट लें जिससे तलवे भीगने से जाएँ।

६. वच का चूर्ण चौथाई ग्राम (दो रत्ती) प्रतिदिन मधु (शहद) में मिलाकर ाएँ। ४० दिन प्रयोग करें।

७. पलाश (ढाक, टेसू) की जड़ पानी में पीसकर नाक में २-३ बूँद काने से मृगी नष्ट हो जाती है। १०-१५ दिन प्रयोग करें।

८. करेले के पत्ते ५, काली मिर्च ३, लहुसन १—इन सबको बारीक पीसकर इनका रस निकाल लें और दो-दो बूँद नाक के दोनों नथुनों में टपकाएँ। मृगी के दौरे निःसन्देह समाप्त हो जाएँगे। सहस्रों बार का अनुभूत एवं चमत्कारी प्रयोग है।

अम्लपित्त

१. बड़ी या छोटी हरड़ का चूर्ण ६ ग्राम को शहद अथवा गुड़ ६ ग्राम में मिलाकर खिलाएँ, ऊपर से पानी पिलाएँ। इसके केवल तीन दिन के प्रयोग से ही अम्लपित्त रोग का नाश हो जाता है।

२. बिजौरे नींबू का रस २० ग्राम सायंकाल कुछ दिन पीने से अम्लपित्त रोग का नाश हो जाता है।

३. धनिया सूखा १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम—दोनों को ४०० ग्राम पानी में पकाएँ। १०० ग्राम रहने पर उतार लें। इसमें १० ग्राम शहद मिलाकर पिलाने से कुछ ही दिन में अम्लपित्त नष्ट हो जाता है।

४. शहद १२ ग्राम और नींबू का रस ६ ग्राम मिलाकर चटाने से अम्लपित्त शान्त हो जाता है।

५. प्रतिदिन प्रातः १० ग्राम गुड़ चूसने से अम्लपित्त शान्त हो जाता है।

अरुचि = भोजन की इच्छा न होना

१. पकी हुई उत्तम २० ग्राम इमली को ५० ग्राम पानी में भिगो दें। २-३ घण्टे पश्चात् इमली को रगड़कर छान लें। फिर इसमें काला नमक २ ग्राम, पोदीना ४ ग्राम, काली मिर्च एक ग्राम—तीनों को बारीक पीसकर मिलाएँ और रोगी को पिला दें। कम-से-कम एक सप्ताह तक दें। अरुचि को दूर करने के लिए अत्युत्तम ओषधि है।

२. खट्टे अनार का रस ६ ग्राम, शहद १२ ग्राम—दोनों को मिलाकर और तनिक-सा सेंधा नमक डालकर अरुचिवाले रोगी को पिला दें। दो-चार दिन में ही अरुचि दूर होकर भोजन में रुचि उत्पन्न हो जाती है। इस योग से असाध्य अरुचि भी ठीक हो जाती है।

३. भोजन करते समय सोडा-बाई-कार्ब (खाने का सोडा) १ ग्राम को १०० ग्राम पानी में मिलाकर तथा इसमें आधा नीबू निचोड़कर पिला दें। इससे अम्ल = शरीर का तेज़ाबी माद्दा समाप्त होकर भोजन में रुचि बढ़ जाती है।

आँख दुखना

१. अफीम १ रत्ती, रसौत शुद्ध १ ग्राम, फिटकरी १ ग्राम, नीलाथोथा २ ग्रेन (एक रत्ती), गुलाबजल २० ग्राम। पहले गुलाबजल में अफीम और रसौत को मिला लें, फिर शेष दवाओं को भी बारीक पीसकर मिला लें। बस, दवा तैयार है। ड्रापर से २-२ बूँद दिन में तीन-चार बार आँखों में डालें। दुखती आँखों के लिए रामबाण और आइकोकी समानता करनेवाला योग है। दुखती आँखें एक ही दिन में ठीक हो जाती हैं।

२. फिटकरी आधा ग्राम, अर्क गुलाब २० ग्राम—दोनों को शीशी में डालकर अच्छी प्रकार मिला लें। दिन में २-३ बार २-२ बूँद दवा आँखों में डालें। दुखती आँखों के लिए उत्तम दवा है।

३. जिस समय आँख दुखनी आने लगे अथवा यह अनुभव हो कि आँखें दुखनी आनेवाली हैं, उसी समय उस ओर के कान में रुई ठूँस दें। यदि दोनों आँखों के दुखने का सन्देह हो तो दोनों कानों में रुई ठूँस दें। दो-तीन घण्टे में पूर्ण आराम आ जाएगा, आँखें कदापि न दुखेंगी। है न चमत्कारी योग?

४. खट्टे अनार के पत्तों को पीसकर उसकी टिकियाँ बनाएँ। इन टिकियों को आँखों पर रक्खें और ऊपर से रुई रखकर पट्टी बाँध दें। एक ही रात्रि में दुखती आँखें ठीक हो जाएँगी।

५. शुद्ध शहद (मधु) सलाई से आँखों में लगाएँ। दुखती आँखें ठीक हो जाएँगी।

६. ताज़ा आँवले का रस आँखों में डालें। दुखती आँखे ठीक हो जाएँगी।

आँत उतरना (देखें हरणियाँ)

अदरक का मुरब्बा ६ ग्राम से ९ ग्राम तक प्रतिदिन १ मास तक खिलाएँ। आँत उतरने को समाप्त करने के लिए अनुभूत उपाय है।

आग से जलना

१. आलू को अत्यन्त बारीक पीसकर जले हुए स्थान पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दें जिससे इस स्थान को हवा न लगे। तुरन्त आराम होगा।

२. जले हुए स्थान पर शहद का लेप करना भी जलन को तुरन्त दूर करता है।

३. केवल नारियल का तेल लगाना भी अत्यन्त लाभदायक है।

४. सुहागा सफेद १ भाग, पानी २० भाग। सुहागे को पानी में घोल दें। इस पानी से जले हुए घावों को धोने से घाव बिल्कुल साफ हो जाते हैं।

५. आग से जल जाने पर हींग अत्यन्त आश्चर्यजनक और अद्वितीय दवा है। जब कोई व्यक्ति आग से जल जाए तब असली हींग को पानी में घोलकर मुर्ग़ी के पर से, जले हुए स्थान पर दिन-रात में ४-५ बार लगाएँ। प्रभु-कृपा से इसको लगाते ही जले स्थान पर चैन पड़ जाता है और फफोला भी नहीं पड़ता।

आग से न जलना

१. अकरकरा और नौशादर को पीसकर तालु और मुँह में खूब रगड़ने से मुँह में ऐसी शून्यता उत्पन्न हो जाती है कि यदि मुख में अंगारे भी भर लिये जाएँ तो मुँह नहीं जलता।

आधासीसी

१. जमालगोटे के बीज को पत्थर पर घिसकर तुलसी के पत्ते पर अथवा मोमी क़ागज पर चवन्नी के बराबर टुकड़ा लेकर जिस ओर दर्द हो उधर की कनपटी पर लगाकर सुला दो। प्रातः गन्दे पानी का फफोला उभरा हुआ होगा। सुई से इसका पानी निकाल दें। दर्द बिल्कुल बन्द हो जाएगा। घाव पर मक्खन लगा दें।

खाने के लिए उस्तेखद्दूस ताज़ा ३ ग्राम बारीक पीसकर शहद में मिलाकर चटाएँ। पहले ही दिन में आराम हो जाता है सहस्रों बार का अनुभूत योग है। तेल, अचार, लस्सी, खटाई, चावल और केला न खाएँ। मैथुन से बचें।

२. उस्तेखद्दूस ३ ग्राम, धनिया की गिरी ३ ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम—तीनों को ठण्डाई की भाँति घोट-पीसकर और २५० ग्राम पानी में शहद मिलाकर सूर्योदय से पूर्व तीन दिन पिलाएँ। आधासीसी का दर्द मिट जाएगा।

३. रीठे का छिलका पानी में पीसकर २-२ बूँद नाक में टपकाने से आधासीसी का दर्द बन्द हो जाता है।

४ नौशादर पपड़िया १२ ग्राम को अत्यन्त बारीक करके एक बोतल पानी में घोलकर रख लें और बोतल पर १६ चिह्न (निशान) लगा लें। आधासीसी का दर्द आरम्भ होने से एक घण्टा पूर्व एक खुराक पिलाएँ, दर्द बन्द होते ही फिर दूसरी खुराक दें। यदि दर्द हर समय रहता हो तो प्रातः-सायं

एक-एक खुराक दें। हर प्रकार के आधासीसी-दर्द के लिए रामबाण है।

५. खानेवाले तेज तम्बाकू के पत्तों को सुरमे की भाँति बारीक पीस लें, फिर जिस ओर दर्द हो उससे उल्टी ओर की आँख में एक सलाई अच्छी प्रकार लगा दें। आधासीसी के दर्द को दूर करने के लिए अद्वितीय है। एक बार लगाने से पूर्ण लाभ न हो तो एक सलाई पुनः लगा सकते हैं। यदि दूसरे दिन भी दर्द अनुभव हो तो उस दिन भी एक सलाई लगा सकते हैं। २-३ घण्टे पश्चात् आँख पर मक्खन लगा सकते हैं।

आयुर्वेदिक चाय

गेहूँ के आटे को छानने पर जो छान (चोकर, दलिया-सा) शेष बचता है, इसे डाक्टरों ने बहुत लाभदायक बताया है। १० ग्राम छान या चोकर को एक प्याला पानी में अच्छी प्रकार उबालकर कपड़े से छान लें। फिर इसमें दूध और मीठा मिलाकर प्रातः-सायं चाय की भाँति पिएँ। इसके निरन्तर सेवन से शरीर दृढ़ और शक्तिशाली बनता है। यदि इसमें बादाम की पाँच गिरियाँ अच्छी तरह रगड़कर और मिला दी जाएँ तो मनुष्य बूढ़ा नहीं होता, दिमाग़ तेज हो जाता है। नज़ला, जुकाम और सिरदर्द के लिए गुणकारी है। इससे सस्ती और गुणकारी वस्तु मिलनी दुर्लभ है।

आयुर्वेदिक सोडावाटर

दो शीशे के गिलास लें। दोनों में आधा-आधा पानी भर लें। एक गिलास में ३ ग्राम सोडा-बाई-कार्ब और २ चम्मच चीनी मिला लें। दूसरे गिलास में १ ग्राम टाटरी मिला लें। अब दोनों तरल पदार्थों को आपस में मिलाएँ। झाग उठेगी, तुरन्त पी लें। तबीयत प्रसन्न हो जाएगी। यह सोडावाटर का बदल है।

उदर-शूल (Colic pain)

१. निसोथ ८० ग्राम, हरड़ की छाल ४० ग्राम, सोंठ २० ग्राम और काला नमक १० ग्राम लेकर सबको कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। ८ ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ देने से उदरशूल नष्ट हो जाता है।

२. काली मिर्च ६ ग्राम को २५० ग्राम दूध में औटाकर पिलाने से उदरशूल शान्त हो जाता है।

उदर-कृमि

बायबिड़ंग १० ग्राम, कमेला १० ग्राम, ढाक के बीज १० ग्राम—तीनों

वस्तुओं को अत्यन्त बारीक पीसकर और एक वर्ष पुराने गुड़ में मिलाकर ६-६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातःकाल गर्म पानी से खिलाएँ। प्रत्येक प्रकार के उदर के कीड़ों को दूर करनेवाली अद्भुत दवा है। चार दिन दवा खिलाकर पाँचवें दिन गोदुग्ध में ४० ग्राम कास्ट्रायल डालकर पिलाएँ। इससे दस्त होकर सारे कीड़े बाहर निकल जाएँगे। यही क्रिया २-३ बार करें अर्थात् चार दिन गोलियाँ खिलाकर फिर कास्ट्रायल से जुलाब दे दें। तत्पश्चात् २ ग्राम बायावेड़ंग का चूर्ण शहद में मिलाकर ११ दिन तक चटाते रहें। फिर यह रोग जीवनभर कभी नहीं होगा।

२. नींबू के पत्तों का रस १० ग्राम, शहद १० ग्राम—दोनों को मिलाकर १५-२० दिन पिलाने से उदर-कृमि नष्ट हो जाते हैं।

३. बड़ी हरड़ (पीली हरड़) के छिलकों का चूर्ण १० ग्राम रात्रि में सोते समय गुनगुने पानी के साथ ३-४ दिन प्रयोग करने से पेट के कीड़े मर जाएँगे।

४. रैंडी (अरण्ड) के पत्तों का रस दिन में दो-तीन बार गुदा में लगाने से चुनूने मर जाते हैं। ९ ग्राम रस पिलाने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

५. एक सप्ताह तक केवल कच्ची गाजर खाते रहने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

६. बच्चों को नारियल का तेल ६ ग्राम पिलाने से उनके पेट के कीड़े मर जाते हैं।

उदर-रोग

त्रिफला ६ ग्राम को शहद में मिलाकर रात्रि के समय खिलाएँ, ऊपर से दूध पिलाएँ। इससे पेट के रोग नष्ट होते हैं। इतना ही नहीं, यहयोग सभी रोगों से सुरक्षित रखता है। कब्ज, जिगर की खराबी, दर्द-गुर्दा, मसाने की कमजोरी व शरीर के दर्दों में अति गुणकारी है। ऐलोपैथीवाले क्रिश्चियन साल्ट का प्रयोग करते हैं, त्रिफला उससे हज़ार गुणा श्रेष्ठ है।

उन्माद

१. पेठे के बीजों की गिरी २५ ग्राम, सर्पगन्धा २ ग्राम—रात्रि में दोनों को मिट्टी के बर्तन में १०० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः सिल पर पीसकर छान लें और ६ ग्राम मधु मिलाकर पिलाएँ। २१ दिन में उन्माद रोग ठीक हो जाएगा।

२. सर्पगन्धा ४ ग्राम को रात्रि में २५० ग्राम अर्क गुलाब में भिगो दें।

प्रातः ७ काली मिर्च मिलाकर ठण्डाई की भाँति घोट-छानकर पिला दें। इसी प्रकार प्रातःकाल भिगोकर सायंकाल पिला दें।

खटाई, लाल मिर्च, गुड़, तेल, गर्म वस्तुओं का परहेज़ करें। घी, दूध मक्खन, मलाई, आदि अधिक मात्रा में खिलाएँ। एक मास सेवन कराएँ।

उपदंश = आतशक

१. जमालगोटा के बीज, करोंजा के बीज ५-५ दाने, मुर्दासंग, अजवायन देसी, काली मिर्च—प्रत्येक ३-३ ग्राम। सबको बारीक पीसकर इनकी तीन खुराक बना लें।

पहले दिन एक खुराक ताज़ा पानी के साथ खिला दें। फिर एक दिन छोड़कर अर्थात् तीसरे दिन दूसरी मात्रा (खुराक) खिला दें, फिर एक दिन छोड़कर तीसरी खुराक खिला दें। केवल तीन मात्राओं में ही उपदंश जड़ से उखड़ जाता है।

भोजन में केवल खिचड़ी, दूध-चावल दें या दाल-चावल। गुड़, तेल, खटाई और लाल मिर्च से परहेज करें।

नोट—यह दवा कोमल प्रकृतिवालों को न दें, क्योंकि इससे क़ै और दस्त बहुत आते-हैं।

२. रीठे के छिलके को धूप में सुखाकर खूब बारीक पीस लें, फिर इसमें थोड़ा पानी का छींटा देकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रतिदिन एक गोली मठे के साथ खिलाएँ। यह भी आतशक के लिए अत्युत्तम योग है। घी-दूध का खूब प्रयोग कराएँ।

३. रसकपूर १० ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम—दोनों को मिलाकर एक दिन खरल करें। जब सुरमे की भाँति बारीक हो जाए तब सुरक्षित रख लें। चौथाई ग्रेन (१ चावल) दवा २५ ग्राम मक्खन या मलाई में दें। उपदंश के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

४. काली हरड़ १० ग्राम, कत्था गुलाबी १० ग्राम, सुहागा कच्चा (बिना भुना) १० ग्राम, नीलाथोथा १ ग्राम—सबको बारीक पीसकर १०० ग्राम नींबू के रस में खरल करें। जब सब दवाएँ काली स्याह हो जाएँ तब हमामदस्ता में रखकर मूसली से सवा लाख चोटें लगाएँ। तत्पश्चात् बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली प्रातःकाल पानी से खिलाएँ।

कुछ देर पश्चात् काला दस्त आएगा। पाँवों को पानी में न डुबाएँ। रोटी घी से खाएँ। नमक न खाएँ। उपदंश नया हो या पुराना, एक ही गोली से सदा के लिए नष्ट हो जाएगा। अत्यन्त चमत्कारी योग है।

५. फिटकरी को भूनकर इसमें समभाग गेरू मिलाएँ। यह दवा ३-३ ग्राम प्रातः-सायं दूध की लस्सी के साथ खिलाएँ। इसके प्रयोग से पेशाब की जलन दूर होगी और पीप आना भी बन्द हो जाएगा।

६. अमलतास के बीजों को पानी के साथ घोटकर उपदंश के घावों पर लेप करने से दुःसाध्य उपदंश को भी आराम आ जाता है और दर्द मिट जाता है।

७. गन्धक आँवलासार शुद्ध, रीठे का छिलका प्रत्येक १०-१० ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम—तीनों को पीसकर एक दिन लगातार खरल करें। १-१ ग्रेन (आधी रत्ती) दवा प्रातः-सायं पानी से खिलाएँ। घी-दूध का पर्याप्त मात्रा में सेवन करें। उपदंश के लिए अतीव गुणकारी है।

एग्ज़िमा

१. २५० ग्राम सरसों का तेल लेकर लोहे की कड़ाही में चढ़ाकर उसके नीचे अग्नि जलाएँ, जब तेल खूब उबलने लगे तब इसमें ५० ग्राम नीम की कोमल कोंपल डाल दें। कोंपलों के काली पड़ते ही कड़ाही को तुरन्त नीचे उतार लें-अन्यथा तेल में आग लगकर तेल जल जाएगा। ठण्डा होने पर तेल को छानकर बोतल में भर लें। दिन में ३-४ बार एग्ज़िमा पर लगाएँ, कुछ ही दिन में एग्ज़िमा नष्ट हो जाएगा। एक वर्ष तक लगाते रहें तो फिर कभी रोग नहीं होगा। इससे सस्ता अन्य नुस्खा मिलना कठिन है। प्रयोग कीजिए और ऋषि-मुनियों के गुण गाइए।

२. पके केले के गूदे को नीबू के रस में पीसकर और मरहम के समान बनाकर लेप करें। दाद, खाज, खुजली, एग्ज़िमा और सिर की गंज आदि में लाभ होगा।

३. कटहल के नरम पत्तों को पीसकर एग्ज़िमा पर लगाएँ। ५-७ दिन में ही एग्ज़िमा ठीक हो जाएगा।

कण्ठमाला = गलगण्ड, गण्डमाला

१. कायफल को बारीक पीसकर तथा गोमूत्र में मिलाकर लेप करने से प्रत्येक प्रकार की कण्ठमाला ठीक हो जाती है।

२. छोटी पीपल का चूर्ण ३ ग्राम से ६ ग्राम तक, ६ ग्राम शहद में मिलाकर चटाने से कुछ ही दिनों में गण्डमाला ठीक हो जाती है।

३. शहद शुद्ध ३०० ग्राम, सिरस के बीज १०० ग्राम। बीजों को पीसकर शहद में मिला दें, फिर चीनी के बर्तन में ४० दिन तक रक्खा रहने दें। ४० दिन पश्चात् दवा तैयार है। प्रतिदिन १० ग्राम दवा पानी के साथ खिलाएँ। जो गिल्टियाँ निकल चुकी हैं, वे बैठ जाएँगी, नई गिल्टियाँ नहीं निकलेंगी। यह संन्यासी का बताया हुआ योग है, जिसने इस दवा से सहस्रों रोगियों को स्वस्थ किया था।

४. सत्यानाशी का रस निकालके कड़ाही में डालकर आग पर रख दें। जब रस गाढ़ा हो जाए तब उतारकर मटर के बराबर गोलियाँ बना लें और धूप में सुखा लें। प्रातः-सायं १-१ गोली पानी से खिलाएँ। २-३ मास दवा खिलाएँ। कण्ठमाला के लिए चमत्कारी दवा है। यह उत्तम कोटि की रक्तशोधक भी है।

५. नीलाथोथा ३ ग्राम, काली मिर्च ६ ग्राम, महँदी के पत्ते १० ग्राम—सबको बारीक पीसकर ३० ग्राम वैसलीन में मिलाकर सुरक्षित रक्खें। यह कण्ठमाला के लिए अद्भुत दवा है। यह अतीव गुणकारी और सस्ता इलाज है। बहती हुई कण्ठमाला की गिल्टियाँ इसके प्रयोग से ठीक हो जाती हैं।

६. कालीजीरी ५० ग्राम, मीठा तेलिया शुद्ध १० ग्राम, गन्धक आँवलासार शुद्ध ५० ग्राम—सबको अत्यन्त बारीक पीसकर और कपड़छन करके बोतल में भर लें। प्रतिदिन आधा ग्राम दवा ताजा पानी से खिलाएँ। २-३ मास तक दवा खिलाना आवश्यक है।

७. मिट्टी के तेल की कुछ बूँदें बताशे में रखकर रोगी को खिलाएँ। ३ वर्ष के बच्चे को एक बूँद, ४ से ७ वर्ष के बच्चे को २ बूँद, ८ से १२ वर्ष के बच्चे को ३ बूँद, १२ वर्ष से अधिक के बालक को ४ बूँदें। कुछ ही समय में कण्ठमाला का नाम भी नहीं रहेगा।

कब्ज़

१. त्रिफला, काली हरड़, सनाय, गुलाब के फूल, मुनक्का (बीज निकाला हुआ), बादाम की गिरी, काला दाना, बनफशा—सभी वस्तुएँ २५-२५ ग्राम लेकर कूटकर मिला लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम दवा गर्म दूध के साथ फाँक लें। प्रातः दस्त खुलकर आ जाएगा। कुछ दिन तक निरन्तर सेवन करने से कब्ज

रोग जड़मूल से नष्ट हो जाएगा।

२. प्रतिदिन १५-२० मुनक्के दूध में उबालकर खाएँ, फिर उसी दूध को पी लें। कब्ज़ को दूर करने का अद्भुत योग है।

३. त्रिफला ५० ग्राम, गिरी बादाम ५० ग्राम, सौंफ ५० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, मिश्री ३० ग्राम लें। पहले त्रिफला, सौंफ, और सोंठ को बारीक कूटकर छान लें, तत्पश्चात् इसमें बादाम की गिरी और मिश्री मिलाकर कूट लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम दवा दूध के साथ लें।

कब्ज़ को दूर करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ योग है। यह नुस्खा न तो आँतों में खुश्की पैदा करता है और न कमज़ोरी लाता है, अपितु कब्ज़ को दूर कर दिमाग़ को शक्ति प्रदान करता है।

४. सनाय के पत्ते २० ग्राम, मुनक्का ३० ग्राम लें। पहले सनाय को अत्यन्त बारीक पीसकर कपड़छन कर लें। फिर मुनक्का के बीज निकालकर इन्हें सनाय के चूर्ण के साथ अच्छी प्रकार घोटें। पानी न मिलाएँ। जब गोलियाँ बनने योग्य हो जाएँ, तब बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। दो गोलियाँ रात्रि में दूध या पानी से खिलाएँ। यह योग कब्ज़ को दूर करने और भूख बढ़ाने में लाभप्रद है। जिन्हें प्रायः कब्ज रहता हो उन्हें अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

५. काबुली हरड़ (पीली हरड़) को रात्रि में भिगो दें। प्रातः इस हरड़ को इसी पानी में थोड़ा-सा रगड़ें और तनिक-सा नमक मिलाकर पिला दें। प्रतिदिन प्रातःकाल एक मास तक पीने से पुरानी कब्ज़ दूर हो जाएगी। एक हरड़ ५-७ दिन काम देगी।

६. ३० ग्राम उत्तम कास्ट्रायल गरमागरम गाय के दूध में मिश्री डालकर पिलाएँ। इससे कब्ज़ और बुखार दोनों ही दूर हो जाते हैं।

कमर-दर्द

१. कमर-दर्द हो तो तारपीन के तेल की मालिश करें। यह तेल अपने गुणों में अद्वितीय है।

२. चोबचीनी को पानी में भिगोएँ। नरम हो जाने पर चाकू से छोटे-छोटे टुकड़े करके ६ ग्राम टुकड़ों को १०० ग्राम गर्म पानी में भिगो दें। यह कार्य रात्रि में करें। प्रातः इन टुकड़ों को ज़ोरदार हाथों से मसलकर और छानकर पिला दें। गृध्रसी = रींगन बाय, कमर-दर्द, गठिया और रक्त-शोधन के लिए अतीव

गुणकारी है।

कल्प

निर्गुण्डीकल्प—निर्गुण्डी की जड़ का चूर्ण ३२० ग्राम, शहद ६४० ग्राम—दोनों को मिलाकर घी से चिकनी हाँडी में भर दें। फिर सन्धियों = जोड़ों को बन्द करके एक मास तक अनाज में दबा दें। एक मास पश्चात् निकालकर १० से २० ग्राम तक दवा प्रातः-सायं सेवन करें।

इसके सेवन से मनुष्य रोगरहित होकर वृद्धावस्था से मुक्त हो जाता है।

पीपलीकल्प (वर्धमान पीपली)—छोटी पीपली ५ दाने आधा किलो दूध में डालकर इतना पकाएँ कि पीपलें नर्म हो जाएँ। फिर पीपलों को निकालकर खा लें और दूध में मिश्री मिलाकर पी लें। अगले दिन ३ पीपलें बढ़ा दें और ८ दिन तक निरन्तर ३-३ पीपली बढ़ाते रहें। नवें दिन से ३-३ पीपली घटाते जाएँ, यहाँ तक कि ५ पीपली पर आ जाएँ।

यह आयुर्वेद की एक अद्भुत और अनोखी चिकित्सा है। इसके सेवन से पुराने-से-पुराना बुखार, खाँसी, श्वास, दमा, क्षय = टी.बी., हिचकी, विषम ज्वर, आवाज़ बिगड़ना, बवासीर, पेट का वायुगोला, जुकाम आदि दूर हो जाते हैं। भूख खूब बढ़ती है। वर्धमान पीपली का प्रयोग मोटा करता है, आवाज़ को सुरीली बनाता है, तिल्ली और दूसरे रोगों को दूर करता है, आयु और बुद्धि को बढ़ाता है। पाण्डु = पीलिया रोग के लिए रामबाण दवा है।

औषध-सेवन-काल में दूध और भात के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं खानी चाहिए।

नोट—वृद्ध, कोमल प्रकृतिवाले यदि इतनी पीपली न खा सकें तो उन्हें केवल दूध ही पिलाते जाएँ, परन्तु पीपली इसी संख्या से बढ़ाते जाएँ।

सोंठकल्प—सोंठ बढ़िया २ किलो लेकर कूटपीस कपड़छन कर लें। इस चूर्ण में आधा किलो गुड़ और १ किलो गोघृत मिलाएँ। थोड़ी गाय की छाछ भी मिलाकर खूब मलें, फिर किसी चिकने मिट्टी के बर्तन में रखकर उस हाँडी को कपड़-मिट्टी कर दें। सूखने पर एक मास तक धान के भीतर दबा दें। एक मास पश्चात् निकाल लें। २० ग्राम दवा प्रतिदिन खिलाएँ। ६ मास में सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं।

ओषधि-सेवन से पूर्व २-३ दिन जुलाब लेकर पेट साफ कर लेना चाहिए।

काँच निकलना

१. हुलहुल बूटी के फूलों का रस निकालकर रोगिणी के हाथों को इस रस से तर कर दें। फिर इन हाथों को वह अपनी गुदा पर बार-बार रक्खे। कुछ दिन यही क्रिया करने से लड़कियों, स्त्रियों का काँच निकलना बन्द हो जाता है।

इस दवा का चमत्कार यह है कि इससे केवल स्त्रियों को ही लाभ होता है, पुरुषों को नहीं।

२. पुराने जूते का चमड़ा जलाकर उसकी राख को काँच पर छिड़कने से काँच निकलना बन्द हो जाता है। दवा छिड़कने से पूर्व गुदा पर घी अथवा तेल चुपड़ना आवश्यक है। एक सप्ताह तक प्रयोग कराएँ।

३. सूखी हुई लिहसौड़ियाँ जलाकर राख बना लें और उस राख को गुदा पर घी या तेल लगाकर छिड़क दें। काँच निकलना बन्द हो जाएगा। एक सप्ताह तक निरन्तर प्रयोग कराएँ।

कान के रोग

कान के कीड़े—१. सूखे बैंगन को जलाकर कान में धूनी देने से कान के कीड़े बाहर आ जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते।

२. १० ग्राम गोमूत्र में ४ ग्रेन (२ रत्ती) बर्किय: हरताल पीसकर मिला लें। कानों में इसकी ४-५ बूँद टपकाने से कान के कीड़े मर जाते हैं और फिर पैदा नहीं होते।

३. तारपीन का तेल २-३ बूँद कान में डालने से कान के कीड़े बाहर निकल आते हैं।

कान दर्द—१. गर्म गोदुग्ध आधा किलो में २० ग्राम गाय का घी मिलाकर तीन दिन पीने से कान का दर्द मिट जाता है।

२. नारायण तेल तनिक-सा गर्म करके कानों में डालने से भयंकर-से-भयंकर कान का दर्द दूर हो जाता है।

३. बकरी के दूध में ज़रा-सा सेंधा नमक मिलाकर और गर्म करके कानों में डालने से भयंकर-से-भयंकर कान का दर्द दूर हो जाता है।

४. तुलसी के पत्तों का रस निकालकर और उसे गुनगुना करके २-३ बूँद कान में डालने से कान का दर्द दूर होता है।

५. भाँग के नों का रस ज़रा-सा गर्म करके २-३ बूँद कान में

टपकाएँ। कान-दर्द तुरन्त दूर हो जाता है।

६. घी १० ग्राम में १० ग्राम कपूर (काफूर, कर्पूर) को पकाएँ। जब पक जाए तब उतारकर शीशी में भर लें। जब आवश्यकता हो तब थोड़ा गर्म करके २-२ बूँद कानों में डालें, कान-दर्द जाता रहेगा।

७. मूली के पत्तों का रस ३० ग्राम, तिल का तेल १० ग्राम—दोनों को मिलाकर किसी कलईदार बर्तन में डालकर आग पर पकाएँ। जब रस जल जाए और केवल तेल रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर २-३ बूँद किञ्चित् गर्म करके कान में डालें। कान के दर्द के लिए यह दवा रामबाण सिद्ध होगी।

८. प्याज़ का रस तनिक-सा गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द तुरन्त ठीक हो जाता है।

९. नींबू का रस तनिक गुनगुना करके कानों में डालना कान-दर्द को दूर करने में आश्चर्यजनक है।

कान बहना—१. नींबू के रस में ज़रा-सा सज्जीखार मिलाकर कानों में डालने से कुछ ही दिन में कान बहना बन्द हो जाता है।

२. हरताल वर्किय: १ ग्राम बारीक पीसकर ५० ग्राम सरसों के तेल में इतना पकाएँ कि तेल से धुआँ निकलने लगे। फिर आग से उतारकर छान लें। इस तेल की ४-५ बूँदें कान में डालने से पुराने-से-पुराना कान का बहना दो-तीन दिन में बन्द हो जाता है।

३. पीली कौड़ी की भस्म बनाकर १ ग्रेन (आधी रत्ती) कान में डालें; ऊपर से ५-७ बूँद नींबू का रस टपका दें। कान से मवाद बहना बन्द होगा और कान-दर्द तुरन्त दूर होगा।

४. सरसों के तेल ६० ग्राम को किसी बर्तन में डालकर गर्म करें। इसमें ४ ग्राम मोम डाल दें। जब मोम पिघल जाए तो अग्नि पर से उतार लें, फिर इसमें ८ ग्राम पिसी हुई फिटकरी मिला दें। बस, दवा तैयार है।

जब सैकड़ों दवाएँ व्यर्थ हो चुकी हों और कान का बहना बन्द न हुआ हो तब इस दवा का चमत्कार देखिए। ३-४ बूँद दिन में दो बार डालें। कान को रुई से साफ करते रहें।

५. नीम का तेल बढ़िया १५० ग्राम में देसी मोम १० ग्राम मिलाकर गर्म करें। जब मोम तेल में मिल जाए तब अग्नि से उतार लें और २० ग्राम फिटकरी

अत्यन्त बारीक पीसकर मिला दें। बस, दवा तैयार है। २-२ बूँद निरन्तर एक-दो सप्ताह कान में डालने से बहते कान जो किसी दवा से ठीक न हुए हों, इस दवा के प्रयोग से ठीक हो जाते हैं। अनुभव करके देखें और लाभ उठाएँ।

६. रत्नजोत १० ग्राम को १०० ग्राम सरसों के तेल में जलाएँ। ठण्डा होने पर छानकर शीशी में भर लें। कान को साफ करके इस रत्नजोत तेल को गुनगुना करके २-४ बूँदें कान में टपकाएँ। कान का पीप एक सप्ताह में समाप्त हो जाएगा।

काली खाँसी

१. सिगरेट की राख १ ग्राम और मधु (शहद) १० ग्राम—दोनों को मिला लें और १ ग्राम से ३ ग्राम तक दवा दिन में दो बार चटाएँ। काली खाँसी के लिए रामवाण और चमत्कारी दवा है। इससे श्रेष्ठ नुस्खा मिलना कठिन है।

२. पीपल के पत्तों की भस्म (राख) ५ ग्राम, बाँसे के पत्तों की भस्म ५ ग्राम, केले के पत्तों की भस्म ५ ग्राम, अपामार्ग (चिरचिटा) के पत्तों की भस्म ५ ग्राम—सबको घोटकर शीशी में भर लें। १ ग्राम दवा शहद में मिलाकर चटाएँ। यह काली और सूखी खाँसी की रामबाण दवा है। खाँसी दुम दबाकर भाग जाएगी।

३. केले के सूखे पत्तों (जो पीले होकर सूख जाते हैं) को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। आधा-आधा ग्राम दवा शहद में मिलाकर कई बार चटाएँ। काली खाँसी का अचूक एवं चमत्कारी इलाज है।

४. मक्का (मकई) के बीज निकाले हुए भुट्टे को जलाकर राख बना लें। यह राख १ से २ ग्राम तक शहद में मिलाकर दिन में २-३ बार चटाएँ। काली खाँसी में अतीव गुणकारी है।

५. नारियल का असली शुद्ध तेल ३-३ ग्राम दिन में तीन वार दें। १ से ४ वर्ष तक के बच्चों की काली खाँसी के लिए अनुभूत प्रयोग है।

६. दही दो चम्मच, चीनी १ चम्मच, काली मिर्च का चूर्ण ६ ग्रेन (३ रत्ती) मिलाकर चटाने से बच्चों की काली खाँसी और बूढ़ों की सूखी खाँसी में अद्‌भुत लाभ होता है।

कुत्ते का काटना

देसी साबुन और शहद—दोनों को समभाग मिलाकर इतना रगड़ें कि

मरहम बन जाए। इसे कुत्ते के काटे हुए घाव पर लगाएँ, अत्यन्त लाभकारी दवा है।

कुष्ठ = कोढ़

१ छोटी हरड़ (काली हरड़) ३० ग्राम, चित्रा की छाल ३० ग्राम, काली मिर्च २० ग्राम, मीठा तेलिया शुद्ध १० ग्राम—सबको बारीक पीसकर गाय के घी में चिकना कर लें, फिर चौगुना शहद मिलाकर अवलेह बना लें। प्रतिदिन ६ ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ खिलाएँ। प्रत्येक प्रकार के कोढ़ के लिए उत्तम ओषधि है।

२. नीम के फूल, नीम के पत्ते, नीम के बीज (निम्बोली), नीम की जड़—प्रत्येक आधा किलो; काली मिर्च, हरड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आँवला, बावची (गोमूत्र में शुद्ध की हुई)—प्रत्येक २५० ग्राम। सबको बारीक पीसकर कपड़छन कर लें। प्रतिदिन ६ ग्राम दवा मजीठ के जोशाँदे से खिलाएँ और मरीज को नीम के नीचे सुलाएँ। इस दवा के सेवन से भयंकर-से-भयंकर कुष्ठ ४ मास में दूर हो जाता है।

३. शरीर पर नीम का मद मलने से हर प्रकार का कोढ़ दूर हो जाता है।

४. महँदी के पत्ते २० ग्राम को रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातः मल-छानकर और इसमें शहद मिलाकर पिलाने से कोढ़ दूर हो जाता है।

५. सरफोंका (झोझरू) का अर्क पिलाने से भी हर प्रकार का नया तथा पुराना कोढ़ दूर हो जाता है।१ बोतल अर्क ७ दिन में पिला दें। कम-से-कम दो मास सेवन कराएँ।

६. जल नीम (यह बंगाल में अधिकतर मिलता है) ताज़ा लेकर उसे पानी से धोकर साफ कर लें, फिर उसे सिलबट्टे से कूट-पीसकर १ बोतल रस निकाल लें। इस रस को कलईदार बर्तन में डालकर अग्नि पर चढ़ाकर फाड़ लें। फटने पर अग्नि से उतारकर छान लें। तत्पश्चात् इसमें शहद शुद्ध ४०० ग्राम डालकर आग पर इतना पकाएँ कि कुल दवा एक बोतल रह जाए। प्रतिदिन प्रातः २५ ग्राम दवा पिलाएँ।

यह ओषिधि न केवल कोढ़ को ही दूर करती है अपितु उपदंश और हर

प्रकार के रक्त-विकारों को दूर करने में बेजोड़ है। इसके सेवन से हर प्रकार के चर्मविकार जैसे फोड़े-फुंसियों का बहुत निकलना, खुजली, दाद, चम्बल, दाग़-धब्बे और झाँई आदि दूर होते हैं।

७. चालमोगरा का तेल ५ बूँद से पिलाना आरम्भ करें और धीरे-धीरे ३० बूँद तक पहुँचा दें। यह चिकित्सा ६ मास से लेकर १ वर्ष तक करें। इसी तेल की कुष्ठ के धब्बों पर मालिश करें। कोढ़ के लिए प्रशंसनीय चिकित्सा है।

नोट—इस दवा को खाली पेट न दें। सदा भोजन के आधा घण्टा बाद ही दें।

८. ललाट में पूर्ण चन्द्रमा की भाँति ज्योति का ध्यान करने से आयु बढ़ती है और कुष्ठ तथा अन्य रोग दूर होते हैं।

९. आमलकी चूर्ण ६ ग्राम, ४ ग्राम गोघृत और ८ ग्राम मधु के साथ दिन में तीन बार ६ मास तक सेवन करने से महाकुष्ठ भी नष्ट होकर पुनः नवीन नख, दाँत और केश प्राप्त होते हैं।

१०. बावची के बीजों की मींगी का चूर्ण ३ ग्राम, काले तिल ३ ग्राम, दोनों को बारीक कूटकर और शहद में मिलाकर चाट लें। एक वर्ष तक सेवन करें। कुष्ठ रोग नष्ट होकर शरीर चन्द्रमा के समान कान्तिमान् हो जाता है।

११. बावची के बीजों का ऊपर का छिलका हटाकर उसके मग़ज़ों के ३ ग्राम चूर्ण को १ लीटर (१ किलो) गर्म दूध में डालकर उसकी दही जमा दें। अगले दिन दही को मथकर मक्खन निकाल लें। इस मक्खन में शहद मिलाकर चाट लें। ऊपर से उस मठे को पी जाएँ।

इसके सेवन से असाध्य कुष्ठ रोग दूर हो जाता है। जिसका मांस गल गया हो, उसके शरीर का भी वैसे ही पुनरुद्धार हो जाता है, जैसे कटे हुए वृक्ष से पुनः नव पल्लव फूट निकलते हैं। एक मास तक सेवन करें।

१२. अंगूठे के पर्व के बराबर वज्रवल्ली को दूध के साथ खाने से सभी प्रकार के कुष्ठ नष्ट होते हैं। कम-से-कम २१ दिन सेवन करें।

प्रयोग से पूर्व वमन करा लें, कटु और अम्ल पदार्थों का सेवन न करें।

१३. गिलोय (गुडुची) को तिल और गोदुग्ध के साथ सेवन करने से कुष्ठ और पामा दूर होते हैं। (गिलोय का रस १० ग्राम पीकर १० ग्राम काले तिल चबाएँ, ऊपर से मिश्री मिला हुआ गोदुग्ध पी लें।)

१४. निर्गुण्डी (सम्हालू) के मूल (जड़) के चूर्ण ६ ग्राम को तिल के तेल में

मिलाकर एक मास सेवन करने से १८ प्रकार से कुष्ठ दूर हो जाते हैं।

कूलिंज = आँतों की पीड़ा

१. एक रीठे का छिलका उतारकर बारीक पीस लें। फिर इस चूर्ण के बराबर गुड़ मिलाकर पानी से खिला दें। कुछ ही देर में दस्त और उल्टी होकर रोग ठीक हो जाएगा।

२. हींग ५ ग्राम, काली मिर्च ५ ग्राम, सोंठ ५ ग्राम—तीनों को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। डेढ़ ग्रेन (लगभग १ रत्ती) दवा दिन में तीन बार गर्म पानी से दें, अन्तड़ियों की पीड़ा को दूर करने के लिए अत्युत्तम है।

३. घोड़े की ताज़ा लीद का पानी १५ ग्राम में हींग १ ग्रेन (आधा रत्ती) मिलाकर पिलाएँ। कूलिंज के लिए रामबाण दवा है।

४. १० ग्राम अजवायन को पीसकर गन्धक के तेज़ाब में खरल कर लें। जब घोटते-घोटते दवा खुश्क हो जाए तब शीशी में भर लें। १ ग्रेन (आधा रत्ती) दवा ताज़ा पानी से खिलाएँ, तुरन्त लाभ होगा।

क़ै = उल्टी, छाँट

१. अफ़ीम, नौशादर और काफूर—तीनों समभाग लेकर बारीक पीसें और पानी का छींटा देकर मूँग के बराबर गोलियाँ बना लें। आवश्यकता पड़ने पर एक गोली ठण्डे पानी से दें। हर प्रकार की क़ै, उल्टी, उबकाई इसके प्रयोग से ठीक हो जाती है।

२. नींबू पर नमक और काली मिर्च लगाकर चूसना उल्टी में अत्यन्त लाभदायक है।

३. बोरी का एक टुकड़ा लेकर जला लें। जब धुआँ निकलना बन्द हो जाए तब पानी में बुझा लें। इस पानी को थोड़ा-थोड़ा पिलाएँ। क़ै को रोकता है।

४. अरण्ड के बीज २ नग, चीनी २० ग्राम—दोनों को मिलाकर दो घण्टे तक ज़ोरदार हाथों से खरल करें और शीशी में सुरक्षित रख लें। १-१ ग्रेन (आधा-आधा रत्ती) आध-आध घण्टे के अन्तर से दें। हर प्रकार की मतली और क़ै के लिए रामबाण है। प्रायः पहली ही खुराक में और भयंकर अवस्था में २-३ मात्रा में लाभ दिखाई देने लगता है। यदि दस्त भी आ रहे हों तो उसके लिए भी लाभदायक है।

५. मदार (आक) की जड़ की छाल १० ग्राम, काली मिर्च २०

ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर अदरक के ५० ग्राम रस में खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बना लें। दो गोलियाँ गुनगुने पानी अथवा अर्क गुलाब से खिलाएँ। पेट-दर्द, बदहज़्मी, मतली, क़ै और दस्त दूर करने के लिए अद्वितीय योग है।

६. हींग और अनन्तमूल दोनों ३-३ ग्राम लेकर कूट-पीसकर मिला लें। इस दवा को पानी के साथ फाँक लें। हर प्रकार के वमन को दूर करता है।

कैंसर

१. नींबू का रस रोगी जितना चूस सके, चुसाएँ। इससे दर्द और वम समाप्त हो जाता है।

२. एक मास तक केवल गाजर का रस पिलाएँ। दिनभर में १ से २ किलो तक रस दे सकते हैं। और कुछ न दें। कैंसर ठीक हो जाता है।

३. तुलसी के ३०-३५ पत्तों को चटनी की भाँति पीसकर दही के मठे में मिलाकर प्रातः-सायं सेवन कराएँ। खाने के लिए एक से डेढ़ किलो तक दूध या दही दें। ऐसा करने से थोड़े ही दिनों में लाभ होने लगेगा।

कौड़ी का दर्द

असली हींग ४ ग्रेन (२ रत्ती) को बीज निकाले हुए मुनक्का में लपेटकर एक घूँट गर्म पानी के साथ दें। दवा देते ही कौड़ा (वह स्थान जहाँ छाती में दोनों ओर की पसलियाँ आपस में मिलती हैं) का दर्द काफूर हो जाएगा। निःसन्देह अद्वितीय दवा है। इस दवा के सेवन कराने से कभी असफलता का मुख नहीं देखना पड़ता। पहली मात्रा में ही आराम आ जाता है। यदि कुछ कमी शेष रहे तो एक घण्टा पश्चात् दूसरी मात्रा दे सकते हैं।

खसरा = रोमन्तिका

करेला के पत्तों का रस १० ग्राम से २० ग्राम में हल्दी का चूर्ण १ से ३ ग्राम तक मिलाकर पिलाने से खसरा दूर हो जाता है।

खाँसी

१. बाँसे के हरे पत्तों का रस १० ग्राम, शहद १० ग्राम—दोनों को मिलाकर थोड़ा-थोड़ा चटाने से खाँसी नष्ट हो जाती है।

२. बहेड़े के छिलके, पीपल छोटी—दोनों बराबर-बराबर लेकर अत्यन्त

बारीक पीस लें। इस चूर्ण में से १ ग्राम लेकर और शहद में मिलाकर रोगी को चटाएँ। खाँसी के लिए अद्भुत दवा है।

३. केवल वहेड़े का छिलका मुँह में रखकर चूसने से खाँसी वन्द हो जाती है।

४. २० ग्राम घी में १० ग्राम गुड़ मिलाकर खिलाने से सूखी खाँसी दूर हो जाती है।

५. तेल सरसों १० ग्राम में गुड़ १० ग्राम को खूब अच्छी तरह मिलाकर २१ दिन खिलाने से खाँसी और हर प्रकार का दमा दूर हो जाता है।

६. गर्म दूध ४०० ग्राम में १०० ग्राम गरमागरम जलेबी डालकर खिलाने से सूखी खाँसी जड़ से नष्ट हो जाती है।

७. दिन में ३-४ बार गुदा पर सरसों का तेल चुपड़ने से हर प्रकार की खाँसी दूर होती है।

८. १० ग्राम गेहूँ को २५० ग्राम पानी में औटाएँ। जब ८० ग्राम पानी रह जाए तब इसमें १ ग्राम नमक मिलाकर और छानकर रोगी को पिला दें। ५-७ दिन में ही हर प्रकार की खाँसी को आराम आ जाता है।

९. शहद १० ग्राम में सोंठ २ ग्राम और काली मिर्च १ ग्राम का बारीक चूर्ण मिलाकर प्रातः-सायं चटाने से बलग़मी खाँसी दूर होती है।

१०. काली मिर्च ५० ग्राम लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। इसमें २०० ग्राम गुड़ मिलाकर आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। इन गोलियों का सेवन करने (दिन में ३-४ गोली चूसने) से हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।

११. मदार (आक) के ४-५ सूखे पत्तों को जला लें, फिर इस राख को पानी में भिगो दें। रातभर पानी में भीगने दें। प्रातः छानकर पिला दें। खाँसी को नष्ट करने के लिए अचूक एवं चमत्कारी दवा है।

१२. पीपली के २ ग्राम चूर्ण को शहद में मिलाकर रात्रि में चाटकर सो जाएँ, खाँसी दूर हो जाती है।

१३. छोटी पीपल १ ग्राम को ६ ग्राम शहद में मिलाकर प्रातः-सायं चटाने से बलगमी खाँसी दूर हो जाती है।

१४. लिहसौड़ियाँ १४ दाने जौकुट करके रात्रि में २५० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः इस पानी को औटाएँ। जब ७५ ग्राम पानी रह जाए तब उतार लें। कुछ ठण्डा होने पर छानकर और मिश्री मिलाकर गुनगुना-सा पिला दें।

वात और पित्त से उत्पन्न जुकाम का शर्तिया इलाज है, सूखी खाँसी के लिए अद्वितीय है, दमा के लिए लाभदायक है।

१५. काकड़ासींगी को बारीक पीसकर पानी के छींटे से गीला करें और चने के बराबर गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली प्रातः-सायं ताज़ा पानी के साथ सेवन करें। परीक्षित प्रयोग है। खाँसी कैसी भी हो ठीक हो जाती हैं।

१६. बनफ्शा, ईसबगोल, लिहसौड़ियाँ, उन्नाब, बीहिदाना—प्रत्येक ५-५ ग्राम; वंशलोचन, दालचीनी प्रत्येक ३०-३० ग्राम—सबको कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। दिन में दो-तीन बार १-१ ग्राम मुख में रखकर चूस लिया करें। खाँसी के लिए रामबाण दवा है।

१७. अजवायन १ ग्राम को खाली (बिना लगे हुए) पान में रखकर चबाएँ। रस को निगलते रहें। सूखी खाँसी में अत्यन्त लाभदायक है।

१८. फिटकरी सफेद १० ग्राम और चीनी १०० ग्राम—दोनों को मिलाकर बारीक पीस लें और इस चूर्ण की १४ पुड़ियाँ बना लें। यदि सूखी (खुश्क) खाँसी हो तो गुनगुने दूध के साथ सेवन कराएँ और तर खाँसी हो तो पानी के साथ दें। अत्यन्त सस्ता इलाज है। इससे सस्ता और शीघ्र प्रभावकारी नुस्खा मिलना कठिन है।

१९. हल्दी पिसी हुई ३-३ ग्राम पानी के साथ दिन में २-३ बार खाने से पुरानी-से-पुरानी खाँसी थोड़े ही दिनों में दूर हो जाती हैं।

२०. पत्थर के कोयले की सफेद राख आधा ग्राम, रब्बुलसूस (मुलहठी का सत्त्व) १ ग्रेन (आधी रत्ती)—दोनों को बारीक पीसकर और ६ ग्राम शहद में मिलाकर दिन में २-३ बार चटाएँ। हर प्रकार की खाँसी के लिए लाभप्रद है।

२१. मुलहठी ४० ग्राम, कीकर का गोंद ४० ग्राम, पीपल छोटी १० ग्राम—सबको बारीक पीसकर और मिलाकर शीशी में भर लें। २ से ४ ग्रेन दवा मुख में डाल दें और इस दवा का चमत्कार देखें। सूखी और अन्य साधारण खाँसी में इसकी जितनी प्रशंसा की ज़ाए उतनी ही कम है।

२२. अखरोट की गिरी ३० ग्राम को बारीक पीसकर ५० ग्राम शुद्ध शहद में मिलाएँ। ६-६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः-सायं चटाएँ। खाँसी के लिए लाभदायक है।

२३. मुनक्का के बीज निकालकर इसमें ३ काली मिर्च रखकर चबाएँ और मुँह में रखकर सो जाएँ। ५-७ दिन में खाँसी दूर हो जाएगी।

२४. आक के फूल, काली मिर्च और काला नमक—तीनों समभाग लेकर खरल में बारीक पीस लें, फिर अदरक का रस डालकर एक-दो दिन खूब खरल करके आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली ताज़ा पानी से खिलाएँ। बलग़मी खाँसी कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएगी।

खुजली

१.गोमूत्र ५० ग्राम में ३ ग्राम हल्दी पिसी हुई डालकर कुछ दिन पीने से खुजली जड़ से दूर हो जाती है।

२. वड़ के पत्तों की राख को सरसों के तेल में मिलाकर लगाने से खुजली शर्तिया दूर हो जाती है।

३. हल्दी ६० ग्राम को बारीक पीसकर ४ लीटर पानी में गर्म करें। जब १ लीटर पानी रह जाए तो उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर बोतल में भर लें। रात्रि में सोते समय इस पानी की सारे शरीर पर खूब मालिश करें। भयंकर-से-भयंकर खुजली ३-४ दिन में दूर हो जाती है।

४. गेरू, गन्धक और सुहागा—तीनों १०-१० ग्राम लेकर बारीक पीस लें और फिर मक्खन में मिला लें। इस दवा की सारे शरीर पर मालिश करके थोड़ी देर धूप में बैठे रहें। फिर गर्म पानी से नहा लें। साबुन का प्रयोग न करें। तौलिया से रगड़कर बदन को साफ कर लें। तर और खुश्क (गीली और सूखी) दोनों प्रकार की खुजली के लिए लाभदायक है।

५. मैंसिल बारीक पीसकर सरसों के तेल में जला लें। इस तेल की शरीर पर मालिश करें। खुजली के लिए अनुभूत योग है।

६. गन्धक आँवलासार, बाबची, नीला थोथा—प्रत्येक ६ ग्राम; अजवायन देशी, अजवायन खुरासानी—प्रत्येक ३ ग्राम, सबको अत्यन्त बारीक पीसकर १०० ग्राम सरसों के तेल में मिलाकर मालिश करें। फिर एक घण्टा धूप में बैठा दें। तीन घण्टे पश्चात् स्नान कराएँ। खुजली एक सप्ताह में नष्ट हो जाती है।

गठिया = जोड़ों का दर्द

१. कचूर १ ग्राम, सोंठ एक ग्राम—दोनों को खूब बारीक पीसकर २० ग्राम विसखपरा की जड़ के जौशांदे के साथ खिलाएँ। कुछ ही दिनों में गठिया रोग दूर हो जाएगा।

२. अरण्ड के बीजों की गिरी २५ ग्राम को आधा किलो गोदुग्ध में खीर की भाँति पकाकर और इसमें एक ग्राम सोंठ मिलाकर प्रतिदिन खिलाने से गठिया का रोग दूर हो जाता है।

३. सोंठ और गिलोय़—दोनों समभाग लेकर उनका चूर्ण बनाकर २ ग्राम दवा गर्म पानी के साथ खिलाने से कुछ ही दिनों में गठिया रोग दूर हो जाता है।

४. सोंठ आधा ग्राम, सुरंजान मीठी १ ग्राम, बड़ी हरड़ का छिलका ३ ग्राम, यह एक खुराक है। प्रातः-सायं दोनों समय एक-एक मात्रा गर्म पानी से खिलाएँ। सोज़िश (सूजन) और दर्द गठिया के लिए अद्वितीय दवा है।

५. अजवायन १ ग्राम, मालकांगनी २ ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। प्रातः-सायं २-२ ग्राम दवा गर्म पानी के साथ दें। कब्ज न रहने दें।

६. गन्धक आँवलासार शुद्ध ५० ग्राम , पीली हरड़ का छिलका ५० ग्राम, बहेड़े का छिलका ५० ग्राम—सबको बारीक पीसकर ५० ग्राम बढ़िया कास्ट्रायल में मिलाएँ। प्रतिदिन १० ग्राम दवा गर्म पानी से खिलाएँ। एक सप्ताह में रोग नष्ट हो जाता है।

७.सुरंजान मीठी, असगन्ध नागोरी —प्रत्येक ५०-५० ग्राम, सोंठ २५ ग्राम, मिश्री १२० ग्राम-सबको बारीक पीसकर ४ से ६ ग्राम ओषधि प्रातः-सायं ताज़ा पानी से दें। यह जोड़ों का दर्द, रींगन बाय और कमर-दर्द में अतीव गुणकारी है।

८. बथुआ के ताज़ा पत्तों का रस १५ ग्राम प्रतिदिन पीने से गठिया नष्ट हो जाता है। इस रस में नमक-चीनी आदि कुछ न मिलाएँ। कम-से-कम दो मास प्रयोग करें।

९. पीली हरड़ का बक्कल (छिलका), एलवा, सुरंजान मीठी—तीनों समभाग लेकर बारीक पीस लें, ग्वारपाठा (घीक्वार, घियाकुमारी) के रस में खरल करके मटर के बराबर गोलियाँ बना लें। २-२ गोली प्रातः-सायं गुनगुने पानी से खिलाएँ। जोड़ों के दर्द (गठिया) के लिए रामबाण ओषधि है।

१०. इन्द्रायण की जड़, कुचला शुद्ध और काली मिर्च—तीनों को समभाग लेकर बारीक पीस लें, फिर शुद्ध शहद में घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बनाएँ। १ गोली रात्रि में सोते समय ताज़ा पानी से खिलाएँ। गठिया और वायु के दर्दों के लिए अतीव गुणकारी है।

११. अश्वगन्ध (असगन्ध), चोब चीनी और आँवले सूखे—तीनों

बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम दवा दूध या पानी से लें। इसके सेवन से गठिया आदि वात-विकार दूर होते हैं।

१२. शुद्ध कुचला और काली मिर्च दोनों समभाग लेकर पान के रस के साथ खूब खरल करें और १-१ रत्ती की गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं १-१ गोली पान या अदरक के रस के साथ खिलाएँ। सब प्रकार की गठिया आदि वायु-विकारों में रामबाण है।

१३. मालकाँगनी लाकर साफ कर लें। पहले दिन एक दाना, दूसरे दिन दो दाने, तीसरे दिन तीन दाने खिलाएँ। इसी प्रका बढ़ाते हुए ६० दानों तक ले जाएँ। फिर एक-एक दाना घटाते हुए एक दाने पर आ जाएँ। इससे जोड़ों का दर्द, वात-व्याधि और कफ के विकार नष्ट होते हैं। बुद्धि बढ़ती है, वीर्य-विकार नष्ट होते हैं।

नोट—यदि दाने बढ़ाने के दिनों में बीच में ही अधिक गर्मी का अनुभव हो तो उसी दिन दाने घटाने आरम्भ कर दें।

गर्भरोधक

१. जो नारी पीपल, बायबिड़ंग और सुहागा समभाग लेकर और चूर्ण बनाकर ऋतुकाल में तीन दिन तक ६ ग्राम चूर्ण प्रतिदिन जल के साथ सेवन करती है, उसे कदापि गर्भ नहीं रहता।

२. हाथी की ताज़ा लीद का रस १० ग्राम, शहद १० ग्राम—दोनों को मिलाकर एक सप्ताह तक पिलाने से जीवनभर गर्भ नहीं ठहरेगा। मासिकधर्म से शुद्ध होने के पश्चात् दवा देना आरम्भर करें।

३. मासिकधर्म से शुद्ध होने के पश्चात् (अर्थात् मासिक आरम्भ होने के पाँचवे दिन से) चमेली की एक कली (चमेली के पुष्प की बिना खिली हुई कली) पानी के साथ निरन्तर तीन दिन तक निगलने से एक वर्ष तक गर्भ नहीं ठहरता।

४. मनुष्य के कान का मैल और बाकला १ दाना—दोनों को पशमीने के कपड़े में बाँधकर स्त्री जबतक अपने गले में लटकाए रक्खेगी, तबतक गर्भधारण नहीं होगा।

५. सुहागा, गजपीपल, बायबिड़ंग—सभी वस्तुएँ उत्तम और ताजा समभाग लेकर बारीक पीस लें। जिस दिन मासिकधर्म आरम्भ हो उस दिन से प्रतिदिन प्रातः ६ ग्राम दवा पानी के साथ खिला दें। एक सप्ताह तक खिलाएँ।

एक वर्ष तक गर्भ नहीं ठहरेगा।

गर्भस्थापक योग

१. कायफल और खाँड—दोनों को समभाग लें और बारीक पीसकर मिला लें। ६ ग्राम ओषधि गोदुग्ध के साथ मासिकधर्म आरम्भ होने के दिन से ८ दिन तक खिलाएँ। गर्भाशय के दोष दूर होकर गर्भ ठहर जाता है।

२. नागकेसर को बारीक पीसकर ४ ग्राम दवा बछड़ेवाली गाय के दूध के साथ मासिकधर्म आरम्भ होने के दिन से आठ दिन तक खिलाएँ। गर्भ ठहर जाता है।

नोट—दूध को गर्म करके उसमें चीनी डाल लें।

गुर्दे का दर्द

१. एक मक्का के भुट्टे के ऊपरवाले बाल २० ग्राम लेकर २०० ग्राम पानी में उबालें। जब सौ ग्राम पानी रह जाए तब मलकर छान लें और गुनगुना रहने पर रोगी को पिला दें। हर प्रकार के दर्द गुर्दा के लिए रामबाण है।

२. यवक्षार (जवाखार), लोटासज्जी, सुहागा कच्चा, नौशादर कच्चा, काली मिर्च, सेंधा नमक, हीरा हींग, कलमीशोरा, नमक (साँभर) सब ६-६ ग्राम लेकर बारीक पीस लें, फिर तेज विलायती सिरका इतना डालें कि अवलेह बन जाए।

३ ग्राम-दवा हर १५ मिनट बाद चटाएँ। पहली ही खुराक में दर्द दूर हो जाएगा, अन्यथा तीन मात्राओं में तो निश्चय ही दूर हो जाएगा। यह ऐसी चमत्कारिक, अद्भुत एवं अद्वितीय ओषधि है कि ४५ मिनट में गुर्दे का दर्द दूर हो जाता है।

नोट—ओषधियाँ उत्तम होनी चाहिएँ।

३. तुलसी के पत्ते सूखे हुए २० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, नमक सेंधा १० ग्राम—तीनों को घोट-पीसकर मिला लें।

प्रातः-सायं ३ ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ दें। पेद-दर्द, अफारा, बदहज़्मी, खट्टी डकार, कब्ज़, कै आदि के लिए अत्युत्तम ओषधि है। दर्द गुर्दा से टक्करें मारते हुए रोगी इस दवा के देते ही हँसने लगते हैं। नज़ला, जुकाम, खाँसी के लिए रामबाण है।

पाठकगण! यह एक अद्भद दन्त मन्जन भी है। इस मन्जन के आगे

बाजार में बिकनेवाले फोरहेन्स आदि कुछ भी नहीं। दाँत-दर्द, दाँतों का मैलापन, दाँतों की बदबू, मवाद, पीप सब समाप्त हो जाते हैं। दाँत पत्थर की भाँति मज़बूत हो जाते हैं और मोती के समान चमकने लगते हैं। यदि उपर्युक्त नुस्खे में १० ग्राम अखरोट की छाल पीसकर और मिला ली जाए तब तो इस मञ्जन का कहना ही क्या है!

४. गर्मियों में खरबूजे का छिलका पीसकर पिला दें। सर्दियों में सूखे हुए खरबूज़े के छिलके को जलाकर पानी में घोलकर पिला दें, अथवा सूखे खरबूज़े के छिलके को पानी में पीसकर और तनिक-सा गर्म करके पिला दें। दर्द गुर्दा के लिए चमत्कारी ओषधि है। दवा के पेट में पहुँचते ही रोता हुआ रोगी हँसने लगता है।

५. कलमीशोरा, अजवायन खुरासानी—दोनों समभाग लेकर पीस लें। १ ग्राम दवा ताज़ा पानी के साथ दें। दर्द गुर्दा के लिए अत्युत्तम है।

६. आकाश बेल ताज़ा १० ग्राम, गुल दाउदी ६ ग्राम—दोनों को २५० ग्राम पानी में उबालें। जब २०० ग्राम पानी रह जाए तब उतारकर छान लें और गुनगुना रह जाने पर मरीज को पिला दें। घड़ी रखकर देख लें, आधा घण्टे में दर्द दूर हो जाएगा। चमत्कारी दवा है।

७. लाल मिर्च के पौधे की पत्तियाँ २० ग्राम, काली मिर्च ७ दाने, नौशादर डण्डेवाला १ ग्राम—तीनों को सौ ग्राम पानी में घोट-पीस और छानकर प्रातः-सायं पिलाएँ। दर्द गुर्दा के लिए एक ही नुस्खा है। यूनानी चिकित्सा का सर्वश्रेष्ठ योग है।

गुल्म=ट्यूमर (Tumour)

पके केले के भीतर ४ बूँद पपीते का दूध भरकर खिलाने से ट्यूमर ठीक हो जाता है। पन्द्रह दिन तक खिलाएँ।

गूँगापन

१. पोखरा (नेपाल राज्य) के आगे वर्षा ऋतु में नाग नामक बूटी मिलती है। इस बूटी का रस १२ ग्राम प्रतिदिन निरन्तर सात दिन तक पिलाना चाहिए। सात दिन तक ओषधि प्रयोग करनेवाले को ज्वर आएगा, मुँह और गला फूल जाएगा। ऐसी अवस्था १५ दिन तक बनी रहेगी। १६ वें दिन सारे उपद्रव अपने आप ठीक हो जाएँगे। रोगी बोलने लगेगा!

नोट—इन दिनों में रोगी को केवल दूध और शहद देना चाहिए। अन्नवर्जित है। दो-तीन मास सेवन कराएँ।

२. वच आधा ग्राम, मूसली २ ग्राम—यह एक मात्रा है। दोनों दवाओं को अत्यन्त बारीक पीसकर और शहद में मिलाकर चटाने से मूक (गूँगा) भी बृहस्पति के समान बन जाता है।

गृध्रसी

१ गोमूत्र १०० ग्राम में ३० ग्राम कास्ट्रायल मिलाकर पिलाने से गृध्रसी (रींगन वाय) नष्ट हो जाती है।

२. बकायन वृक्ष की अन्तःछाल २० ग्राम को ठण्डाई की भाँति घोट-पीसकर पिलाने से बहुत पुरानी और असाध्य समझी जाने वाली गृध्रसी भी नष्ट हो जाती है।

३. कुचला घी में भून और बारीक पीसकर इसमें से २ ग्रेन (१ रत्ती) प्रातः और २ ग्रेन सायं हलुआ के साथ खिलाने से भंयकर-से-भंयकर गृध्रसी एक सप्ताह में ठीक हो जाती है।

४. शुद्ध मीठा तेलिया २० ग्राम, सुहागा फूला हुआ ४० ग्राम, काली मिर्च ५० ग्राम—सबको बारीक पीस लें, फिर अदरक के रस के साथ एक सप्ताह तक घोटें और चना के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली प्रातः और एक गोली रात्रि में सोते समय १०० ग्राम दूध के साथ खिलाएँ। गृध्रसी के लिए अतीव गुणकारी है।

५. फिटकरी सफेद भुनी हुई १० ग्राम, सुरंजान मीठी ३० ग्राम, गोंद कीकर २० ग्राम—तीनों को बारीक पीसकर और पानी का छींटा देकर आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली दिन में तीन बार दें। रींगन बाय और खूनी बवासीर को नष्ट करने के लिए अचूक दवा है।

नोट—खाली पेट न दें।

६. बकायन वृक्ष की छाल २०० ग्राम, गुड़ एक वर्ष पुराना २०० ग्राम लें। पहले छाल को धूप में सुखाकर कूट लें और कपड़छन कर लें। फिर इसमें गुड़ मिलाकर बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली प्रातः और एक गोली सायं ताज़ा पानी से दें। यह योग गृध्रसी को तो दूर करता ही है, गठिया में भी लाभदायक है।

नोट—दही, लस्सी, गुड़, तेल, खटाई आदि का प्रयाग नं करें।

गंज =गंजापन

१. कमेला २५ ग्राम को २०० ग्राम तेल सरसों में इतना खरल करें कि तेल लाल हो जाए। यदि घुटाई कम हुई, तेल लाल नहीं हुआ तो लाभ नहीं होगा। सिर को नीम के पानी से धोकर यह तेल लगाएँ। बालों के गंज के लिए अद्भुत है।' गन्दे-से-गन्दे फोड़े-फुंसी दूर हो जाते हैं।

२. दही को तांबे के बर्तन में तावे के टुकड़े से इतना घोटें कि वह हरे रंग का हो जाए। इस दवा को गंज पर लगाने से बाल शीघ्र उग आते हैं। यह दवा फोड़े-फुंसी, घाव आदि के लिए भी अद्भुत है। सहस्रों बार की अनुभूत है।

३. सफेद अथवा लाल चिरमठी (घूँधची) को पानी में पीसकर गज पर लगाने से कुछ ही दिन में गंज दूर हो जाता है।

४. नीम के पत्तें १०० ग्राम को १ लीटर पान में उबालें। ठण्डा होने पर इस पानी से सिर धोएँ। सिर के फोड़े-फुंसियाँ दूर हो जाएँगी, साथ ही गंजापन दूर हो जाएगा। सिर को धोने के पश्चात् नीम का तेल लगाएँ।

५. रसकपूर १० ग्राम, गोघृत २१ बार धोया हुआ २० ग्राम—दोनों को मिलाकर मरहम बनाकर लगाएँ। गंज के लिए अनुपम है।

६. पत्ता गोभी के रस की यदि निरन्तर सिर पर मालिश की जाए तो गंज, बाल झड़ना, बाल गिरना आदि रोग दूर हों जाते हैं।

घाव, गले-सड़े

१.नीम के पत्ते ५० ग्राम, गोघृत ५० ग्राम। नीम के पत्तों को घी में डालकर आग पर चढ़ा दें और इतना पकाएँ कि पंत्ते काले स्याह हो जाएँ। फिर आग से उतारकर दोनों को घोट-पीसकर मरहम-सा बना लें। यह मरहम पुराने-से पुराने और किसी ओषधि से ठीक न होनेवाले घावों के लिए अद्भुत एवं चमत्कारी दवा ह। सहस्रों बार की अनुभूत है।

२. गले-सड़े घावों पर गूलर के पत्ते पीसकर लगाएँ। गले-सड़े घावों को ठीक करने के लिए संसार में इससे उत्तम और कोई दवा नहीं होगी। ज़हरीले (विषैले) घाव तक इसके लगाने से ठीक हो जाते हैं।

३. तिलों को पानी में पीसकर लुगदी बनाएँ और उसमें शहद मिलाकर घाव पर लगा दें। घाव अति शीघ्र भर जाता है।

४. शहद और शराब मिलाकर लेप करने से भी ज़ख्म (घाव) तुरन्त भर जाते हैं।

५. लहसुन को पानी में पीसकर लगाने से घाव के कीड़े मर जाते हैं।

६. तलवार आदि के घाव में तुरन्त ही खरैंटी (कंघी) का रस भर देने से घाव भर जाता है और दर्द दूर हो जाता है।

७. अपामार्ग (औंघा, पुटखण्डा, चिड़चिटा) अथवा दूब का रस सींचने से भी तलवार के जख्म का खून बन्द हो जाता है।

८. नीम की लकड़ी को चन्दन की भाँति पत्थर पर घिसकर घावों पर लगाने से हर प्रकार के घाव ठीक हो जाते हैं।

९. नीम की छाल को चन्दन की भाँति घिसकर घावों पर लगाने से हर प्रकार के घाव ठीक हो जाते हैं। जिन फोड़ों में भयंकर जलन हो, उनपर नीम के पत्तों को पीसकर लगाने से जलन शान्त होती है और फोड़े शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

१०. आकाशबेल और सोंठ—समभाग लेकर बारीक पीस लें, फिर घी मिलाकर इतना घोटें कि मरहम बन जाए।

सर्वप्रथम घाव को नीम के पानी से धोकर फिर यह मरहम लगा दें। कुछ ही दिनों में पुराने-से-पुराने घाव जो भरने में न आते हों, ठीक हो जाएँगे। इस ओषधि के समक्ष बड़े-से-बड़े अंग्रेजी इलाज भी व्यर्थ हैं। यह आश्चर्यजनक, सरल और चमत्कारी इलाज है।

११. फिटकरी फुलाकर बारीक पीस लें। इस चूर्ण को गन्दे-से-गन्दे घावों पर छिड़कने से घावों की गन्दगी दूर होकर सब कष्ट दूर हो जाता है।

१२. कनेर के सूखे पत्तों का अत्यन्त बारीक चूर्ण बनाकर घावों पर छिड़कने से घाव बहुत शीघ्र सूख जाते हैं।

१३. राल ६ ग्राम, हिरमची ६ ग्राम, नीलाथोथा ४ ग्रेन(२ रत्ती)—इन तीनों को खरल में अत्यन्त बारीक पीस लें, फिर इस में तिल का तेल इतना मिलाएँ कि गाढ़ी मरहम-सी बन जाए। इस मरहम को घावों पर लगाने से हर प्रकार के घाव ठीक हो जाते हैं।

१४. कमेला बढ़िया ३० ग्राम को २५० ग्राम सरसों के तेल में इतना

खरल करें कि तेल लाल सुर्ख हो जाए। यदि घुटाई ठीक नहीं हुई और तेल लाल नहीं हुआ तो लाभ नहीं होगा।

घावों को नीम के अथवा फिटकरी के पानी से जो गर्म हों, अच्छी प्रकार धोकर और यह मरहम लगाकर पट्टी बाँध दें। गन्दे-से-गन्दे घाव जो किसी दवा से ठीक होने में नहीं आ रहे हों इस अमृतमय मरहम से ठीक हो जाएँगे। नुस्खा जितना सस्ता है, उतना ही लाभदायक है। घर में बनाकर रखने योग्य है। यही तेल सिर के गंज में भी लाभदायक है। यदि सिर में फोड़े-फुंसी हों तो उनमें भी लाभदायक है। यदि नाक में कीड़े हों तो इस तेल की एक-दो बूँद डालने से कीड़े बाहर आ जाते हैं।

१५. कच्चे अनार का छिलका छाया में सुखाया हुआ १०० ग्राम, महँदी के पत्ते सूखे हुए १०० ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर पाउडर बना लें। पहले घाव को नीम के पानी से साफ करें, फिर यह पाउडर बुरककर पट्टी बाँध दें। इससे ऐसे-ऐसे पीपदार घाव भी ठीक हो जाते हैं जो अन्य बीसों इलाजों से ठीक न हुए हों। खून बहता हो तो वह भी बन्द हो जाता है।

चम्बल

१. चम्बल पर थूहर (सेंहुड़) का दूध चुपड़ दें। दूध लगाने से वह जगह उभर जाएगी और वहाँ घाव बन जाएगा। जब घाव बन जाए तो दूध न लगाएँ अपितु घाव को साफ करके उसपर कड़ाही का जला हुआ घी चुपड़ दें। दूसरे या तीसरे दिन घाव ठी हो जाता है। जब वह घाव ठी हो जाए तो फिर जहाँ-जहाँ चम्बल के निशान दिखाई दें, वहाँ पर भी दूध लगा दें। इस प्रकार १५-२० दिन करते रहने से पुराने-से-पुराना चम्बल जड़मूल से समाप्त हो जाता है।

बिना पैसे की दवा है परन्तु गुणों में अद्भुत है। इससे उत्तम दवा ढूँढने से भी नहीं मिलेगी।

२. रसकपूर १० ग्राम, मक्खन गाय का ३० ग्राम।

गाय के मक्खन को १०१ बार पानी से धो लें। मक्खन को धोने का प्रकार यह है—काँसी की थाली में पानी डालकर मक्खन को हाथ से ५-७ बार मसलें, फिर पानी को फेंक दें। अब दुबारा पानी डालकर फिर इसी प्रकार मसलें। ऐसे ही १०१ बार करें। रसकपूर को पीसकर इस धुले हुए मक्खन में मिला दें। इस दवा का चम्बल पर प्रतिदिन एक बार हल्का-सा लेप कर दें। बरसों पुराना

चम्बल कुछ दिनों में ठीक हो जाएगा।

३.हल्दी को बारीक पीसकर और पानी में मिलाकर दिन में २-३ बार और रात्रि में सोते समय गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से वरसों पुराना चम्बल दूर हो जाता है।

चूहे भगाना

१.सफेद फिटकरी पीसकर चूहे के बिलों पर और उनके आने-जाने के मार्गों पर डाल दें, चूहे भाग जाएँगे।

२. एक चूहे को पकड़कर और नील के रंग में डुबोकर छोड़ दें। इसे देखकर घर से सब चूहे भाग जाएँगे।

चेचक

१. यदि चेचक निकलते-निकलते रुक जाए तो निम्न उपचार करें—

जावित्री खूब बारीक पीसकर २-२ ग्रेन (एक-एक रत्ती) दिन में २-३ बार पानी के साथ खिलाएँ, रुकी हुई चेचक शीघ्र बाहर निकल आएगी।

२. जब चेचक निकलनी आरम्भ हो, उसी समय केसर १ ग्रेन से २ ग्रेन तक बारीक पीसकर और बीजरहित मुनक्का में रखकर खिला दें, चेचक शीघ्र बाहर निकल आएगी और कोई कष्ट भी नहीं होगा।

३. तुलसी के पत्तों के ६ ग्राम रस में १ ग्राम पिसी हुई अजवायन मिलाकर खिलाने से भी रुकी हुई चेचक बाहर निकल आती है।

चेचक के दाग़

१. तेल तिल १०० ग्राम, पपीते के बीज ५० ग्राम। तेल को अग्नि पर चढ़ाकर उसमें पपीते के बीज डाल दें। जब बीज जल जाएँ, तब तेल को उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर शीशी में भर लें। रात्रि में इस तेल को चेचक के दागों पर लगाएँ। एक मास तक लगाने से दाग बहुत-कुछ साफ हो जाते हैं।

२. मसूर की दाल और तरबूज के बीज की मींगी—दोनों समभाग लेकर गोदुग्ध में पीस लें और चेहरे पर लेप कराएँ। यह क्रिया रात्रि में करें। प्रातः नागरमोथा के जोशाँदे से चेहरे को धो डालें। इस क्रिया से चेचक के दाग़ दूर हो जाते हैं।

चेहरे के दाग़, कील, झाइयाँ

१. मदार (आक, अकौड़ा, अर्क) के दूध में हल्दी घिसकर लेप करने से

नई-पुरानी झाइयाँ, चेहरे के काले और पुराने दाग़ दूर हो जाते हैं।

२. बड़ की नरम-नरम कोंपलें और मसूर—दोनों को बराबर लेकर गोदुग्ध में पीसकर चेहरे पर लगाएँ, चेहरे के काले दाग़ दूर हो जाते हैं।

३. तुलसी के सूखे पत्तों को गाय के दूध में पीसकर लगानेसे चेहरे के काले दाग़ दूर हो जाते हैं।

४. जौ का उत्तम और साफ़ आटा १०० ग्राम, मुलहठी १०० ग्राम, पठानीलोध १०० ग्राम लें। मुलहटी और पठानीलोध को कूट-पीसकर चूर्ण कर लें, फिर तीनों को मिला लें। इसमें से १५ ग्राम ओषधि लेकर दही में घोलें और रात्रि में चेहरे पर लेप करें। निरन्तर प्रयोग से १५ दिन में ही चेहरे का रंग निखर आएगा।

५. हल्दी को बारीक पीसकर और गाय के दूध में मिलाकर रात्रि में मुख-मण्डल पर लेप करने से मुख की छीप, सफेद और काले दाग़ तथा मुहाँसे दूर होकर चमड़ी स्वच्छ, मुलायम और चमकदार हो जाती है।

६. समुद्रझाग १० ग्राम, कौड़ी पीली १० ग्राम—दोनों को ५० ग्राम नींबू के रस में खरल करें, फिर १०० ग्राम ग्लिसरीन मिलाकर रख दें। इसमें से दवा लेकर रात्रि में मुखमण्डल पर लगाकर सो जाएँ। मुख़मण्डल के दाग़, कील और छाइयों को दूर करने में अतीव गुणकारी है।

७. आम की गुठली की गिरी अथवा जायफल को दूध में घिसकर लगाएँ। कील, दाग़, मुहाँसों को दूर करता है। दो मास तक प्रयोग करें।

८. बादाम की गिरी को दूध में घिसकर लगाएँ।

९. आम, अंगूर, सेब, सन्तरा ख़ूब खिलाओ, दो मास तक।

चोट

१. शरपुखा (सरफोंका, झोझरू) के ताजा पत्तों को बकरी के दूध में पीसकर चोट के स्थान पर लेप कर दें। चन्द घण्टों में ही चोट के दर्द से तड़पता हुआ मरीज़ हँसने और मुस्कराने लगा जाएगा।

२. विजयसार की लकड़ी को कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर रख लें, बस दवा तैयार है। ४ से ६ ग्राम दवा प्रातः और सायं गुनगुने दूध के साथ दें। इसके प्रयोग से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है और चोट के दर्द को बहुत शीघ्र आराम आ जाता है।

विजयसार की लकड़ी को पानी में घिसकर चोट के स्थान पर लेप करने से भी दर्द मिट जाता है।

जब नट लोग अपना कर्तब दिखाते हुए ऊपर से गिर जाते हैं, उस समय चोट लगने या हड्डी टूटने पर वे इसी ओषधि का प्रयोग करते हैं। यह योग एक वृद्ध नट का बताया हुआ ही है।

छपाकी = शीतपित्ति, पित्ति उछलना

१. गुड़ ५० ग्राम, अजवायन ५० ग्राम—दोनों को अच्छी प्रकार कूटकर ६-६ ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली ताज़ा पानी के साथ दें। एक सप्ताह में ही तमाम शरीर पर फैली हुई छपाकी दूर हो जाती है।

२. हरा जलनीम (बंगाली ब्राह्मी, जलनीम) ५० ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम—दोनों को जोरदार हाथों से खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें और छाया में सुखाकर सुरक्षित रख लें।

जिस समय छपाकी निकलती प्रतीत हो, तुरन्त दो गोलियाँ ताज़ा पानी के साथ निगलवा दें। दूसरी खुराक लेने की शायद ही आवश्यकता पड़े। जिन्हें यह रोग दीर्घकाल से हो, अथवा यह रोग बार-बार हो जाता हो, उन्हें दो गोली प्रातः और दो गोली सायं ताज़ा पानी के साथ एक सप्ताह तक सेवन कराएँ, फिर यह रोग नहीं होगा। अनेक बार पर परीक्षित प्रयोग है। ये गोलियाँ उत्तम श्रेणी की रक्त-शोधक भी हैं। फोड़े, फुंसी और खारिश को दूर करने में प्रभावशाली हैं।

३. त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला) के ६ ग्राम चूर्ण को ३० ग्राम शहद में मिलाकर खिलाने से छपाकी दूर हो जाती है।

४. अदरक का रस २० ग्राम, पुराना गुड़ २० ग्राम—दोनों को मिलाकर खिलाने से भी शीतपित्ति नष्ट हो जाती है।

५. असरौल बूटी (छोटी चन्दन) की जड़ को बारीक पीसकर १ ग्राम दवा को पानी के साथ खिला दें। आध घण्टे में ही छपाकी समाप्त हो जाएगी।

६. चन्दन के तेल १० ग्राम में १०० ग्राम अर्क गुलाब मिलाकर शरीर पर मालिश करें। अपने गुणों में अद्भुत है।

पथ्य—पेट को साफ रक्खें। यदि बदहज़्मी हो तो आधा लीटर गर्म पानी में ६ ग्राम नमक डालकर उल्टी करें। यदि कब्ज़ है तो जुलाब लें। बेंगन, गुड़, तेल, खटाई, लाल मिर्च, अचार, मच्छी, गोश्त न खाएँ।

७. पोदीना सूखा ६ ग्राम, शक्कर (गुड़वाली) २० ग्राम—दोनों को २५० ग्राम पानी में औटाएँ। जब आधा पानी रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर रोगी को पिला दें। पुरानी-से-पुरानी छपाकी को दूर करने की चमत्कारी दवा है।

८. फिटकरी सफेद ६ ग्राम को १०० ग्राम पानी में घोलकर शरीर पर लगाएँ। रोगी को तुरन्त लाभ अनुभव होगा, फिर चिकित्सा करते रहें।

९. काली मिर्च, नौशादर, सोना गेरु—प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर कूट-पीस कपड़छन कर लें। ४-४ ग्रेन (दो-दो रत्ती) दिन में ३-४ बार जल के साथ सेवन कराने से शीतपित्ति दूर हो जाती है। अनेक बार का परीक्षित योग है।

१०. नागकेसर, आक के फूल, चोबचीनी, कचूर, अजवायन खुरासानी—प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर बारीक कूट-पीस कपड़छन कर लें। फिर १० ग्राम गुलकन्द मिलाकर आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लें। २-२ गोली दिन में ३ बार ताज़ा पानी से दें। छपाकी के लिए अतीव गुणकारी ओषधि है।

तले सरसों और तेल नीम—दोनों को समभाग मिलाकर प्रत्यंक तीन घण्टे पश्चात् मालिश करें।

११. गेरू लेकर बारीक पीस लें। २ ग्राम दवा २० ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ। छपाकी के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

१२. राल और चीनी—दोनों समभाग लेकर बारीक पीस लें। ६ ग्राम दवा गुनगुने गोदुग्ध के साथ खिलाएँ। पित्ती उछलने को रोकने की रामबाण दवा है

१३. नागकेसर के ६ ग्राम चूर्ण को २० ग्राम शहद मे मिलाकर चटाएँ। पित्ती को नष्ट करने में अतीव गुणकारी है। नया और पुराना सभी प्रकार का रोग दूर हो जाता है।

जलोदर

१. जवाखार, त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल), सेंधा नमक—तीनों वस्तुएँ समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन ६ ग्राम दवा गेमूत्र के साथ दें, जलोदर शान्त हो जाता है। रामबाण दवा है।

२. पत्थर के कोयले की राख (एकदम श्वेत राख लें) ३-३ ग्राम प्रातः-सायं ताज़ा पानी से फँकाएँ। जलोदर के लिए अनुभूत है।

जिगर रोग

१. घीकुँवार (घियाकुमारी, ग्वारपाठा) का रस ६ ग्राम लेकर उसमें सेंधा नमक और समुद्री नमक आधा-आधा ग्राम मिलाकर खिलाएँ, जिगर बिल्कुल ठीक हो जाता है।

२. गुलबनफ्शा २५ ग्राम को आधा किलो दूध और आधा किलो पानी में पकाएँ। जब सारा पानी जलकर केवल दूध रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर इसे खूब मल और छानकर इसमें १५ ग्राम शहद और १० ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से कुछ ही दिनों में बहुत बढ़ा हुआ जिगर भी ठीक हो जाता है।

३. हरे करेलों को कूटकर उनका ५० ग्राम पानी प्रतिदिन एक मास तक पिलाएँ। एक मास में रोगी स्वस्थ हो जाता है। गुर्दे का वर्म और जलोदर भी इसके प्रयोग से ठीक हो जाता है।

४. नौशादर पपड़िया को बारीक पीस लें। घीकुँवार के पत्ते को बीच से चीरकर उसपर थोड़ा-थोड़ा पिसा हुआ नौशादर ६ ग्राम बुरकें और जो पानी निकले उसे सुरक्षित रखते जाएँ। यह अर्क १५ बूँद एक घूँट पानी में मिलाकर खाना खाने के आधा घण्टा पश्चात् दोनों समय पिलाएँ। जिगर की सूजन दूर करने और बढ़े हुए जिगर को सामान्य बनाने के लिए अत्युत्तम है।

जुएँ

१. सुहागा २० ग्राम, फिटकरी २० ग्राम—दोनों को २५० ग्राम गर्म पानी में मिलाकर कुछ दिनों तक सिर में मलें। जुओं का नाश हो जाएगा, खुजली बन्द होगी।

२. मूली अथवा पान के रस में पारा खरल करके सिर में लगाने से जुएँ तुरन्त मर जाती हैं।

३. फिनायल १० ग्राम, पानी ४० ग्राम—दोनों को घोलकर जमजुओं के स्थान पर दो-तीन बार लगाने से ही जुएँ और जमजुएँ समाप्त हो जाती हैं।

४. नीम की निबोली की मींगियों को खूब घोटकर सिर में लगाने से सिर की जुएँ नष्ट हो जाती हैं।

५. प्याज़ का रस सिर में लगाने से जुएँ मर जाती हैं।

जुकाम

१.एक कप दूध में १ चम्मच हल्दी डालकर गर्म करें और फिर ज़रा-सी

शक्कर डालकर पिला दें। कैसा भी ज़ुकाम हो शर्तिया लाभ होगा।

२. अदरक ६ ग्राम, तुलसी के पत्ते १०, काली मिर्च ७; लौंग ५—सबको ज़रा-सा कूट लें, फिर एक कप पानी में डालकर उबालें। उबल जाने पर उतारकर छान लें और शक्कर मिलाकर पिला दें। दूध न डालें। खाँसी और जुकाम में लाभ होगा।

३. चनों को भुनवाकर गर्म-गर्म सूँघें, जुकाम के लिए लाभदायक हैं।

४. काली मिर्च ७ दाने, गुलबनफशा ७ ग्राम—दोनों को २५० ग्राम पानी में उबालें। जब चौथाई पानी रह जाए तब उतार लें। जब पीने योग्य हो जाए तब छानकर और चीनी मिलाकर पिला दें। दवा पिलाकर कम्बल उढ़ाकर सुला दें। थोड़ी देर में पसीना आकर तबीयत ठीक हो जाएगी, जुकाम पक जाएगा। साधारण खाँसी भी दूर हो जाएगी।

५. लौंग ३ नग लेकर १०० ग्राम पानी में पकाएँ। जब आधा पानी रह जाए तब उतार लें और ज़रा-सा नमक डालकर पिला दें, ज़ुकाम ठीक हो जाएगा।

६. काफूर, नौशादर और चूना—समभाग लेकर शीशी में रक्खें। जब आवश्यकता हो, शीशी को ज़ोर से हिलाकर सूँघें, बन्द हुआ जुकाम खुल जाएगा और सिर-दर्द दूर हो जाएगा।

७. उपले (कण्डे) की रौख १० ग्राम लेकर इसे आक (मदार, अकवन, अकौड़ा) के दूध में तर कर दें। एक-दो दिन में जब दूध सूख जाए तब छान लें और इसकी नसवार लें। छींकें आकर बन्द जुकाम खुल जाएगा।

८. रीठे का छिलका और कायफल—दोनों बराबर-बराबर लेकर बारीक पीस लें। बस, दवा तैयार है। इसे नाक में सूँघने से छींक आकर सर्दी-ज़ुकाम, सिर-दर्द और आधे सिर का दर्द दूर हो जाता है।

९. मुलहठी, गुलबनफशा असली, अजवायन देसी—तीनों समभाग लेकर बारीक पीस लें। डेढ़-डेढ़ ग्राम दवा प्रातः-सायं गुनगुने पानी से खिलाएँ। नज़ला, ज़ुकाम, इन्फ्लुएञ्जा के लिए अतीव गुणकारी है। ज़ुकाम के कारण होनेवाली खाँसी भी दूर हो जाती है।

१०. सोंठ, काली मिर्च, पीपल—तीनों को समभाग लेकर कूट-पीस लें, फिर चौगुना गुड़ मिलाकर बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। १-१ गोली दिन में तीन बार ताज़ा पानी से दें। इन गोलियों के सेवन से सिर का भारीपन, कफ़ और

ज़ुकाम ठीक हो जाता है।

टॉन्सिल

१. अलसी के बीज ५० ग्राम, घी एक चम्मच, पानी ५०० ग्राम। अलसी के बीजों को कूट लें, फिर सबको मिलाकर पुलटिस बना लें और सुहाती-सुहाती गले पर बाँधें। गले में कैसा ही दर्द हो, सूजन हो, आवाज़ बैठ चुकी हो, टॉन्सिल बढ़ गये हों—सभी के लिए अद्वितीय दवा है। खुश्क खाँसी तो पहले ही दिन समाप्त हो जाती है। आवश्यकतानुसार ५-६ दिन बाँधें।

२. मिट्टी का तेल आधा लीटर, हल्दी बारीक पिसी हुई ५० ग्राम, काली मिर्च ४० ग्राम (बारीक पिसी हुई), मुश्क काफूर ५० ग्राम—सब दवाओं को मिलाकर ३-४ घण्टे धूप में पड़ा रहने दें। २४ घण्टे पश्चात् छान लें और फुरेरी से गले में लगाएँ। बढ़े हुए टॉन्सिलों के लिए अनुपम इलाज है। पुराने टॉन्सिल भी बिना ऑपरेशन के ठीक हो जाते हैं। इसे मसूड़ों पर लगाने से उनका दर्द भी मिट जाता है। उच्चकोटि का योग है।

टी.बी. = क्षय, तपेदिक

१. गाय का मक्खन १० ग्राम, शहद २० ग्राम—दोनों को मिलाकर दिन में २ बार चाटें। इसके सेवन से राजयक्ष्मा रोग निर्मूल हो जाता है। खुले में रहें, सूर्य का खूब सेवन करें, स्त्री-सम्भोग सर्वथा वर्जित है।

२. पीपल वृक्ष की लाख १० ग्राम से २० ग्राम तक बकरी के गर्म दूध में पीसकर प्रतिदिन दोनों समय सेवन कराने से राजयक्ष्मा रोग नष्ट हो जाता है। इस दूध में आवश्यकतानुसार मिश्री या शहद भी मिला सकते हैं।

३. असगन्ध, पीपल छोटी—दोनों समभाग लेकर और अत्यन्त बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें बराबर वज़न की खाँड मिलाकर और घी से चिकना करके दुगुना शहद मिला लें। इसमें से ३ से ६ ग्राम दवा प्रातः-सायं बकरी के दूध के साथ सेवन करने से तपेदिक निश्चय ही नष्ट हो जाती है।

४. शहद २०० ग्राम, मिश्री कूज़ः (कुन्जा) २०० ग्राम, गाय का घी १०० ग्राम—तीनों को मिला लें। इसमें से ६-६ ग्राम दवा दिन में कई बार चटाएँ, ऊपर से गाय या बकरी का दूध पिलाएँ। राजयक्ष्मा के लिए अत्युत्तम है।

५. पत्थर के कोयले की राख (जो एकदम सफेद हो) आधा ग्राम, मक्खन,

मलाई अथवा दूध से प्रातः-सायं खिलाओ। ख़ून की उल्टी के लिए रामबाण है। टी.बी. के जिन रोगियों के फेफड़ों से ख़ून आता हो उनके लिए अत्यन्त प्रभावी है।

६. आक (मदार, अकौड़ा) की कली प्रथम दिन एक निगल जाएँ, दूसरे दिन दो, फिर प्रतिदिन तीन खाते रहें। १५-२० दिन तक प्रयोग करें। साधारण ओषधि है परन्तु अपने गुणों में अद्भुत है।

७. मदार (आक) का दूध ५० ग्राम, कलमी शोरा और नौशादर पपड़िया प्रत्येक १०-१० ग्राम। पहले शोरा और नौशादर को पीस लें, फिर दोनों को लोहे के तवे पर डालकर नीचे अग्नि जलाएँ और थोड़ा-थोड़ा मदार का दूध डालते रहें। जब सारा दूध खुश्क हो जाए और दवा बिलकुल राख हो जाए, चिकनाहट बिल्कुल न रहे, तब पीसकर सुरक्षित रक्खें। आधा-आधा ग्रेन (२ चावल के बराबर) दवा प्रातः-सायं बताशे में रखकर खिलाएँ या गुलुकोज़ मिलाकर पिलाएँ।

यह योग ऐसी टी.बी. के लिए रामबाण है जिसमें ख़ून कभी न आया हो। इसके सेवन से हठीली हारारत और ज्वर, खाँसी, शरीर का दुबलापन, भूख का न लगना आदि टी.बी. के सभी लक्षणों का नाश हो जाता है।

डब्बा = बच्चों की पसली चलना, हब्बा/डब्बा

१. नीलाथोथा हरावाला (हीराकसीस) भुना हुआ और सुहागा अधभुना (आधा भुना)—दोनों ३-३ ग्राम लेकर बारीक पीस लें, फिर बकरी का ताज़ा दूध मिलाकर बाजरे के बराबर गोलियाँ बना लें। बच्चों की अवस्था के अनुसार एक या दो गोली माँ के दूध में मिलाकर पिलाएँ। बच्चों के नमूनिया के लिए अतीव गुणकारी है।

२. अमलतास की सालम (सम्पूर्ण) फली को जलाकर कोयला कर लें, फिर अत्यन्त बारीक पीसकर शीशी में भर लें। जब बच्चे की पसली चल रही हो, तब ज़रा सा चटा दें। बच्चा नीरोग हो जाएगा। अकेली दवा है परन्तु अपने गुणों में अद्वितीय है।

डिप्थीरिया

१. अमलतास ५० ग्राम लेकर इसे एक लीटर पानी में उबाल लें। ठण्डा होने पर इस पानी के गरारे कराएँ।

२. पपीते के फल से निकलनेवाला रस १५ बूँद, शहद १५ बूँद—दोनों को मिलाकर दिन में ३-४ बार पिलाएँ। यह वह आश्चर्यजनक दवा है, जिसके आगे डाक्टर भी घुटने टेक देते हैं।

तिला (फकीरी)

१. जिन युवकों ने हस्त-मैथुन आदि द्वारा अपना सत्यानाश किया हो, हस्तमैथुन के कारण मूत्रेन्द्रिया में विकार आ गया हो, ऐसे युवकों को सबसे पहले तो अपने इस कुकर्म को त्यागना चाहिए, फिर रात्रि में सोते समय ३ ग्राम हींग को पानी में पीसकर मूत्रेन्द्रिय पर लेप करना चाहिए। प्रातः उठकर गर्म पानी से धो डालें। १५-२० दिन के प्रयोग से अद्भुत लाभ होगा। हानिरहित दवा है। अकेली वस्तु होने पर भी अत्यन्त प्रभावशाली है।

साधारण-सी वस्तु में भी परमात्मा ने कैसे-कैसे गुण भर रक्खे हैं, इस रहस्य को समझने के लिए इस तिला का प्रयोग ही पर्याप्त है।

तिल्ली

१. बड़ी हरड़ का छिलका और पुराना गुड़—दोनों ६-६ ग्राम लें और कूट-पीसकर दोनों को मिला लें। प्रतिदिन प्रातः ताज़ा पानी के साथ खिलाएँ, बढ़ी हुई तिल्ली अपने रूप में लौट आएगी।

२.छोटी पीपल ६ ग्राम को बारीक पीसकर प्रतिदिन गोदुग्ध के साथ खिला दें। कुछ दिन खिलाने से तिल्ली का दोष दूर हो जाएगा।

३. शरपुंखा (सरफोंका, झोझरू) के बीज ६ ग्राम को अत्यन्त बारीक पीसकर गाय की छाछ के साथ खिलाने से बहुत बढ़ी हुई तिल्ली भी कुछ ही दिन में ठीक हो जाती है।

४. सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) की जड़ का रस १० ग्राम, शहद १० ग्राम—दोनों को मिलाकर पिलाने से अत्यधिक बढ़ी हुई तिल्ली भी ठीक हो जाती है।

५. नौशादर १ ग्राम प्रतिदिन पके हुए पपीते के साथ खिलाने से जिगर और तिल्ली ठीक हो जाती हैं। पाठकगण! है न चमत्कारी दवा? भोजन का भोजन और दवा की दवा!

६. सज्जीखार और जवाखार (यवक्षार)—दोनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस लें। इसमें से १ ग्राम चूर्ण प्रतिदिन गर्म पानी से खिलाएँ। इसके सेवन से

तिल्ली कट जाती है।

७. राई ५० ग्राम, सुहागा भुना हुआ १५ ग्राम—अत्यन्त बारीक पीसकर दोनों को मिला लें। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी के साथ दें। इससे भूख खूब लगती है और तिल्ली दिन-प्रतिदिन घटती जाती है। इससे उत्तम दवा शायद ही कोई हो। ४० दिन तक सेवन कराएँ। यह दवा मेऽदे को शक्तिशाली बनाती है, तिल्ली की सूजन और सख्ती को दूर करती है।

८. हरे करेले काटकर उनका रस निकालें और प्रतिदिन २०-२० ग्राम पिलाएँ। १५ दिन में बढ़ी हुई तिल्ली का पुराना-से-पुराना दोष भी शेष नहीं रहता।

९. पपीता जो पकनेवाला हो, लेकर छील लें और उसके टुकड़े करके उत्तम सिरके में एक सप्ताह तक पड़ा रहने दें। तत्पश्चात् ५० ग्राम प्रतिदिन खिलाएँ। अद्भुत दवा है। कैप्सूल और इञ्जैक्शन इसके समक्ष कुछ भी नहीं हैं।

१०. घीक्वार (ग्वारपाठा) के एक मोटे पत्ते को चीरकर उसमें पिसा हुआ ठीकरी नौशादर ६ ग्राम भर दें, फिर इसे किसी चीनी की प्लेट में धूप में रख दें। इससे जो रस निकलेगा उसमें बताशा मिलाकर एक-एक चम्मच दिन में २-३ बार पिलाएँ। बढ़ी तिल्ली को समाप्त करने में अति प्रभावकारी है।

११. सोंठ १० ग्राम, हीराकसीस ५ ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। डेढ़ ग्रेन दवा दिन में दो बार पानी से दें। तिल्ली के लिए लाभदायक है।

१२. एक मूली को काटकर उसपर ३ ग्राम नौशादर छिड़ककर रात-भर पड़ा रहने दें, प्रातःकाल रोगी को खिला दें। २-३ सप्ताह प्रयोग करें, तिल्ली ठीक हो जाएगी।

१३. सज्जी ४ ग्राम गुड़ में लपेटकर खिलाएँ। दो-तीन सप्ताह प्रयोग कराएँ।

१४. ऊँटनी का दूध पीना बढ़ी हुई तिल्ली को ठीक करने के लिए अद्वितीय दवा है।

१५. अपामार्ग की जड़ ६ ग्राम को अत्यन्त बारीक पीसकर तथा गाय की छाछ में मिलाकर निरन्तर २१ दिन तक पिलाने से तिल्ली का भयंकर कष्ट भी दूर हो जाता है।

१६. सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) को सिल पर पीसकर और कपड़े में

निचोड़कर उसका रस निकाल लें। फिर १० ग्राम रस में १० ग्राम मधु मिलाकर खूब मथें और नित्य पिलाएँ। १४ दिन में अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी यथास्थान पर आ जाती है।

तुतलाना

ब्राह्मी के पत्ते ३१, काली मिर्च ५ दाने—दोनों को घोट-पीसकर एक मास तक नित्य पिलाएँ। इससे जिह्वा कोमल और पतली होकर तोतलापन मिट जाएगा।

तृतीया-चौथैया ज्वर (तीसरे-चौथे दिन आनेवाला बुखार)

१. सिरस के फूल, हल्दी, दारु हल्दी—तीनों वस्तुओं को अत्यन्त बारीक पीसकर और इसमें थोड़ा-सा घी मिलाकर चौथैया ज्वर के रोगी को नस्य (सुँघा) दें। इससे भयंकर-से भयंकर बुखार भी शान्त हो जाता है।

२. रविवार के दिन अपामार्ग (औंघा, चिरचिटा) के ६ ग्राम पत्तों को बारीक पीसकर गुड़ के साथ गोली बना लें और बारी के दिन (जिस दिन ज्वर चढ़ने का नम्बर है) इसकी तीन गोलियाँ ताज़ा पानी के साथ एक या दो बार देने से चौथैया बुखार रुक जाता है। अनेक बार का अनुभूत प्रयोग है।

३. नौशादर ६ ग्रेन (३ रत्ती), काली मिर्च २ नग—दोनों को अत्यन्त बारीक पीस लें और चौथैया के दिन ताज़ा पानी के साथ रोगी को खिला दें, बुखार नहीं चढ़ेगा।

४. कलौंजी ४ ग्राम को अत्यन्त बारीक पीसकर और शहद में मिलाकर चार दिन तक खिलाएँ। एक सप्ताह में चौथैया बुखार अवश्य रुक जाता है।

५. फिटकरी को बारीक पीसकर सुरक्षित रख लें। २ ग्रेन से ४ ग्रेन दवा लेकर और इसमें तनिक-सी खाँड मिलाकर बुखार चढ़ने से ४ घण्टा पूर्व पानी के साथ रोगी को फँका दें। दूसरी मात्रा बुखार चढ़ने से २ घण्टा पूर्व दें। बुखार नहीं चढ़ेगा। यदि पहले दिन के प्रयोग से बुखार न रुके तो दूसरे दिन प्रयोग कराएँ। निःसन्देह बुखार नहीं चढ़ेगा।

नोट—यदि रोगी को कब्ज़ रहता हो, तो पहले कब्ज़ को दूर कर लें।

६. गोघृत पुराने (कम-से-कम दो वर्ष पुराना) में थोड़ी-सी हींग मिलाकर सुँघाने से चौथैया का बुखार ऐसे दूर हो जाता है, जैसे गधे के सिर से सींग।

तृषा = प्यास बहुत लगना

मधु २० ग्राम लेकर १० मिनट तक मुँह में भरे रखें, फिर कुल्ला कर दें। इससे घोर प्यास भी शान्त हो जाती है।

दन्त-मञ्जन

१. बादाम के छिलके का कोयला ५० ग्राम, नमक सेंधा (लाहौरी) १० ग्राम, नौशादर ३ ग्राम, फिटकरी ६ ग्राम, रूमी मस्तगी १० ग्राम, अकरकरा ६ ग्राम, बायविड़ंग ६ ग्राम—सबको कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। प्रतिदिन मध्यमा (बीचवाली) अँगुली से दाँतों पर मलें। यह मञ्जन दाँतों के हिलने, पानी लगने, मसूड़ों के फूलने आदि के लिए अत्युत्तम है। प्रातः-सायं प्रयोग करें।

२. अनार के फूल की कलियाँ सूखी हुई १० ग्राम, मौलश्री की छाल १० ग्राम, बबूल की छाल १० ग्राम, अखरोट की छाल १० ग्राम, फिटकरी सफेद भुनी हुई १० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम, लौंग १० ग्राम—सभी दवाओं को अलग-अलग कूट-पीस, कपड़छन करके मिला लें। इसे प्रतिदिन मञ्जन के रूप में प्रयोग करें। इसके सेवन से जहाँ दाँत मोतियों की तरह चमकने लगते हैं, वहाँ पायोरिया का नाम-निशान भी नहीं रहता।

३. रूमी मस्तगी ५० ग्राम, फिटकरी सफेद भुनी हुई ५० ग्राम, छोटी इलायची के बीज ५० ग्राम, अकरकरा ५० ग्राम, वंशलोचन ५० ग्राम, काली मिर्च ५० ग्राम, मुश्क काफूर १५ ग्राम—सभी ओषधियों को कूट-पीस, कपड़छन करके मञ्जन बना लें।

यह शाही मञ्जन है। यह महँगा अवश्य है परन्तु प्रतिदिन के प्रयोग के लिए इससे श्रेष्ठ मञ्जन मिलना कठिन है। यह दाँतों के सभी कष्टों के निवारण के लिए अचूक है। पायोरिया को रोकता है। दाढ़-दाँतों में कीड़ा लगा हो तो उससे बचाता है, ख़ून और पीप को रोकता है।

४. बादाम का छिलका जला हुआ १०० ग्राम, फिटकरी सफेद भुनी हुई ५० ग्राम, बालछड़ ५० ग्राम—तीनों को पीसकर मञ्जन बना लें। इस मञ्जन के प्रयोग से दाँत मोती के समान श्वेत और दृढ़ होते हैं।

दन्त रोग

दाँत के कीड़े—१. द्रोणपुष्पी (गोमा, गूमा) के पत्तों का रस, समुद्रझाग, शहद और तेल—चारों समभाग लें। समुद्रझाग को बारीक पीस लें, फिर चारों

वस्तुओं को मिला लें। इसे २-३ बूँद कान में टपकाने से दाढ़-दाँत के कीड़े मर जाते हैं। पाठकगण ! है न आयुर्वेद की चमत्कारी दवा? दवा कान में डाली जाती है और कीड़े दाढ़ के मरते हैं।

२. अजवायन और वच समभाग मिलाकर इसमें से आधा ग्राम दवा रात्रि में दाढ़ों के नीचे रखकर सो जाना चाहिए। दाँत में कीड़ा लगने और दाँत-दर्द की उत्तम दवा है।

दाँत-दर्द—१. दूध में घी मिलाकर पिलाओ, दाँत-दर्द तुरन्त दूर होगा। एक संन्यासी का बताया हुआ टोटका है।

२. आक (अकौड़ा, मदार) की टहनियों को सुखाकर कोयला बना लें, फिर बारीक पीस लें। बस, दवा तैयार है। सरसों का तेल मिलाकर दाँतों पर मलें। थोड़ी देर तक राल बहने दें। फिर गर्म पानी से कुल्ले कर लें। प्रातः-सायं दोनों समय इस मञ्जन का प्रयोग करें। दाँतों का दर्द, चीस और पानी लगना एक सप्ताह में समाप्त हो जाएगा। पीले और मवाद-भरे मसूड़े मजबूत हो जाएँगे। दाँत मोती की भाँति चमकने लगेंगे।

३. फिटकरी और लौंग समभाग पीसकर दाँतों पर मलें। दाढ़-दाँत के दर्द के लिए रामबाण है।

४. हल्दी ३ ग्राम, अजवायन १० ग्राम, अमरूद के पत्ते ४—सबको आधा किलो पानी में खूब उबालें। फिर इस सुहाते हुए पानी के कुल्ले करें। १५ मिनट तक कुल्ले करते रहें। दाढ़-दाँत के दर्द का नाम तक नहीं रहेगा।

५. हींग को गर्म करके दाढ़ के नीचे दबाने से कृमि (कीड़े) के कारण होनेवाला दाढ़ का दर्द शीघ्र नष्ट हो जाता है।

दाँतों का हिलना—१. नागरमोथा, हरड़ का छिलका, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, वायविड़ंग, नीम के पत्ते—सभी वस्तुएँ बराबर-बराबर लेकर बारीक पीस लें। फिर गोमूत्र में २-३ दिन तक खरल करके १-१ ग्राम की गोली बना लें। रात्रि में सोते समय एक गोली मुँह में रखने से हिलते हुए दाँत दृढ़ हो जाते हैं। अद्वितीय और परीक्षित प्रयोग है।

२. काली मिर्च १० ग्राम, बादाम के छिलके का कोयला १० ग्राम, अफीम १ ग्राम, हरताल वर्कियः १ ग्राम—सबको अत्यन्त बारीक पीसकर दाँतों और मसूड़ों पर मलें और दो-तीन घण्टे तक कुल्ला न करें। इस मंजन से वृद्धों के हिलते हुए दाँत भी दृढ़ हो जाते हैं।

३. मायन हल्दी को जलाकर कोयला करके पीस लें, फिर समभाग अजवायन भी पीसकर मिला लें। इसे मंजन की भाँति दाँतों पर मलें। राल टपकने दें। कुछ दिन के प्रयोग से हिलते हुए दाँत मजबूत हो जाएँगे।

४. राल को पीसकर रात्रि में दाँतों पर मलें, राल छोड़ दें। फिर बिना कुल्ला किये ही सो जाएँ। ४० दिनों में दाँतों का हिलना बन्द हो जाएगा।

५. माजूफल को बारीक पीसकर मंजन करना हिलते हुए दाँतों की अद्वितीय ओषधि है।

६. सुपारी को जलाकर उसकी राख बना लें, फिर इस राख से तीन गुनी चाक-मिट्टी मिला लें और शीशी में भर लें। इसे प्रतिदिन मंजन के रूप में प्रयोग करें, हिलते हुए दाँत और मसूड़े दृढ़ होंगे।

७. कीकर (बबूल) के बीजों को छाया में सुखाकर मंजन बना लें और प्रतिदिन दाँतों पर मंजन किया करें। हिलते हुए दाँत मज़बूत होंगे दाँतों का दर्द भी दूर होगा।

८. रीठे का छिलका १०० ग्राम लेकर इसे साफ लोहे की कड़ाही में जला लें, फिर इसमें भुनी हुई फिटकरी समभाग मिलाकर बारीक पीस लें। इस मंजन को प्रातः-सायं दाँतों पर मलें। आधा घण्टा पश्चात् कुल्ला करें। दाँत दीर्घायु तक दृढ़ और साफ रहेंगे।

९. शहद शुद्ध, सिरका उत्तम—प्रत्येक २०-२० ग्राम, फिटकरी भुनी हुई १० ग्राम, काली मिर्च ३ ग्राम। फिटकरी और मिर्चों को बारीक पीसकर शहद और सिरका में मिला लें। इस चटनी को प्रतिदिन प्रातः-सायं दाँतों पर मलें। इसके प्रयोग से दाँतों का दर्द. दाँतों का हिलना, दाँतों की कीड़े, पायोरिया, दाँतों का मैल आदि समस्त दन्त-रोग दूर हो जाते हैं।

दमा

१. गर्म करके ठण्डा किया हुआ दूध ४०० ग्राम, छोटी दुद्धि पानी से धोकर साफ की हुई १० ग्राम। दुद्धि को कूट-पीसकर दूध में मिला दें और इस दूध को दमा के रोगी को पिला दें। दूध में मीठा न डालें। दूध गाय का लें। दवा दिन में दो बार दें।

ताज़ा दुद्धि बूटी का रस निकालकर दिन में ३ बार चाय के एक चम्मच के बराबर दें।

दमा के लिए अद्भुत ओषधि है। जब बड़ी-बड़ी दवाएँ फेल हो जाती हैं,

ऐसी दशा में यह बूटी अपना चमत्कार दिखाती है। इसके निरन्तर प्रयोग से दमा का दौरा पड़ना समाप्त हो जाता है। एक महात्मा का बताया हुआ योग है। प्रयोग कीजिए और लाभ उठाइए।

२. रीठे के छिलके का चूर्ण ३ ग्राम पानी के साथ खिलाएँ, इससे कै और दस्त होकर हर प्रकार का दमा ठीक हो जाता है। ७ दिन तक दवा सेवन करें। खिचड़ी में घी डालकर खिलाएँ।

३. बेलपत्र के पत्तों का रस ६ ग्राम, बाँसे के पत्तों का रस ६ ग्राम, तेल सरसों ६ ग्राम—तीनों को मिलाकर ७ दिन तक पिलाने से हर प्रकार का दमा दूर हो जाता है।

४. गन्धक आँवलासार शुद्ध, काली मिर्च—दोनों ३-३ ग्राम लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। इसे १० ग्राम गोघृत में अच्छी प्रकार मिलाकर रोगी को चटाएँ। १५ दिन तक निरन्तर प्रयोग करें।

५. आक (अर्क, अकौड़ा, मदार) का एक पत्ता, काली मिर्च २५ दाने—दोनों को खूब घोटकर उड़द के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रतिदिन ६ गोली गुनगुने पानी के साथ कुछ दिन खिलाने से दमा ठीक हो जाता है। बच्चों को केवल १ गोली देनी चाहिए।

६. फूली हुई सफेद फिटकरी २० ग्राम, मिश्री कूज: (कुञ्जा) २० ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। १ ग्राम से २ ग्राम तक प्रतिदिन ताज़ा पानी के साथ खिलाने से दमा दूर हो जाता है।

७. छोटी इलायची के बीज १ ग्राम, मालकांगनी के बीज १ ग्राम—दोनों को प्रतिदिन साबुत ही पानी के साथ निगला देने से दो सप्ताह में दमा नष्ट हो जाता है।

८. पीपल छोटी और पोहकरमूल दोनों आधा-आधा ग्राम लेकर बारीक चूर्ण बना लें। इसे शहद में मिलाकर चटाने से दमा जड़मूल से जाता रहता है।

९. लोहबान बढ़िया असली १० ग्राम, खाँड १० ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। प्रातः १ ग्राम दवा गर्म पानी से खिलाएँ। दमा के लिए उत्तम है।

१०. बाँसा (अडूसा) की जड़ छाया में सुखाकर और कूट-पीस चूर्ण बना सुरक्षित रक्खें। ३ ग्राम दवा प्रतिदिन गुनगुने पानी से खिलाएँ। दमा दूर हो जाता है।

दर्द

आंक (अकवन, मदार) के फूल, भाँग के पत्ते, सोंठ और सुरंजान सब

१०-१० ग्राम लेकर कूट लें। फिर सरसों का तेल १०० ग्राम लेकर अग्नि पर चढ़ा दें और पिसी हुई दवाएँ उस तेल में डाल दें। जब तेल अच्छी प्रकार पक जाए तो उतार लें और ठण्डा होने पर छान लें।

इस तेल की मालिश करने से रीह और सर्दी से होनेवाले दर्दों को तुरन्त आराम आ जाता है। यह तेल कमर, पिण्डली और जोड़ों के दर्द के लिए भी अतीव गुणकारी है।

दस्त

१. गूलर की पत्तियाँ १० ग्राम लेकर पानी के साथ ठण्डाई की भाँति पीस लें और २०० ग्राम पानी में मिलाकर रोगी को पिला दें। हर प्रकार के दस्त बन्द हो जाएँगे।

२. सौंफ और जीरा सफेद—समभाग लेकर तवे पर भून लें और बारीक पीसकर ३-३ ग्राम २-३ बार ताज़ा पानी से खिलाएँ। दस्त बन्द करने के लिए अत्यन्त सरल, सस्ता और चमत्कारी इलाज है।

३. अतीस के ३ ग्राम चूर्ण को शहद के साथ चटाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

दाद

१. बारूद को काग़ज़ी नींबू के रस में पीसकर दाद पर लेप कर दें, कितना ही पुराना दाद हो, नष्ट हो जाएगा।

२. नौशादर को नींबू के रस में पीसकर दाद पर लगा दें। दो-तीन दिन में दाद नष्ट हो ज़ाएगा।

३. नीला थोथा १ ग्राम, माजूफल २० ग्राम, मोम ५० ग्राम, शहद ५० ग्राम, सबको मिलाकर मरहम बना लें। इस मरहम को दाद पर लगाकर धीरे-धीरे मलें। पुराने-से-पुराना दाद नष्ट हो जाता है।

४. राल, गन्धक, सुहागा सफेद भुना हुआ, फिटकरी सफेद भुनी हुई—चारों वस्तुएँ बराबर-बराबर लेकर पीस लें और घी में मिलाकर दाद पर लगाएँ। पुराने-से-पुराना दाद नष्ट हो जाता है।

५. दाद को कपड़े से रगड़कर आक का दूध हल्का-सा रुई की फुरहरी से लगा दें। इससे कष्ट तो होगा परन्तु पुराने-से-पुराना दाद सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

६. नीम के पत्तों को दही में पीसकर दाद पर लगाने से दाद जड़मूल से नष्ट हो जाता है।

७. गन्धक आँवलासार १० ग्राम, नौशादर पपड़िया १० ग्राम, तिल तेल अथवा वैसलीन २० ग्राम—तीनों दवाओं को अच्छी प्रकार घोटकर मिला लें। दाद या चम्बल को नीम के साबुन या कार्बोलिक साबुन से धोकर दवा लगाएँ। दाद और चम्बल के लिए अतीव गुणकारी है।

८. देसी अजवायन २५ ग्राम, आक का दूध ५० ग्राम—दोनों को खूब रगड़कर छोटी-छोटी टिकिया बना लें और १२० ग्राम तिलों के तेल में डालकर धीमी अग्नि पर पकाएँ। जब टिकिया पकते-पकते काले रंग की हो जाएँ तब उतार लें और ठण्डा होने पर तेल को छानकर रख लें। इस तेल की दाद या चम्बल पर मालिश करें। दो घण्टे पश्चात् चने का आटा पानी में गूँधकर दाद या चम्बल पर अच्छी प्रकार रगड़ देना चाहिए।

९. हल्दी को बारीक पीसकर और पानी में गूँधकर लेप करने से पुराने-से-पुराना दाद बिना किसी कष्ट के दूर हो जाता है।

१०. ढाक (पलाश, टेसू) के बीजों को पीसकर कुछ दिन दाद पर लगाएँ, दाद नष्ट हो जाएगा।

११. पोस्टकार्ड को जलाकर इसकी राख बना लें। इस राख को सरसों के तेल में मिलाकर दाद पर लगाएँ। दाद को जड़मूल से नष्ट करनेवाली अनुभूत चिकित्सा है।

१२. सहजने की जड़ की छाल पीसकर दाद पर लगाने से दाद २-३ दिन में ही नष्ट हो जाता है।

१३. चौकिया सुहागा, गन्धक आँवलासार, चीनी—तीनों समभाग लेकर अच्छी प्रकार खरल करें। आवश्कता पड़ने पर पानी में घोलकर दाद पर लगा दें। दाद के लिए काल ही समझो।

१४. काफूर ६ ग्राम, गन्धक आँवलासार ६ ग्राम—दोनों को ६० ग्राम मिट्टी के तेल में खूब घोट लें और दाद पर लगाएँ। दाद के लिए रामबाण है।

दिल के रोग

१. अर्जुन की छाल का बारीक चूर्ण ४ ग्राम, खाँड २० ग्राम, गाय का दूध उबाला हुआ आधा किलो। तीनों वस्तुओं को खूब मिलाकर निराहार सेवन कराएँ।

हृदय-रोगों के लिए अद्वितीय है। प्रयोग दीर्घकाल तक करना चाहिए। एक वर्ष तक निरन्तर प्रयोग करने से हृदय के सभी रोग दूर हो जाते हैं। इतना ही नहीं, यह हड्डियों के टूट जाने, भीतरी मार या चोट में भीं लाभदायक है। इसके प्रयोग से टूटी हुई हड्डियाँ जुड़ जाती हैं।

२. निशास्ता (गोहूँ का सत) और अर्जुन की छाल का चूर्ण समभाग लेकर घी में भून लें, फिर इसमें तीन गुणा शहद डाल दें। यह अवलेह ६ ग्राम से १० ग्राम तक गाय के दूध के साथ सेवन करने से भयंकर-से-भयंकर हृदय-रोग दूर हो जाते हैं।

३.पीपल के कोमल पत्तों या कोपलों का रस ६ ग्राम से १० ग्राम तक थोड़ा शहद मिलाकर प्रातः-सायं लेने से हृदय को बड़ी शक्ति और शान्ति मिलती है। रोग पूर्णतः दूर होकर हृदय बलवान् बनता है। निर्धनों के लिए तो इसे अमृत ही समझिए।

४. दाना निकला हुआ भुट्टा लेकर जलाएँ और इसे पीसकर रख लें। इस भस्म को आधा ग्राम की मात्रा में १० ग्रम ताज़ा मक्खन में रखकर खिलाएँ। दिल की धड़कन और कमज़ोरी के लिए अतीव गुणकारी है।

५. छोटी इलायची के बीज, वंशलोचन असली, गावजबाँ के फूल—प्रत्येक समभाग लेकर बारीक पीस लें। ३ ग्राम दवा को सेब के मुरब्बे के साथ सेवन कराएँ। दिल की घबराहट और कमज़ोरी के लिए रामबाण है।

दुबलापन

१.असगन्ध आधा किलो लेकर कूट-पीस कपड़छन कर लें। १० ग्राम चूर्ण को आधा किलो गोदुग्ध में डालकर उबालें। ठण्डा होने पर शहद मिलाकर पिलाएँ। प्रातः-सायं दोनों समय प्रयोग कराएँ। जैसें वर्षा से धान के खेत लहलहा उठते हैं, उसी प्रकार असगन्ध के प्रयोग से दुबले व्यक्ति मोटे हो जाते हैं। शक्तिवृद्धि के साथ-साथ मुखमण्डल का रंग भी सुर्ख हो जाता है। ४० दिन तक सेवन कराएँ।

२. बिनौला ५० ग्राम को भूनकर कूट लें। फिर ५० ग्राम मूसली सफेद भी कूटकर इसमें मिला दें। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं दूध के साथ दें। पुरुषों के लिए शक्तिवर्धक है। वीर्य पैदा करता है, मसाने को शक्ति देता है। स्त्रियों के श्वेत प्रदर के लिए अत्यन्त प्रभावशाली है। २-३ मास सेवन कर इसका चमत्कार देखें।

३. मालकांगनी २५० ग्राम लेकर गोघृत में भून लें और समभाग खाँड मिला लें। ६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः-सायं गोदुग्ध के साथ ४० दिन तक सेवन करें।

४.प्रातः-सायं ३-३ ग्राम हल्दी के चूर्ण को गोदुग्ध के साथ सेवन करने से शरीर मोटा हो जाता है।

५. यदि प्रतिनदिन भोजन के पश्चात् ४० से ५० ग्राम तक घी और शहद (घी २० ग्राम, शहद ३० ग्राम) मिलाकर प्रयोग किये जाएँ तो मनुष्य १०० वर्ष तक जीवित रह सकता है और अन्त समय तक उसकी शारीरिक शक्ति और स्मरण-शक्ति स्थायी रह सकती है।

६. दालचीनी को बारीक पीस तथा कपड़छन करके सुरक्षित रक्खें। रात्रि में गर्म-गर्म दूध में २ ग्राम चूर्ण डालकर १५ मिनट पश्चात् इस दूध में शहद मिलाकर पिलाने से वीर्य प्रभूत मात्रा में बनता है। कम-से-कम दस दिन पिलाएँ।

७. चने की दाल ५० ग्राम को १०० ग्राम दूध में भिगो दें। प्रातः इस फूली हुई दाल को चबा-चबाकर खाएँ। साथ में किशमिश या गुड़ का प्रयोग कर सकते हैं। कम-से-कम ४० दिन प्रयोग करें। शक्ति बढ़ाने के लिए उत्तम है।

८. ढाक के बीज ५० ग्राम, बायबिड़ंग २५ ग्राम, आँवला गुठली-रहित १०० ग्राम—तीनों को कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। ३ ग्राम दवा शहद में मिलाकर गोदुग्ध के साथ सेवन करें। इसके ४० दिन सेवन करने से वृद्ध मनुष्य भी यौवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है।

दूध की कमी

शतावर का चूर्ण ६ ग्राम और चीनी १० ग्राम-दोनों को गाय के २५० ग्राम गर्म दूध में मिलाकर पिलाने से जिन स्त्रियों को दूध कम उतरता हो, उनके दूध की कमी पूरी हो जाती है।

नकसीर

१. गाय के गोबर का रस सूँघने अथवा उसकी नसवार लेने से नकसीर अवश्य बन्द हो जाती है।

२. बकरी का धारोष्ण दूध मिश्री मिलाकर पिलाने से किसी भी दवा से न हटने वाली नकसीर कुछ ही दिनों में जीवनभर के लिए बन्द हो जाती है।

३. यदि नकसीर किसी भी उपाय से बन्द नहीं हो रही तो ताज़ा आँवलों के रस का नस्य दीजिए, अथवा पिचकारी द्वारा इस रस को नाक में पहुँचाइए, भयंकर खून की धारा भी रुक जाएगी। यदि ताजा आँवले न मिलें तो सूखे आँवलों को पानी के साथ कूट-पीसकर सिर और तालु पर लेप कीजिए और पानी में ३-४ घण्टे भीगे हुए आँवलों के पानी की नस्य दीजिए। अद्‌भुत एवं चमत्कारी दवा है।

४. वंशलोचन असली २० ग्राम, कूज: (कुञ्जा) मिश्री २० ग्राम—दोनों को अत्यन्त बारीक पीसकर इसमें ४० ग्राम शहद मिला लें। ५ ग्राम दवा चटाकर ऊपर से बकरी का धारोष्ण दूध पिलाएँ। नकसीर के लिए उत्तम दवा है।

५. मुनक्का बीजरहित ५ दाने, खसखस ४ ग्राम, पद्माख ६ ग्राम, आँवला सूखा ५ ग्राम—चारों दवाओं को मामूली-सा कूटकर २५० ग्राम पानी में डालकर रात्रि में मिट्टी के बर्तन में भिगो दें और ओस में रख दें। प्रातः दवाओं को मलकर छान लें और १० ग्राम मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाएँ। रक्तपित्ती (नकसीर) के लिए अत्युत्तम ओषधि है।

६. रसौत २ ग्रेन (१ रत्ती) प्रतिदिन प्रातःकाल ताज़ा पानी के साथ खिलाने से छोटे बच्चों की रक्तपित्ती दूर होती है।

७. ६ ग्राम फिटकरी को ५० ग्राम पानी में घोलकर नाक में टपकाएँ अथवा रुई का फाहा तर करके नाक में लगा दें। इसी पानी में कपड़ा तर करके माथे पर रक्खें। नकसीर तुरन्त बन्द हो जाएगी।

८. सफेद सुर्मा १० ग्राम बारीक पीस लें। ६ ग्रेन दवा प्रतिदिन प्रातः पानी से एक सप्ताह तक खिलाएँ। नकसीर के लिए उत्तम दवा है।

९. यदि रक्त दाहिने नथुने से बहता हो तो बाएँ हाथ की बीच की अंगुली को इसके पासवाली अंगुली के साथ खूब कसकर बाँध दें, यदि बाएँ नथुने से खून बह रहा हो तो दाहिने हाथवाली बीच की अंगुली को पासवाली अंगुली से बाँध

दें। नकसीर तुरन्त बन्द हो जाएगी।

१०. पीपल वृक्ष की अन्तःछाल २० ग्राम को रात्रि में १०० ग्राम पानी में भिगों दें। प्रातः छानकर और मिश्री मिलाकर पिला दें। नकसीर बन्द हो जाएगी। दवा ८–१० दिन दें।

११. सोना गेरू और सेलखड़ी—दोनों को समभाग लेकर पीस लें। ३-३ ग्राम दवा ठण्डे पानी से दिन में ३ बार दें। नकसीर बन्द हो जाती है। स्त्रियों के रक्त-प्रदर में भी लाभदायक है।

नपुंसकता

१. तुलसी के बीज २५० ग्राम, गुड़ पुराना २५० ग्राम—दोनों को घोट-पीस-कर डेढ़-डेड़ ग्राम की गोली बना लें। प्रतिदिन प्रातः-सायं एक-एक गोली धारोष्ण गोदुग्ध के साथ लें।नपुंसकता को नष्ट करने के लिए अद्भुत है। ५-६ सप्ताह सेवन करें।

नशा-नाशक

१. बिनौला की गिरी ४० ग्राम को ठण्डाई की भाँति घोटकर पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

२. अरण्ड की नरम-नरम हरी कोंपलें १०० ग्राम को ४०० ग्राम पानी में ठण्डाई की भाँति पीस लें। इसे थोड़ा-थोड़ा ३-४ बार में पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

३. आँवले के पत्ते १०० ग्राम को ४०० ग्राम पानी में ठण्डाई की भाँति घोटकर पिलाने से पर्याप्त समय की खाई हुई अफीम का विष भी दूर हो जाता है यदि मनुष्य साँस ले रहा हो तो।

नाक के रोग

पीनस—सोंठ, पीपल छोटी, छोटी इलायची के बीज—प्रत्येक ४ ग्राम, सबको पीसकर १०० ग्राम गुड़ में मिलाकर १-१ ग्राम की गोलियाँ बनाएँ। प्रतिदिन रात्रि में दो गोलियाँ गुनगुने पानी के साथ खिलाने से पीनस, जुकाम, खाँसी और कफ दूर हो जाते हैं।

छींक—हरे धनिया के पत्ते और सफेद चन्दन का बुरादा—दोनों को पीसकर सुँघाने से अधिक छींकों का आना बन्द हो जाता है।

नाफ टलना

१. गोखरू की जड़ हाथ से उखाड़कर नाभि पर बाँध दें। नाफ तुरन्त अपने स्थान पर आ जाएगी।

नोट—जड़ को हाथ से ही उखाड़ें। उखाड़ने के लिए लोहा आदि का प्रयोग न करें, अन्यथा उसका प्रभाव समाप्त हो जाएगा।

नामर्दी

१. पत्थर से कूटकर निकाला हुआ सफेद प्याज़ का रस २ किलो, शुद्ध शहद १ किलो—दोनों को मिलाकर कलईदार अथवा मिट्टी के बर्तन में रखकर पकाएँ। अग्नि बहुत तेज़ न हो। जब प्याज़ का पानी जल जाए और शहद-मात्र शेष रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर सफेद मूसली का बारीक चूर्ण आधा किलो मिलाकर चीनी या शीशे के बर्तन में भर लें। १० ग्राम से २० ग्राम तक प्रतिदिन प्रातः-सायं सेवन कराएँ। इसके सेवन से नामर्द भी मर्द बन जाता है। अपने गुणों में अद्भुत है।

खट्टी, बादी करनेवाली, मिर्च, मांस और गर्म वस्तुओं से परहेज रक्खें।

२. मालकांगनी के साफ बड़े दाने ५० ग्राम, चीनी २५ ग्राम—दोनों को गौ के आधा किलो दूध में डालकर हल्की अग्नि पर पकाएँ। जब सारे दूध का खोया बन जाए तब उतार लें और अच्छी प्रकार घोटकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। १-१ गोली प्रातः-सायं गोदुग्ध से खिलाएँ। ये गोलियाँ अत्यन्त शक्तिवर्धक और यौवनावस्था को वापस लानेवाली हैं।

३. २०० ग्राम भिलावों की टोपियाँ उतार दें, फिर उन्हें लोहे की गर्म संडासी से दबाकर उनका तेल निकाल दें। तत्पश्चात् इन्हें गोघृत में इतना भूनें कि धुआँ निकलना बन्द हो जाए। फिर कूटकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली रात्रि में दूध के साथ लें। अत्यन्त शक्तिवर्धक हैं। गुड़, तेल, खटाई और गर्म वस्तुओं का परहेज करें। घी, दूध, मक्खन का अधिक मात्रा में सेवन करें।

४. कुलिजन के डेढ़ग्राम बारीक चूर्ण को १० ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ, ऊपर से गाय के दूध में शहद मिलाकार पिलाएँ। यह योग अत्यन्त शक्तिवर्धक और शीघ्रपतन का नाशक है।

५. असगन्ध नागोरी के १० ग्राम बारीक चूर्ण को आधा किलो गोदुग्ध में उबालें। जब दूध ४०० ग्राम रह जाए तब शहद मिलाकर ४० दिन तक

पिलाएँ। अत्यन्त पौष्टिक और शक्तिवर्धक है।

६. मूसली सफेद बढ़िया २५० ग्राम लेकर कूट-पीसकर, कपड़छन कर लें। फिर इसे २ किलो गोदुग्ध में डालकर खोया बनाएँ। खोया बन जाने पर इसे २५० ग्राम घी में भून लें। ठण्डा होने पर आधा किलो बूरा मिलाकर किसी थाली आदि में जमा दें। २०-२० ग्राम प्रातः-सायं सेवन करें। अत्यन्त पौष्टिक और शक्तिवर्धक है, वीर्य को गाढ़ा करता है।

नारवा = बाला

१.हींग ४ ग्रेन (२ रत्ती) ताज़ा पानी के साथ पीसकर पीने से नारवा कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

२. कबूतर का पर २ चावल-(चौथाई रत्ती)—भर गुड़ में रखकर पानी के साथ निगलवा दें। नारवा कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

३. बकायन के बीज ७ नग पानी के साथ निगलवा दें। कुछ ही दिनों में नारवा रोग से छुट्टी मिल जाती है।

४. कबूतर की बीठ और गुड़—दोनों समभाग लेकर पीस लें। नारवा पर इसका लेप करने से नारवा कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

५. २ ग्रेन (१ रत्ती) भिलावे को गुड़ में अच्छी प्रकार लपेट लें जिससे उसका कोई भी हिस्सा बाहर निकलता हुआ न रहे। इस गोली को प्रातः ताज़ा पानी के साथ रोगी को निगलवा दें। ५-७ दिन में नारवा समाप्त हो जाता है। कौड़ियों की दवा है परन्तु अपने गुणों में अत्यन्त चमत्कारी है।

नाल-परिवर्तन

यदि किसी के लड़की-ही-लड़की उत्पन्न होती हों तो पलाश (ढाक; टेसू) का एक कोमल पत्ता प्रतिदिन बछड़ेवाली गाय के दूध के साथ पीसकर पिलाएँ। गर्भस्थापना के तीसरे मास से छह मास तक ऐसा करें। निश्चय ही पुत्र उत्पन्न होगा और वह भी बलवान् तथा बुद्धिमान्।

नासूर

१. साँप की कैंचुली को सावधानी से जलाकर राख कर लें और वट-वृक्ष (बड़) के दूध में मिलाकर इसमें रुई का फाहा तर करके नासूर में रख दें। १० दिन तक एक ही फाहा लगा रहने दें। इस एक ही फाहे से नासूर दूर हो जाता है।

२. चिड़िया की बीठ पानी में पीसकर नासूर पर लेप करना भी अत्यन्त लाभदायक है।

३. अमलतास, हल्दी, मजीठ—तीनों बराबर लेकर बारीक पीस लें और शहद में वत्ती बनाकर नासूर में भर दें। इससे हर प्रकार का नासूर ठीक हो जाता है।

४. नीम की पत्तियों को पीसकर उसकी पुलटिस बना लें और नासूर पर बाँध दें। नासूर ठीक हो जाता है।

५. पत्थर के कायेले की राख (एकदम सफेद राख) १० ग्राम, रसकपूर २ ग्रेन (एक रत्ती)—दोनों को बरीक खरल करके १० ग्राम मक्खन में मिलाकर सुरक्षित रक्खें। समय पर प्रयोग में लाएँ। हर प्रकार के नासूर, घाव, फुंसी के लिए अतीव गुणकारी ओषधि है।

६. धूतरे के पत्तों का रस निकाल लें। कपड़े की बत्ती बनाकर उस रस में भिगोकर नासूर में लगाएँ। नासूर चार दिन में ही पूर्णरूपेण ठीक हो जाएगा।

७. सफेद घूँघची (चिरमठी) को पानी के साथ बारीक पीसकर नासूर पर लेप कर दें। यह लेप नासूर को तुरन्त बन्द कर देता है।

८. थूहर का दूध, आक का दूध और दारु हल्दी पिसी हुई—तीनों को कपड़े की वत्ती में लपेटकर नासूर के भीतर भरने मे आराम आ जाता है।

निद्रानाश

१. निद्रा न आने पर पैर के नाखूनों पर तेल लगाएँ। भाँग पीसकर पैरों के तलवों में लगाएँ। तुरन्त नींद आ जाएगी।

२. ज़रा-सा जायफल घी में घिसकर आँख की पलकों पर लगा दें, फौरन नींद आ जाएगी।

३. धनिया का तेल सिर में लगाने से निद्रा खूब आती है। धनिया के तेल के प्रयोग से दिमागी थकावट भी दूर होती है, बाल मज़बूत होते हैं।

४. गाय का घी गर्म करके इसकी मालिश सिर, कनपटियों और पाँवों के तलवों पर अच्छी प्रकार करें। इससे निद्रा आ जाती है।

५.उत्तम कास्ट्रायल को काँसी की कटोरी में डालकर काँसी के टुकड़े से खूब रगड़ें। जब रगड़ते-रगड़ते काला पड़ जाए तब सलाई में भरकर रोगी की आँखों में लगा दें, अवश्य नींद आ जाएगी।

६. तुलसी के ४०-५० पत्ते तकिये के नीचे रखकर सो जाएँ, निद्रा आ जाएगी।

७. सर्पगन्धा १ ग्राम फँकाकर ऊपर से दूध पिलाएँ। अथवा पीपलामूल १ ग्राम, गुड़ पुराना (कम-से-कम एक वर्ष पुराना) १ ग्राम—दोनों को मिलाकर खिला दें, ऊपर से दूध पिलाएँ। निद्रा आ जाएगी।

८. खाने का सोडा आधा ग्राम को गर्म जल के साथ सेवन करने से १५-२० मिनट में ही नींद आ जाती है।

९. एरण्ड की गिरी १० ग्राम, गाय या बकरी का दूध २० ग्राम। एरण्ड की गिरी को गाय या बकरी के दूध में थोड़ा-सा पीसकर और गर्म करके माथे पर लेप करने से गहरी नींद आती है।

निमोनिया

१. एक भिलावा लेकर उसे अग्नि पर गर्म करें और लोहे की सलाख से उसमें छेद कर २ बूँद तेल २५० ग्राम गुनगुने दूध में टपका लें। फिर इस तेल को दूध में अच्छी प्रकार मिलाकर निमोनिया के रोगी को पिला दें, ऊपर खूब कपड़े उढ़ा दें। रोगी एक ही खुराक में और एक ही दिन में स्वस्थ हो जाएगा और खाट से उठ खड़ा होगा। चमत्कारी दवा है। प्रभु ने इसमें अद्भुत गुण भर दिया है।

२. अदरक अथवा तुलसी के पत्तों का रस ६ ग्राम, शहद ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर दिन में २-३ बार दें। इस औषधि के सेवन से किसी इञ्जैक्शन की आवश्यकता नहीं रहती। खाँसी, बलगम, दर्द आदि भी ठीक हो जाते हैं।

नेत्रज्योति-वर्धक

१. सौंफ आधा किलो, खाँड आधा किलो—दोनों को बारीक पीसकर मिला लें और सुरक्षित रक्खें। रात्रि में १० ग्राम दवा फाँककर दो-चार घूँट पानी पी लें। इसके निरन्तर सेवन से दृष्टि कमजोर नहीं होती। मोतियाबिन्द को रोकता है, कब्ज को दूर करता है, आश्चर्यजनक वस्तु है।

२. प्रतिदिन नहाने से पूर्व पाँव के अंगूठों में शुद्ध सरसों का तेल मलने से वृद्धावस्था तक नेत्रों की ज्योति कमज़ोर नहीं होती। यह प्रयोग प्रतिदिन किया जाए तो चश्मा लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

३. प्रतिदिन आँखों में एक-दो बूँद सरसों का तेल लगाएँ, इससे आँखें सभी प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहेंगी और नेत्रज्योति में जीवनभर कोई अन्तर नहीं आएगा।

४.हीराकसीस बढ़िया ५ ग्राम, बोरिक ऐसिड ५० ग्राम—दोनों को एक दिन खूब खरल करें। पहले हीराकसीस को बारीक पीस लें, फिर थोड़ा-थोड़ा बोरिक डालकर खरल करते जाएँ। खरल करके सुरक्षित रक्खें। प्रातः-सायं सलाई से आँखों में लगाएँ। आँखों के समस्त रोगों और विशेषकर नज़र की कमज़ोरी के लिए रामबाण है। इसके निरन्तर प्रयोग से आँखें तमाम बीमारियों से सुरक्षित रहती हैं।

५. गोरखमुण्डी का अर्क २५-३० ग्राम प्रतिदिन पिलाने से नेत्रज्योति बढ़ती है।

६. अश्वगन्ध का चूर्ण ४ ग्राम, आँवले का रस ८ ग्राम, मुलहठी का चूर्ण ४ ग्राम—तीनों को मिलाकर २-३ मास सेवन करने से नेत्रज्योति बढ़ती है।

पक्षाघात

जंगली कबूतर की बीठ लेकर उसे समभाग अकौए के दूध में खूब अच्छी तरह घोटें। फिर झड़बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं १-१ गोली १० दिन तक प्रयोग करें। पक्षाघात (लकवा) के लिए उत्तम योग है।

पड़वाल

१. पहले पड़वालों को उखाड़ दें, फिर कीकर (बबूल) की फलियों का दूध सलाई द्वारा आँखों में लगाएँ। पड़वाल नष्ट हो जाएँगे।

२. बारहसिंगे के सींग को पानी में घिस लें। फिर पड़वालों को उखाड़कर इस दवा को आँखों में लगाएँ।

पथरी

१. पेठे के १०० ग्राम रस में यवक्षार (जवाखार) ३ ग्राम और पुराना गुड़ २ ग्राम मिलाकर पिलाने से कुछ ही दिन में हर प्रकार की पथरी नष्ट हो जाती है।

२. यवक्षार, सुहागा सफेद भुना हुआ और कलमीशोरा—तीनों वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर और अत्यन्त बारीक पीसकर प्रतिदिन ३-३ ग्राम प्रातः-सायं पानी के साथ खिलाने से पथरी गलकर निकल जाती है।

३. फिटकरी सफेद, लोटा सज्जी, कलमीशोरा—प्रत्येक १०-१० ग्राम, नौशादर ५० ग्राम—सबको बारीक पीस लें। प्रातः-सायं ३-३ ग्राम दवा गर्म पानी अथवा अर्क सौंफ से कुछ दिन खिलाएँ। पथरी गलकर निकल जाएगी।

४. तुलसी के बीज ३० ग्राम, खाने का सोडा १० ग्राम। तुलसी के बीजों को अच्छी प्रकार पीसकर इसमें खाने का सोडा मिला लें। प्रतिदिन ४-४ ग्राम दवा प्रातः-सायं छाछ के साथ पिलाएँ। छोटी पथरी टुकड़े-टुकड़े होकर मूत्र-मार्ग से निकल जाएगी। जिनका ऑपरेशन हुआ है, वे यदि इसका प्रयोग करें तो दोबारा पथरी नहीं बनेगी।

५. मूली का पानी २० ग्राम, यवक्षार १ ग्राम—दोनों को मिलाकर प्रातः-सायं पिलाएँ। एक-दो सप्ताह में पथरी गलकर निकल जाएगी।

६. २५० ग्राम कुलथी को रात्रि में तीन लीटर (३ किलो) पानी में भिगो दें। प्रातःकाल इसे धीमी आग पर पकाएँ। जब २५० ग्राम पानी रह जाए तब उतार लें। फिर ३० ग्राम शुद्ध घी में जीरा डालकर उसका छोंक लगाएँ। काली मिर्च और नमक भी डाल लें। १२ बजे यह सारा सूप पी लें। एक-दो सप्ताह तक सेवन करें। पथरी गलकर निकल जाएगी।

७. खरबूजे का छिलका १० ग्राम लेकर इसे १०० ग्राम पानी में उबाल लें और प्रातः-सायं रोगी को पिलाएँ, इससे मसाने की पथरी निकल जाएगी।

८. १५० ग्राम सज्जी लेकर बारीक पीस लें। ६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः गाय की छाछ में मिलाकर तीन सप्ताह तक पिलाएँ। गुर्दा और मसाने की पथरी के लिए रामबाण हैं।

९. कलमीशोरा, नौशादर पपड़िया, सोडा बाई कार्ब—समभाग लेकर बारीक पीस लें। ३ ग्राम दवा अर्क मकोय के साथ प्रयोग कराएँ। हर प्रकार के दर्द-गुर्दा और पथरी के लिए लाभकारी है।

पसीने में बदबू

आम का बौर १५० ग्राम लेकर छाया में सुखा लें। सूखने पर कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। ५ ग्राम दवा फँकाकर ऊपर से १० ग्राम अर्क गुलाब पिलाएँ। १५ दिन के प्रयोग के पश्चात् पसीने की सारी बदबू दूर होकर शरीर से इत्र जैसी सुगन्धि आने लग जाएगी।

पागल कुत्ते का काटना

चोंक (सत्यानासी की जड़) ४ ग्राम को बारीक पीसकर ५० ग्राम दही में मिलाकर रोगी को खिला दें। पागल कुत्ते का काटा व्यक्ति ठीक हो जाएगा। चमत्कारी दवा है। इन्जैक्शन लगवाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

पाँवों में जलन

१. पावों में जलन अनुभव होती हो तो सरसों के तेल को पानी में मिलाकर खूब मथें, फिर पैर के तलवों में लगाएँ। पैरों की जलन दूर होगी।

२. मेंहदी को पानी में गूँधकर पैरों के तलवों में लगाने से भी पैरों की जलन मिट जाती है।

३. पैरों के तलवों में चन्दन के तेल की मालिश करने से भी पाँवों की जलन मिट जाती है।

४. पैरों के तलवों में कद्दू को काटकर उसकी मालिश करने से भी पैरों की जलन मिट जाती है।

पागलपन

१. सर्पगन्धा २ ग्राम, काली मिर्च ५ नग—दोनों को बारीक पीस लें। यह एक मात्रा है। ऐसी १-१ मात्रा प्रातः-सायं बकरी के दूध से दें। पागलपन को दूर करने के लिए अपने गुणों में अद्भुत है। एक सप्ताह में ही रोग बहुत-कुछ दूर हो जाता है। मार-धाड़वाले पागलपन के लिए विशेष गुणकारी है। खाने में गर्म वस्तुएँ न दें। पेट को साफ रक्खें, कब्ज बिल्कुल न रहने दें। सिर पर बादाम रोगन की मालिश करें।

२.कद्दू की मींगी ५ ग्राम. खसखस ५ ग्राम, किशमिश १५ दानें- तीनों को पानी में घोट छानकर पिलाएं। कम-से-कम एक मास तक प्रयोग कराएँ।

३. लिहसोड़े की छाल आधा किलो को १० किलो पानी में उबालें ठण्डा होने पर इस पानी से स्नान कराएँ। १४ दिन में पागलपन दूर हो जाएगा।

४.फिटकरी सफेद बारीक पिसी हुई ३ ग्राम को २५० ग्राम गाय के दही के साथ खिलाएँ। फिर एक घण्टे पश्चात् गाय का मक्खन २५० ग्राम खिलाएँ। एक सप्ताह तक निरन्तर सेवन कराएँ। पागलपन, उन्माद और गन्दे विचारों को दूर करने के लिए रामबाण है। नींद खूब आने लगेगी।

५. शंखपुष्पी अथवा ब्राह्मी बूटी के पत्तों का रस ४० ग्राम, कड़वी कूठ का चूर्ण १ ग्राम—दोनों को मिलाकर रोगी को पिलाएँ। इसे कुछ दिन पिलाने से हर प्रकार का पागलपन दूर हो जाता है। बलाबल के अनुसार दवा कम या अधिक की जा सकती है।

६. गोघृत (कम-से-कम दस वर्ष पुराना) १० ग्राम प्रतिदिन गर्म करके

और इसमें ६ ग्राम मिश्री मिलाकर रोगी को पिला दें। पागलपन के लिए अत्युत्तम नुस्खा है।

७. रत्ती (घूँघची) लाल रंगवाली—दो दानों का चूर्ण बनाकर २५० ग्राम गोदुग्ध के साथ कुछ दिन खिलाने से पागलपन अवश्य दूर हो जाता है। विशेष रूप से बलग़मी पागलपन की हुक्मी दवा है।

८. सारे शरीर पर सरसों के तेल की मालिश करके रोगी को कुछ समय तक धूप में बैठाने से भी पागलपन निश्चय ही दूर हो जाता है।

९. १०० ग्राम से २०० ग्राम तक गोमूत्र प्रतिदिन प्रातःकाल एक मास तक पिलाने से पागलपन निश्चय ही ठीक हो जाता है। गोमूत्र को एक बार कपड़े से छान लें।

१०. शंखपुष्पी १० ग्राम, बादाम ७ दाने, पेठे की मींगी ६ ग्राम, काली मिर्च १० दाने—सबको ठण्डाई की भाँति घोट-पीसकर एक मास तक पिलाएँ, पागलपन के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

पाण्डु = पीलिया, कामला

१. लाल इन्द्रायण के बीजों की गिरी—२ नग, खाँड ६ ग्राम—दोनों गिरियों को खाँड में रखकर निगला दें। केवल ७ दिन दवा दें। पीलिया के लिए अद्‌भुत दवा है। जादू की भाँति अपना प्रभाव दिखाती है।

नोट—लाल इन्द्रायण का संस्कृत-नाम महाकाल है। यह भारत के प्रायः सभी तराईवाले जंगलों में पायी जाती है। इसके बीज लाल होते हैं और कड़वाहट में कुनीन को भी मात करते हैं।

२. हींग का अंजन लगाने से पीलिया बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है।

३. रीठे का छिलका १५ ग्राम, गावजबाँ १० ग्राम—दोनों को रात में २५० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः पानी को निथारकर पिला दें। इस दवा के केवल सात दिन प्रयोग करने से भयंकर-से-भयंकर कामला नष्ट हो जाता है।

४. कुटकी ३ ग्राम, मिश्री कूज (कुञ्जा) १० ग्राम—कुटकी को बारीक पीसकर मिश्री में मिला लें और प्रतिदिन प्रातः पानी के साथ खिला दें। भयंकर पाण्डु रोग जाता रहता है।

५. प्रतिदिन आँखों में २-३ बूँद नींबू का रस टपकाने से कामला दूर हो जाता है।

६. मूली के पत्तों के १०० ग्राम रस में २० ग्राम शक्कर मिलाकर

पिलाएँ। पीलिया को नष्ट करने के लिए उत्तम है। मूली, सन्तरे, पपीता, तरबूज़, अंगूर, टमाटर खाने को दें। गन्ने का रस पिलाएँ। पेट साफ रक्खें।

७. बड़ी हरड़ (पीली हरड़) का छिलका १०० ग्राम, मिश्री १०० ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर मिला लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं ताज़ा पानी के साथ फँकाएँ। पीलिया रोग नष्ट हो जाता है।

८. आक (अर्क, मदार, अकौड़ा) के नर पौधे की सबसे ऊपर की छोटी कोंपल (दो पत्तीवाली) लेकर मीठे मावे (खोया) में मसलकर खिला दें और ऊपर से दूध पिला दें। बस, पीलिया रोग सदा के लिए समाप्त। आवश्यकता तो नहीं पड़ेगी परन्तु, यदि कुछ कसर रह जाए तो तीसरे दिन एक खुराक और दे दें। पीलिया का अचूक, सरल और चमत्कारी इलाज है।

९. मँहदी के पत्ते १० ग्राम रात्रि में २०० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन के सेवन से कामला, पाण्डु रोग जड़मूल से दूर हो जाएगा।

१०. फिटकरी सफेद को भून लें और बारीक पीसकर सुरक्षित रक्खें। पहले दिन आधा ग्राम दवा दही में मिलाकर खिलाएँ, दूसरे दिन १ ग्राम, तीसरे दिन डेढ़ ग्राम, इसी प्रकार बढ़ाते हुए सातवें दिन साढ़े तीन ग्राम फिटकरी का चूर्ण मिलाकर खिला दें। प्रभु-कृपा से १ सप्ताह में पीलिया नष्ट हो जाएगा।

११. फिटकरी सफेद १८ ग्राम लेकर उसे बारीक पीस लें और इसकी २१ पुड़ियाँ बनाएँ। प्रातःकाल निराहार एक पुड़िया गाय के २० ग्राम मक्खन में मिलाकर खिलाएँ। पुराने-से-पुराना पाण्डु रोग भी दूर हो जाएगा।

१२. मूली के पत्तों को कूटकर ८० ग्राम रस निकालें और किसी साफ बर्तन में डालकर अग्नि पर चढ़ा दें। जब पानी फट जाए तब छान लें और इसमें ज़रा-सी चीनी मिलाकर प्रातः निराहार पिला दें। पाण्डु रोग दूर करने में अतीव गुणकारी है।

१३. रेवन्द खताई १० ग्राम, नौशादर ५ ग्राम, कलमीशोरा ५ ग्राम—सबको बारीक पीस लें। आधा-आधा ग्राम दवा प्रातः-सायं ताज़ा पानी से दें। एक सप्ताह में पीलिया नष्ट हो जाता है।

पारे की गोली

१. काले तीतर को घर में लाकर रक्खें। इसे सात दिन तक केवल दूध पीने

को दें। आठवें दिन १२ ग्राम पारा खिला दें। सावधानी रक्खें। यह पारा गोली बनकर निकलेगा।

२. चिरचिटे (अपामार्ग) की जड़ का रस २५० ग्राम, पारा सिन्दरफी २० ग्राम दोनों को मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर बर्तन के मुख को खाम दें और नरम आँच पर पकाएँ। जब तमाम रस समाप्त हो जाएगा तो पारे कीं गोली मिलेगी।

पुत्रदा योग

१. गर्भस्थिति के दो मास पश्चात् एक कागजी नींबू के सब-के-सब बीज दूध में पीसकर दूध के साथ ही पीने से निश्चय से पुत्र ही पैदा होता है।

२. ढाक का एक कोमल पत्ता दूध के साथ प्रातःकाल ९ मास तक पीने से पुत्र ही पैदा होगा, लड़की नहीं। पत्ते को दूध में पीस लें।

३. जब गर्भ ठहरे हुए दो मास पूर्ण हो जाएँ और तीसरा मास आरम्भ हो तब स्त्री को भाँग के उत्तम बीज १ ग्राम प्रातः निराहार ताज़ा पानी से दें, फिर प्रातःकाल के नाश्ते के पश्चात् शिवलिङ्गी के ४ बीज ताज़ा पानी के साथ दें। इस प्रकार दोनों दवाएँ एक मास तक खिलाते रहें। सहस्रों घरों में पुत्ररत्न उत्पन्न हुए हैं। अतीव गुणकारी एवं चमत्कारी योग है।

पेचिश

१. हरड़ का छिलका, आँवला गुठली-रहित, माजूफल, कपूर—प्रत्येक १०-१० ग्राम, केशर ५ ग्राम—सबको अलग-अलग पीस लें, फिर सबको मिलाकर अर्क गुलाब में घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली प्रातः-सायं ताजा पानी के साथ दें। पेचिश के लिए सर्वश्रेष्ठ एवं रामबाण दवा है।

२. अफ़ीम ५ ग्राम, नीलाथोथा ५ ग्राम, कपूर १० ग्राम—तीनों को अच्छी प्रकार घोटकर और कीकर के गोंद के पानी के छींटे देकर मूँग के बराबर गोली बना लें। दिन में दो गोलियाँ पानी के साथ दें। पुरानी पेचिश के लिए अतीव गुणकारी है।

३. सौंफ, छोटी हरड़, सोंठ, मरोड़फली—चारों को समभाग लेकर भली-भाँति कूट-पीसकर छान लें, फिर थोड़ा-सा घी डालकर भून लें। भुनकर ठण्डा हो जाने पर सबके बराबर मिश्री मिला लें। ३-३ ग्राम दवा दिन में ३-४

बार ठण्डे पानी से दें। पेचिश के लिए अद्वितीय योग है। खाने के लिए खिचड़ी दें।

४. सोंठ बढ़िया लेकर इसे काहू के तेल में इतना भूनें कि वह फूल जाए और उसका रंग बादामी हो जाए। फिर इसे बारीक पीस लें। २ ग्राम दवा २५० ग्राम दही की लस्सी के साथ खिलाएँ। हर प्रकार के दस्त, संग्रहणी और पेचिश के लिए रामबाण है।

५. दुद्धी छोटी १० ग्राम, काली मिर्च ५ नग--दोनों को ठण्डाई की भाँति घोटकर प्रातः-सायं पिलाएँ। एक दिन या अधिक-से-अधिक दो दिन में पेचिश नष्ट हो जाएगी।

६. पत्थर के कोयले की आधा ग्राम सफेद कपड़छान राख को १० ग्राम बेल के मुरब्बे के साथ खिलाएँ। पेचिश और आँतों के जख्मों—घावों के लिए अतीव गुणकारी है।

पेट के अनेक रोगों के लिए

अजवायन देशी २५० ग्राम, नमक काला ६० ग्राम--दोनों को किसी शीशे या चीनी के बर्तन में डालकर इतना नींबू का रस डालें कि दोनों वस्तुएँ डूब जाएँ। फिर इस बर्तन को रेत-धूल से दूर किसी छायादार स्थान पर रख दें। जब नींबू का रस सूख जाए तो पुनः इतना रस डाल दें कि दोनों दवाएँ डूब जाएँ। इस प्रकार सात बार करें। बस, दवा तैयार है। २ ग्राम दवा प्रातः और सायं भोजन के पश्चात् गुनगुने पानी के साथ लें। पेट के अनेक रोगों को दूर करने के लिए अद्भुत दवा है। इससे भूख खूब लगती है। खाया हुआ भोजन पच जाता है। अफारा और पेट-दर्द दूर होता है। कै और जी मिचलाने में लाभ होता है।

पेशाब खोलना

१. चूहे की मेंगनी ५० ग्राम कलमीशोरा ५० ग्राम—दोनों को गोमूत्र अथवा गर्म पानी में पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेशाब फौरन खुल जाता है।

२. केवल कलमीशोरे को पीसकर और थोड़ा पानी मिलाकर नाभि के नीचे गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से भी पेशाब तुरन्त खुल जाता है।

३. कास्ट्रायल २० से ३० ग्राम तक गुनगुने पानी में मिलाकर पिला दें,

पेशाब किसी भी कारण से बन्द हो, १५-२० मिनट में खुल जाता है।

प्यास, जलन, कै

१. अनारदाना ६० ग्राम को १ लीटर (१ किलो) पानी में डालकर मिट्टी के घड़े में भिगो दें। २-३ घंटे भीगने दें। अच्छी प्रकार भीग जाने पर इसमें से थोड़ा-थोड़ा छानकर और मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाने से प्यास, जलन, कै=उल्टियाँ दूर हो जाती हैं।

२. मक्खी का मल ३ चावल-भर और सफेद चन्दन का चूरा १ चावल-भर—दोनों को शहद में मिलाकर चटाने से भयंकर-से-भयंकर वमन=कै रुक जाती है।

३. काली हरड़ का चूर्ण १ ग्राम को शहद में मिलाकर चटाने से हर प्रकार की कै रुक जाती है।

४. हरी गिलोय २० ग्राम को जौकुट करके ४०० ग्राम पानी में डालकर पकाएँ। १०० ग्राम पानी रहने पर उतारकर छान लें। ठण्डा होने पर छानकर तथा इसमें २५ ग्राम शहद मिलाकर २५-२५ ग्राम दवा ३-३ घण्टे बाद पिलाएँ। कै आना बन्द हो जाता है।

५. बेलगिरी २० ग्राम को जौकुट करके ४०० ग्राम पानी में डालकर औटाएँ। जब १०० ग्राम पानी रह जाए तब उतार लें और ठण्डा होने पर छानकर तथा २५ ग्राम शहद मिलाकर रोगी को २५-२५ ग्राम दवा ३-३ घण्टे पश्चात् पिलाएँ। उल्टियाँ तुरन्त बन्द हो जाती हैं। अद्भुत दवा है।

६. आम के पत्ते २० ग्राम, जामुन के पत्ते २० ग्राम—दोनों को ४०० ग्राम पानी में औटाएँ। १०० ग्राम पानी रहने पर उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर तथा शहद मिलाकर मरीज़ को पिला दें। इससे हर प्रकार की उल्टियाँ तुरन्त रुक जाती हैं।

७. काला नमक, ज़ीरा काला, काली मिर्च और मिश्री—सब समभाग लेकर और बारीक पीसकर इनसे दुगुना शहद मिलाएँ। इस चटनी को मरीज को थोड़ा-थोड़ा दिन में कई बार चटाएँ [illegible] रोकने के लिए उत्तम औषधि है।

८. इमली का छिलका-रहित बीज १ ग्राम को मुँह में रखकर चूसने से हर प्रकार की उल्टियाँ बन्द हो जाती हैं।

९. राई २० ग्राम, मुश्क काफूर ६ ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर और थोड़ा-सा पानी मिलाकर मेऽदे [आमाशय] पर लगाएँ। इससे उल्टियाँ तुरन्त बन्द हो जाती हैं।

१०. कुटकी के ३ ग्राम चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाने से भी उल्टियाँ तुरन्त बन्द हो जाती हैं।

प्रमेह

१. तालमखाने को कूटकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण ३ ग्राम, खाँड ३ ग्राम दोनों को मिलाकर पानी के साथ दें। इस प्रकार ६-६ ग्राम दवा दिन में तीन बार दें। दवा पानी से ही दें। मिर्च, खट्टे और गर्म पदार्थों से परहेज़ करें। अत्यन्त प्रभावकारी दवा है।

नोट-यह दवा नींद भी लाती है। इसके प्रयोग से नींद भी अच्छी तरह आने लगती है।

२. धनियाँ की मींगी १०० ग्राम, मिश्री १०० ग्राम—दोनों वस्तुओं को अलग-अलग कूटकर मिला लें। बस, दवा तैयार है। ६ ग्राम दवा प्रातः बासी पानी के साथ लें और इस दवा को लेने के पश्चात् १ घण्टा तक कुछ न खाएँ। दूसरी मात्रा शाम को ४ बजे प्रातःकाल के पानी के साथ लें, अथवा रात्रि में सोने से आधा घण्टा पूर्व ले लें। पेट को साफ रक्खें दस्त साफ न हो तो ईसबगोल की भूसी ६ ग्राम ताज़ा पानी के साथ फँकाएँ।

मूत्रेन्द्रिय की उत्तेजना को दूर करने के लिए अद्भुत और अद्वितीय ओषधि है। नज़र की कमजोरी, धुँधलापन, सिर दर्द, चक्कर आना, नींद न आना आदि रोग जो प्रमेह और स्वप्नदोष के कारण पैदा हुए हों, इस ओषधि के सेवन से बहुत शीघ्र दूर होते हैं। स्वप्नदोष को पहले ही दिन में लाभ पहुँचता है।

३. महुआ के वृक्ष की छाल ६ ग्राम, काली मिर्च ४ ग्राम—दोनों को ठंडाई की भाँति घोट-पीस, छानकर कुछ दिन पिलाने के प्रत्येक प्रकार का कठिन-से-कठिन और असाध्य प्रमेह भी दूर हो जाता है।

४. त्रिफला चूर्ण ३ ग्राम को १२ ग्राम शहद में मिलाकर प्रतिदिन रोगी को चटाएँ और ऊपर से गाय का दूध पिलाएँ। यह भी प्रमेह रोग की उत्तम दवा है।

५. बबूल (कीकर) की नरम-नरम फलियाँ. जिनमें अभी बीज न पड़ा हो

छाया में सुखाकर खूब बारीक पीस लें। फिर इसके बराबर मिश्री मिला लें। ६ से १० ग्राम तक दवा गाय के दूध के साथ प्रयोग कराने से प्रत्येक प्रकार का प्रमेह दूर हो जाता है।

६. सिरस के बीज, ढाक के बीज और मिश्री—तीनों को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन ६ ग्राम दवा गोदुग्ध के साथ खिलाएँ। यह प्रमेह की अद्वितीय एवं चमत्कारी दवा है।

७. शतावर, असगन्ध नागोरी और बिधारा—तीनों वस्तुओं को समभाग लेकर कूट-पीस लें। फिर इन सबके बराबर खाँड मिला लें। बस, दवा तैयार है। ६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः-सायं ताज़ा पानी या गर्म दूध के साथ खिलाएँ। प्रमेह और स्वप्नदोष के लिए अमोघ ओषधि है। शरीर में शक्ति प्रदान करती है, स्वर में माधुर्य लाती है, जोड़ों के दर्द को भी दूर करती है।

८. गूलर के पके फलों का चूर्ण १० ग्राम ताज़ा जल के साथ एक मास तक सेवन करें। जौ की रोटी खाएँ। प्रमेह, मधुमेह और मूत्र-सम्बन्धी सभी विकार नष्ट होते हैं।

९. बंगभस्म आधा ग्राम, सत्त्वगिलोय दो ग्राम—दोनों को मधु में मिलाकर चटाने से प्रमेह नष्ट होता है।

१०. हरी गिलोय का रस १० ग्राम, मधु ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करें। ६ मास तक निरन्तर सेवन करने से चेहरा दमकने लगता है। रोग दूर हो जाते हैं। प्रमेह निश्चय ही ठीक हो जाता है। शरीर में नवस्फूर्ति और नवयौवन आ जाता है। यदि इसमें ३ ग्राम हल्दी और मिला लें तो सोने पर सुहागा है।

११. बड़ की कोंपल २५ ग्राम को २५० ग्राम पानी में पकाएँ। जब चौथाई पानी रह जाए तब इसे छानकर आधा किलो गाय के दूध में मिलाकर पकाएँ। ५-७ उबाल आने पर उतार लें। फिर ईसबगोल की भूसी ६ ग्राम और चीनी मिलाकार पिला दें। केवल ७ दिन प्रयोग करें। यह संन्यासियों की गुप्त एवं अनुभूत ओषधि है। यह वीर्य को गाढ़ा करके स्वप्नदोष और सभी वीर्य-विकारों को दूर करती है। केवल ७ दिन ही लें। आवश्यक समझें तो अगले मास में पुनः सात दिन ले सकते हैं। यह अत्यन्त पौष्टिक ओषधि है, अतः कब्ज न होने दें।

प्रसव-वेदना

१. लाल घूँघची (चिरमठी) ३ नग लेकर बारीक पीस लें, फिर थोड़ा-सा

पुराना गुड़ मिलाकर दोनों को खूब घोटें और तीन गोलियाँ बना लें। इन तीनों गोलियों को एक साथ गुनगुने पानी से खिला दें। यदि स्त्री दर्द से परेशान हो रही हो और बच्चा पैदा न हो रहा हो तो इस दवा से १० मिनट में बच्चा बाहर आ जाएगा।

२. चुम्बक पत्थर को रेशमी कपड़े में बाँधकर स्त्री के बाएँ हाथ में पकड़ा देने से कुछ ही देर में बच्चा सरलता से पैदा हो जाता है। परीक्षित है।

प्रसूता ज्वर

यद्रि प्रसूता को ज्वर हो जाए तो निम्न चुटकुला काम में लाइए—

कायफल बारीक पीसकर कपड़छन कर लें, बस दवा तैयार है। तीव्र ज्वर में ३ ग्राम दवा खाँड के शरबत के साथ रोगिणी को पिला दें। पहली मात्रा ही जादू का काम करेगी। दवा देते ही प्यास हटने लगती है, बुखार कम हो जाता है सन्निपात की अवस्था को पहुँची हुई रुग्णा भी स्वस्थ हो जाती है।

नोट—दो तीन मात्रा से अधिक नहीं देनी चाहिएँ।

प्लेग

प्लेग की गिल्टी चाहे कितनी ही भयंकर क्यों न हो, उसपर असगन्ध की जड़ को पानी में घिसकर लगा दें। गिल्टी फूटकर आराम आ जाएगा।

प्रोस्टेट ग्लैण्ड

सीपी को जलाकर भस्म बना लें। प्रातः-सायं ३-३ ग्राम दवा गोदुग्ध के साथ खिलाएँ। बढ़े हुए प्रोस्टेट ग्लैण्ड को ठीक करने के लिए रामबाण दवा है। सोजाक के लिए भी अद्वितीय योग है।

फील-पा = हाथीपाँव

इस रोग का इलाज होना कठिन है। एक वर्ष से अधिक का फ़ीलपा असाध्य होता है, उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिए। यदि रोग नया है तो जुलाब देकर और लंघन कराकर निम्न दवाओं का प्रयोग करना चाहिए—

१. थूहर (सैंहुड़) के डण्डे के २० ग्राम रस में थोड़ा-सा नमक डालकर मरीज को पिलाएँ, उत्तम दवा है।

२. सात अदद नागर पान ठण्डाई की भाँति घोट-छानकर कुछ दिन पिलाने से फ़ीलपाँव का रोग दूर हो जाता है।

३. प्रतिदिन ५० ग्राम सरसों का तेल पिलाने से फ़ीलपाँव ठीक हो जाता है।

४. छोटी हरड़ उत्तम लेकर और उन्हें अरण्ड के तेल में भूनकर उनका चूर्ण बना लें। प्रतिदिन ६ ग्राम दवा १०० ग्राम गोमूत्र के साथ देने से फ़ीलपा निश्चय ही ठीक हो जाता है।

फुलबहरी, सफेद कोढ़, सफेद दाग़

१. १२५ ग्राम बाबची के बीज लेकर किसी शीशे या चीनी के बर्तन में इतना गोमूत्र डालें कि बाबची अच्छी प्रकार डूब जाए। इसे १२ दिन तक गोमूत्र में पड़ा रहने दें, परन्तु गोमूत्र प्रतिदिन बदलते रहें। तेरहवें दिन बाबची को खूब रगड़कर उसका छिलका हटा दें और पानी में धोकर छाया में सुखा लें। सूखने पर बारीक पीस लें। फिर इसके बराबर शुद्ध आँवलासार गन्धक भी मिला दें। बस, दवा तैयार है। ६ ग्राम दवा १२ ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ और ऊपर से गंगाजल पिला दें। यह कोढ़ की अचूक दवा है। संन्यासी का बताया हुआ योग है।

नोट– इस दवा के सेवन से शीतपित्ती भी नष्ट हो जाती है।

२. ५० ग्राम भिलावे लेकर उसकी ऊपर की टोपी को सावधानी से उतार दें, फिर सहजने के वृक्ष के तने में एक गड्ढा करके इन भिलावों को उस गड्ढे में भर दें। सहजने में गड्ढा बनाते समय जो बुरादा निकला था, उसे भी गड्ढे में भर दें। ऊपर से चिकनी मिट्टी का लेप कर दें। ४० दिन के पश्चात् निकाल लें। इसमें बाबची शुद्ध (उपर्युक्त विधि से गोमूत्र में शुद्ध की हुई) १ किलो मिलाकर कूट-पीस कपड़छन कर लें। बस, दवा तैयार है।

पहले जुलाब देकर पेट साफ कर लें। भोजन में केवल दूध और चावल ही दें। पहले दिन १ ग्राम दवा दूध के साथ दें, दूसरे दिन २ ग्राम, तीसरे दिन ३ ग्राम और चौथे दिन ४ ग्राम दें। अब देखें कि रोगी पर इस दवा का कोई दुष्प्रभाव तो नहीं हुआ है? यदि कोई दुष्प्रभाव नहीं हुआ है तो प्रतिदिन ४ ग्राम दवा खिलाते रहें। प्रायः ४० दिन में लाभ हो जाता है। किसी-किसी को अधिक समय भी लग सकता है। दवा के सेवनकाल में भोजन के रूप में केवल दूध और चावल ही दें, अन्य कोई वस्तु खाने को न दें।

फूला

हाथी के नाखन का एक टुकड़ा लेकर उसे सिरस के पत्तों के रस में एक

सप्ताह तक भिगोकर रक्खें। ध्यान रहे कि नाखुन रस में डूबा रहे यदि गर्मी अथवा वर्षा ऋतु हो तो रस को प्रतिदिन बदल दें। ७ दिन के पश्चात् नाखुन को निकालकर एक दिन पानी में भिगो दें। फिर इसे निकालकर साफ करके सुरक्षित रखें। इस नाखुन को साफ पत्थर पर घिसकर जिस आँख में फूला हो उसमें लगाएँ। फूला किसी भी प्रकार का और कितना ही बड़ा हो, कैसा ही सख्त हो, इसके निरन्तर प्रयोग के कट जाता है। फूले के लिए सर्वश्रेष्ठ और चमत्कारी ओषधि है।

फोड़े-फुंसी

१. ५० ग्राम नीम के पत्तों को पीसकर इनकी एक टिकिया-सी बना लें, इसे पुलटिस के समान बालतोड़ अथवा फोड़े-फुंसियों पर लगाने से वे शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

२. कचूर बारीक पीस लें और २ ग्राम दवा पानी में मिलाकर पिला दें। दूसरे-तीसरे दिन दवा देते रहें। फोड़े-फुंसियों से छुटकारा मिल जाएगा। बच्चों को आधी मात्रा दें।

३. छप्पर का धुआँ (यह भड़भूजों अथवा गाँव में गरीब लोगों की झोंपड़ियों में लटका रहता है) ५० ग्राम, काली मिर्च ५० ग्राम, सरसों का तेल १०० ग्राम। काली मिर्चों को कूट लें। तेल को कड़ाही में डालकर खूब गर्म करें और कुटी हुई काली मिर्चों को इसमें डालते जाएँ। जब मिर्चें जल जाएँ तब कड़ाही को उतार लें और लोहे के हमाम दस्ते में खूब घोटें, फिर धुएँ को भी डाल दें और पुनः घुटाई करें। इतना घोटें कि मरहम-सी बन जाए। घावों को धोकर इस मरहम को लगाएँ और पट्टी बाँध दें। फोड़े-फुंसी और घावों के लिए अत्युत्तम है।

नोट—यह दवा पुराने-से-पुराने दाद के लिए भी अतीव गुणकारी और चमत्कारी है।

४. जितना अधिक-से-अधिक पुराना और गला-सड़ा जूते का चमड़ा मिले उसे लेकर और उपलों में जलाकर उसकी राख बना लें। यह राख १० ग्राम और कार्बोलिक आयल २० ग्राम—दोनों को खरल में डालकर खूब घोटें और किसी शीशी में सुरक्षित रख लें। इसे दिन में ३-४ बार घावों और फोड़े-फुंसियों पर लगाएँ। इसके लगाने से सारा मवाद और पीप आदि समाप्त हो जाते हैं। सभी प्रकार के घाव और फोड़े-फुंसी ठीक हो जाती हैं।

५. जब फोड़ा निकल रहा हो तब पीपल का एक पत्ता गर्म करके सीधी ओर से फोड़े पर बाँध दें, फोड़ा वहीं-का-वहीं बैठ जाएगा। सस्ती और चमत्कारी दवा है।

६. हंसराज बूटी के पत्तों को पीसकर और शुद्ध घी में पकाकर सुहाता-सुहाता फोड़े पर बाँध दें, फिर इस दवा का चमत्कार देखें। जो खतरनाक फोड़ा कैप्सूल और इन्जैक्शन से भी ठीक नहीं हो रहा हो, इस दवा के लगाने से पहले ही दिन से ठीक होने लगेगा। दर्द पहले ही दिन कम हो जाएगा। दर्द से तड़फड़ाता हुआ मरीज भी सुख के साथ सो जाएगा। एक सप्ताह में ही फोड़ा सूख जाएगा।

अंगुली का विषैला फोड़ा भी (जिसमें अंगुली काट दी जाती है) इस पुलटिस के लगाने से कुछ ही दिन में ठीक हो जाता है।

मधुमेहवालों के घाव भी इससे ठीक हो जाते हैं।

७. मीठा तेल २५० ग्राम, सिन्दूर बढ़िया १२५ ग्राम, नीलाथोथा ३ ग्राम। एक लोहे की कड़ाही में तेल डालकर उसे आग पर गर्म करें। गर्म होने पर इनमें नीलाथोथा बारीक पीसकर डाल दें। इससे झाग उठेगा जब झाग बन्द हो जाए तब सिन्दूर डालकर लोहे या लकड़ी से हिलाते रहें। जब सिन्दूर का रंग काला हो जाए और तेल तार छोड़ने लगे तब आग से उतार लें। ठण्डा होने पर डिब्बे में भर लें।

किसी कपड़े के टुकड़े में थोड़ा-सा मरहम लगाकर और तनिक-सा गर्म करके फोड़े पर चिपका दें। साधारण फोड़ा तो एक ही फाहे में ठीक हो जाता है। यदि गन्दा मवाद अधिक होगा तो २-३ फाहे लगाने पड़ेंगे।

८. पत्थर के कोयले की एकदम सफेद राख को मक्खन में मिलाकर लगाएँ। हर प्रकार के घाव और फोड़े-फुंसियों के लिए लाभदायक है।

९. गेरू १०० ग्राम, नीला थोथा बढ़िया ६ ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर रख लें। ६ ग्राम दवा २५ ग्राम सरसों के तले में मिलाकर लगाएँ। फोड़ा-फुंसी और गंज के लिए अतीव गुणकारी है।

पुराने घावों के लिए ६ ग्राम दवा को २५० ग्राम धुले हुए शुद्ध घी में मिलाकर लगाएँ। अत्यन्त लाभदायक है।

१०. कनेर की जड़ की छाल को पानी में पीसकर पके फोड़े पर लेप करने से फोड़ा ३-४ घण्टे में ही फूट जाता है।

११. चाहे कैसा ही फोड़ा हो, यदि वह न तो पकता हो और न फूटता हो तो

ऐसे व्यक्ति को सहजने की सब्जी (भाजी, साग) खाने को दें और सहजने के पत्तों का रस और जड़ की छाल की लुगदी बनकार फोड़े पर बाँध दें, इससे फोड़ा बैठ जाएगा।

१२. कटहल की लकड़ी को घिसकर उसमें कबूतर की बीठ मिला लें। २-३ रत्ती चूना भी मिला लें। रात्रि में फोड़े पर इसका लेप कर दें, प्रातःकाल तक फोड़ा फूट जाएगा।

१३. निर्विशी जड़ी का कन्द कुचलकर लगाने से २-३ घण्टे में फोड़ा पककर बह जाता है।

फ्लू

१. शहद शुद्ध २० ग्राम, नमक सेंधा आधा ग्राम, हल्दी आधा ग्राम, खौलता हुआ पानी ८० ग्राम—तीनों वस्तुओं को उबलते हुए पानी में डालकर रात्रि में सोते समय सुहाता-सुहाता पिला दें। प्रातःकाल तक बुखार और जुकाम गायब हो चुका होगा।

२. तुलसी के पत्ते ६ ग्राम, गूमा बूटी १२ ग्राम, काली मिर्च ५ दाने, चीनी ६ ग्राम। मिर्चों को तनिक-सा कूट लें, फिर सबको १२० ग्राम पानी में उबालें। कुछ ठण्डा होने पर मसलकर छान लें और प्रातः- सायं रोगी को पिलाएँ फ्लू इन्फ्लूएन्जा और मलेरिया के लिए रामबाण है।

बदहज़्मी

सोडा बाई कार्ब (खाने का सोडा), सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी और नौशादर समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। डेढ़ ग्राम दवा दिन में तीन बार पानी से खिलाएँ। बदहज़्मी को दूर करने के लिए उत्तम दवा है।

बर्थकण्ट्रोल

थूहर के डण्डे को छाया में सुखा लें, फिर इसको जलाकर राख कर लें। इस राख को छानकर और समभाग मिश्री मिलाकर खूब खरल करें। ऋतु-स्नान के पश्चात् (मासिकधर्म शुरू होने के ५ दिन पश्चात्) प्रातः निराहार २ ग्राम दवा ७ दिन तक पानी के साथ खिलाएँ। इसके प्रयोग से नारी जीवनभर के लिए बच्चा उत्पन्न करने के अयोग्य हो जाती है।

बबासीर—खूनी, बादी

१. इन्द्रजौ (कड़वे) पानी के साथ पीसकर झड़बेर के बराबर गोलियाँ

बना लें। बवासीर के रोगी को रात्रि के समय दो गोलियाँ ठण्डे पानी के साथ खिलाएँ। बवासीर खूनी हो या बादी समाप्त हो जाती है।

२. कंघी बूटी (खरेंटी) के ७-८ हरे पत्ते और काली मिर्च ७-८ को २५० ग्राम पानी के साथ ठण्डाई की भाँति बारीक घोट-पीसकर प्रातःकाल पिला दें। यदि कष्ट बहुत अधिक हो तो रात्रि में भी पिला दें। २-३ दिन के ही सेवन से खून आना बन्द हो जाता है। अत्यन्त निराश रोगी भी इस दवा से स्वस्थ होते देखे गये हैं। यह एक संन्यासी का टोटका है। हाँ, दवा कम-से-कम सात दिन अवश्य सेवन कराएँ।

३. नीम की निम्बोली की मींगी ५० ग्राम को बारीक पीसकर और इसमें २० ग्राम गुड़ मिलाकर २-२ ग्राम की गोलियाँ बनाएँ। प्रतिदिन प्रातः-सायं २-२ गोलियाँ ताजा पानी के साथ खिलाने से प्रत्येक प्रकार की बवासीर में लाभ होता है।

४. बड़ी हरड़ का छिलका और छोटी हरड़—दोनों ५०-५० ग्राम लेकर घी में अधभुनी करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में सौ ग्राम खाँड भी मिला लें। प्रतिदिन १० ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ प्रयोग कराएँ। कब्ज़ और बवासीर का नाम भी नहीं रहेगा।

५. कत्था सफेद, रीठे का छिलका जलाया हुआ—दोनों १०-१० ग्राम लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। २ ग्रेन (एक रत्ती) दवा प्रतिदिन प्रातः मक्खन या मलाई के साथ खिलाएँ। फिर एक सप्ताह दवा न दें। पुनः एक सप्ताह खिलाएँ। इस प्रकार ३-४ मास तक दवा खिलाते रहें। बवासीर के लिए अद्भुत है।

६. हुलहुल के बीज ५० ग्राम लेकर उनका चूर्ण बना लें। इसमें १०० ग्राम उत्तम खाँड मिला लें। बस, दवा तैयार है। ३ ग्राम दवा प्रातः और ३ ग्राम सायं पानी के साथ सेवन कराएँ। खूनी और बादी बवासीर के लिए लाभदायक दवा है।

७. एक बड़ा और पका हुआ तरबूज लेकर इसमें एक इञ्च की टाँकी लगाएँ (एक इञ्ज लम्बा-चौड़ा एक टुकड़ा काट लें), फिर इसमें खाँड १०० ग्राम एवं मजीठ १०० ग्राम—बारीक पीसकर डाल दें और ऊपर उसी काटे हुए टुकड़े को फिट करके तथा तरबूज पर कपड़ा लपेटकर एवं काटे हुए हिस्से को ऊपर की ओर रखकर भूसे या गेहूँ के ढेर में १५ दिन के लिए दबा दें। १५ दिन

पश्चात् तरबूज़ को निकालकर इसके पानी को निकाल और छानकर बोतल में भर लें। प्रातः-सायं यह अर्क पिलाएँ। सारे अर्क को ७ दिन में समाप्त कर दें।

प्याज, बेंगन, लाल मिर्च, गुड़ और मैथुन (स्त्री-सम्भोग) वर्जित हैं। दूध-घी और मूँग की दाल से गेहूँ का फुल्का खाने को दें।

८. रसौत १० ग्राम, कलमीशोरा १० ग्राम—दोनों को बारीक घोट-पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं १-१ गोली ताज़ा पानी के साथ दें। हर प्रकार की बवासीर के लिए अनुभूत है।

९. हल्दी बारीक पिसी हुई ४ ग्राम को बकरी के दूध की लस्सी अथवा पानी के साथ प्रातः-सायं खिलाने से खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

१०. रीठे का छिलका १५० ग्राम, शक्कर १५० ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। यदि मर्ज पुराना हो तो प्रातः—सायं दोनों समय, अन्यथा केवल प्रातःकाल १० ग्राम दवा ताज़ा तानी के साथ दें। प्रतिदिन २-३ दस्त आकर बवासीर बहुत शीघ्र दूर हो जाएगी। फकीरी टोटका है।

११. आम के वृक्षों के बीच में यदि कहीं नीम का वृक्ष मिल जाए तो उसकी दो अंगुल लकड़ी तोड़कर रोगी की कमर में बाँध दें। बवासीर को तुरन्त लाभ होगा और कुछ दिन में जड़ से समाप्त हो जाएगी। चमत्कारी दवा है।

१२. खजूर के पेड़ के पत्ते जलाकर राख बना लें। यह राख दो-दो ग्राम दिन में ३-४ बार ताज़ा पानी से दें। शाम तकखून बन्द हो जाएगा, चाहे खून का फव्वारा ही क्यों न चल रहा हो।

१३. रसौत १ ग्राम को ५० ग्राम मक्खन में मिलाकर खिलाएँ, लाभ होगा।

१४. खूनी बवासीर यदि आरम्भ हुई हो तो प्रतिदिन ३ पके हुए गूलर खिलाएँ। ४-५ दिन में ही लाभ हो जाएगा और रोग से सदा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

१५. गेंदे के फूल १० ग्राम, काली मिर्च ७ दाने—दोनों को ठण्डाई की भाँति घोट-पीस और छानकर पिला दें, खूनी बवासीर के लिए रामबाण है।

१६. कत्था सफेद, रीठे का छिलका जलाया हुआ—दोनों को समभाग लेकर बारीक पीसकर रख लें। तीन ग्राम चूर्ण को २० ग्राम मक्खन या मलाई में मिलाकर प्रातः निराहार और सांयकाल खिलाएँ। बवासीर की अनुपम चिकित्सा है, रक्त तुरन्त बन्द हो जाएगा।

१७. बरगद के नरम पत्ते २५ ग्राम को २५० ग्राम पानी में ठण्डाई की भाँति पीस-छानकर पिलाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है। एक सप्ताह तक प्रयोग करें।

१८. बकायन के बीज और रसौत २०-२० ग्राम, खाँड ४० ग्राम—तीनों को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी से दें। खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर के लिए अद्‌भुत दवा है।

१९ गूगल शुद्ध और हरड़ (पीलीवाली) दोनों समभाग लें, पहले हरड़ को बारीक कूट लें, फिर गूगल के साथ कूटकर एकजान कर लें और जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। २-२ गोली प्रातः-सायं पानी के साथ निगलवा दें। बवासीर जाती रहेगी। २१ दिन प्रयोग करें।

२०. रसौत १० ग्राम, मूली का रस ५० ग्राम—दोनों को मिलाकर इतना घोटें कि मूली का पानी सूख जाए। फिर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली प्रातः और एक गोली सायं शर्बत अञ्जबार के साथ खिलाएँ। केवल तीन दिन के सेवन से बवासीर का खून बन्द हो जाएगा।

बवासीर के मस्से

१. हल्दी के चूर्ण में थूहर (सेंहुड़) का दूध डालकर दो ग्रेन (एक रत्ती) बवासीर के मस्सों पर लेप करने से मस्से दूर हो जाते हैं।

२. केवल थूहर का दूध भी कुछ दिन लगाने से मस्से दूर हो जाते हैं।

३. भाँग के हरे पत्ते १० ग्राम, अफीम १ ग्राम—दोनों को खूब घोट-पीसकर टिकिया बना लें और तवे पर थोड़ा-सा गर्म करके मस्सों पर बाँधें। इससे मस्सों को बहुत शीघ्र आराम आ जाता है।

४. आक के पत्ते अत्यन्त बारीक पीसकर मस्सों पर लगाने से बादी बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं।

५. मैंसिल, रीठे का छिलका, हल्दी, हीराकसीस—चारों समभाग लेकर अत्यन्त बारीक पीसें। फिर इसमें ककरौंदे का रस डाल-डालकर ३-४ दिन निरन्तर खरल करें और जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। आवश्यकता पड़ने पर बासी पानी में घिसकर मस्सों पर लेप करें। कुछ दिन में ही मस्से नष्ट हो जाएँगे। बवासीर के मस्सों को नष्ट करनेवाला अद्वितीय नुस्खा है।

६. फिटकरी १० ग्राम अत्यन्त बारीक पीसकर २० ग्राम मक्खन में मिला लें। इस मरहम को मस्सों पर लगाएँ। बवासीर के मस्से सूखकर गिर जाएँगे।

७. कुचला और अफीम को पानी में घिसकर मस्सों पर लगाएँ। अथवा, केवल कुचले को अग्नि पर जलाकर मस्सों को धूनी दें। मस्से समाप्त हो जाएंगे। सहस्रों बार का अनुभूत है।

८. दो-तीन बिच्छुओं को पकड़कर स्पिरिट में डाल दें। १५-२० दिन पड़े रहने दें, फिर छानकर दूसरी बोतल में भर लें। बवासीर के मस्सों की अद्वितीय दवा है। बिच्छू काटे के लिए भी रामबाण है। फुरेरी से मस्सों अथवा विच्छू-काटे स्थान पर लगाएँ।

९.सत नींबू (सायट्रिक एसिड) लेकर मस्सों पर खूब रगड़ें। मस्सों से सफेद रंग का पानी निकलेगा। जब पानी सूख जाए तब घी से चुपड़ते रहें। तीसरे दिन खुरण्ड उतरेगा और बाद में मस्से सूख जाएँगे।

बहरापन

१. कान-दर्द हो, कान में पीप हो, कम सुनाई देता हो तो गेंदे के पत्तों का रस निकालकर २-३ बूँद कानों में डालें। दर्द को तुरन्त आराम! बहरेपन का सर्वश्रेष्ठ उपचार है।

२. शुद्ध नये बादाम रोगन ५० ग्राम में तारपीन के १० ग्राम तेल को १०-१५ मिनट तक खूब हिलाएँ। बस, दवा तैयार है। रात्रि में इस तेल में रुई का फाहा तर करके कानों में रख दें। प्रातः इस फाहे को निकाल दें। निरन्तर ४० दिन तक प्रयोग करें। यदि कान के पर्दे फट न गये हों तो कई वर्ष का बहरापन भी दूर हो जाएगा।

३. तेल सरसों शुद्ध १०० ग्राम को कड़ाही में डालकर इसमें दो करेलों की लम्बी-लम्बी फाँकें करके डाल दें और अग्नि पर चढ़ा दें। जब करेले जल जाएँ तो कड़ाही को उतार लें। ठण्डा होने पर करेलों को निकालकर फेंक दें और तेल को शीशी में डालकर सुरक्षित रखें। प्रतिदिन २-३ बूँद मामूली-सा गर्म करके कानों में डालें। यदि नज़ले अथवा सर्दी-गर्मी के कारण सुनने की शक्ति कम हो गई है, तो कम सुनने की सारी शिकायतें दूर हो जाएँगी।

बहुमूत्र-नाशक

आँवले का स्वरस ६ ग्राम, शहद ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर पीने से

बहुमूत्र का रोग दूर होता है। यदि इसमें हल्दी का चूर्ण ६ ग्राम और मिला लिया जाए तो २१ दिन में सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं।

बालकल्याण

जहर मोहरा असली, कपूरकचरी असली—दोनों समभाग लेकर बारीक चूर्ण बना लें। २ ग्रेन से ४ ग्रेन (१ रत्ती से २ रत्ती) तक शहद में मिलाकर दिन में ३-४ बार दें। इसका सेवन कराने से बच्चों की बदहज़्मी, कै, दस्त, बुखार, कब्ज, नज़ला और जुकाम दूर होते हैं। दाँत निकलने के समय होनेवाले समस्त रोगों में गुणकारी है। बच्चों को हृष्ट-पुष्ट बनाता है।

बालरोग

काली खाँसी—काली बकरी का दूध बल और आयु के अनुसार १०० ग्राम से २५० ग्राम तक दो सप्ताह तक पिलाएँ, काली खाँसी का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

खाँसी—१. नागरमोथा, काकड़ासींगी, अतीस—तीनों समभाग लेकर बारीक पीस लें और इसमें चौगुना शहद मिला दें। इसे थोड़ा-थोड़ा बच्चों को चटाने से बच्चों के दस्त, बुखार, खाँसी आदि दूर होते हैं।

२. छोटी पीपल का बारीक चूर्ण १ ग्राम शहद में मिलाकर दिन में ३-४ बार चटाने से बालकों की खांसी, ज्वर, तिल्ली, अफारा और हिचकी दूर होती है।

३. सुहागा फूला हुआ १० ग्राम, शहद १० ग्राम—दोनों को खरल में घोटकर शीशी में भर लें। दिन में २-३ बार आधा-आधा ग्राम दवा चटाएँ। बच्चों की खाँसी के लिए अत्यन्त लाभदायक है। बच्चे आसानी से चाट लेते हैं।

४. सुहागा सफेद १० ग्राम, मुलहठी २० ग्राम—दोनों को एक लीटर (१ किलो) पानी में पकाएँ। आधा किलो पानी रहने पर छान लें और आधा किलो खाँड डालकर चाशनी बना लें। बस, दवा तैयार है। ५ से २० बूँद तक अवस्था के अनुसार दिन में ३-४ बार पानी के साथ दें। बच्चों की खाँसी के लिए अद्भुत दवा है।

५. नौशादर २ ग्रेन, पीपल छोटी २ ग्रेन (१ रत्ती)—दोनों को अत्यन्त बारीक पीसकर और तुलसी के १ ग्राम रस में मिलाकर दिन में २-३ बार देने से बच्चों की सर्दी से होनेवाली खाँसी दूर हो जाती है।

तिल्ली—छोटी पीपल १ ग्राम को अर्क सौंफ में घिसकर अथवा दूध में उबालकर पिलाने से बच्चों की तिल्ली ठीक हो जाती है।

दाँत सरलता से निकलना—१. सिरस के बीजों में सुई से छेद करके १५-२० बीजों की माला बना लें और बच्चे के गले में पहना दें। इससे छोटे बच्चों के दाँत सरलता से निकल आते हैं।

२. छोटी-छोटी सीपियों की माला बनाकर बच्चे के गले में पहनाने से भी बच्चों के दाँत सरलता से निकल आते हैं।

पेट के कीड़े—१. एरण्ड के पत्तों का रस निकालकर बच्चे की गुदा में पिचकारी के द्वारा चढाएँ अथवा रुई का फाहा तर करके गुदा में रख दें। हर प्रकार के कृमि, चुनूने आदि दूर होते हैं।

२. कमेला तीन ग्राम को ४० ग्राम पानी में औटाएँ। जब पानी १० ग्राम रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर बच्चे को पिला दें। प्रत्येक प्रकार के उदर-कृमि नष्ट हो जाएँगे। ७ दिन से अधिक दवा न दें।

३. ढाक (पलाश, टेसू) के बीज का चूर्ण १ ग्राम—दिन में तीन बार गुड़ के साथ देने से बच्चों के पेट के गिंडोए मर जाते हैं।

फोड़े-फुंसी—कचूर को बारीक पीस लें। १ ग्राम दवा पानी में घोलकर बच्चे को पिला दें। दूसरे-तीसरे दिन देते रहें। फोड़े-फुंसियों से छुटकारा मिल जाएगा।

शय्या-मूत्र-१. काले तिल ५० ग्राम, अजवायन २५ ग्राम, गुड़ पुराना १०० ग्राम—तिल और अजवायन को बारीक कूटकर गुड़ में मिला दें। ६-६ ग्राम दवा दिन में २ बार दूध के साथ ४० दिन तक दें।

मूली, गन्ना, गाजर, शलजम और शरबत आदि न दें।

२. आँवला सूखा (गुठली-रहित) ५० ग्राम, काली जीरी ५० ग्राम—दोनों को कूट-पीस लें। फिर ३०० ग्राम शहद में मिला लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं चटाएँ। शय्या-मूत्र में लाभकारी है।

३. राई का चूर्ण आधा ग्राम से १ ग्राम की मात्रा में दिन में २-३ बार पानी के साथ फँकाएँ। शय्या-मूत्र का रोग दूर हो जाता है।

बालों की सफेदी

१. समुद्रफल को पानी में पीसकर बालों पर लेप करने से तीन मास में

बाल काले हो जाते हैं।

२. इन्द्रायण के बीजों का तेल सफेद बालों में लगाने से बाल काले हो जाते हैं। कई मास तक प्रयोग करें।

३. हरड़, बहेड़ा, आँवला, नीम के पत्ते, लोह-चून, भृङ्गराज—सभी वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर और काली गाय के मूत्र में पीसकर निरन्तर कुछ समय तक सिर में लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

४. शरद् ऋतु में जब हरे आँवले आ रहे हों, १५ आँवले लेकर उनकी गुठली अलग कर दें, फिर उन्हें सिलबट्टे से अथवा कूँडी में पीस लें। इस पिट्ठी की सिर पर और विशेष रूप से बालों की जड़ों में मालिश करें। २-३ घण्टे तक इस लेप को सिर में लगा रहने दें। जब सूख जाए तब सिर को धो डालें। साबुन का प्रयोग न करें। इस प्रयोग को निरन्तर ३-४ मास तक करें।

खाने के लिए उत्तम लोह-भस्म २ ग्रेन (एक रत्ती), त्रिफला ६ ग्राम—दोनों को शहद मे मिलाकर चाटें।

५. सूखे हुए आँवलों को बारीक पीस लें, फिर नींबू का रस डालकर पीसें। इसे सिर में लगा दें। जब सूख जाए तो सिर को पानी से धो लें। सिर को दही से बिल्कुल न धोएँ। नारियल का तेल सिर में लगाएँ। बाल काले, मुलायम और चमकदार हो जाते हैं।

६. शिकाकाई और आँवला २५-२५ ग्राम लेकर रात्रि में भिगो दें। प्रातः आँवले और शिकाकाई की गुठलियों को निकालकर गूदे को पीस लें। फिर पानी मिलाकर इससे सिर धोएँ। तत्पश्चात् नारियल का तेल लगा दें, सफेद बाल काले हो जाते हैं।

७. ताज़ा अखरोट का छिलका १ किलो, दूध साढ़े सात किलो। अखरोट के छिलके को दूध में डालकर ५-७ घण्टे मन्दी-मन्दी आग पर पकाएँ। फिर आग से उतारकर कुछ ठण्डा होने पर छान लें और जामन लगा दें। प्रातः इस दही में से मक्खन निकालकर बोतल में भर लें और प्रतिदिन बालों पर लगाएँ। बिना समय के पके हुए सफेद बाल काले हो जाते हैं।

नोट—अखरोट की गिरी का छिलका लेना है, अखरोट के पेड़ की छाल नहीं।

८. मालकांगनी के बीज २५० ग्राम, इन्द्रायण के बीज २५० ग्राम—दोनों को कूटकर २ किलो पानी में डालकर आग पर चढ़ाएँ। जब एक किलो पानी रह

जाए तब आधा किलो तिल का तेल डालकर फिर अग्नि देते रहें। जब केवल तेल रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर मलकर छान लें। इस तेल को सिर में लगाने से यह बालों को काला करता है। पुराने जुकाम को भी ठीक करता है। अनुभूत और चमत्कारी योग है।

९. भृङ्गराज और गुड़हल के पुष्प समभाग लेकर उन्हें भैंस के दूध के साथ पीसें, और लोहे के वर्तन में रखकर भूमि में गाड़ दें। एक सप्ताह पश्चात् निकाल लें। रात्रि में उसे सिर में लगाकर सोया करें। कुछ ही दिनों में बाल काले हो जाएँगे।

बालों को उड़ाना

१. बालों को उखाड़कर वहाँ पर थूहर का दूध लगा देने से बाल फिर नहीं उगते।

२. कुसुम्बा के तेल की मालिश करने से बाल थोड़ी-सी देर में उड़ जाते हैं।

३. शंख-भस्म ५० ग्राम, हरताल बर्किय: १० ग्राम—दोनों को अत्यन्त बारीक पीस लें। इसमें से आवश्यकतानुसार दवा लेकर पानी मिलाकर बालों पर लेप करने से बाल बहुत शीघ्र उड़ जाते हैं।

४. चूना बिना बुझा हुआ और बर्किय: हरताल—दोनों को समभाग लेकर बारीक पीस लें। इसमें से आवश्यकतानुसार दवा लेकर पानी में मिलाकर लेप करने से बाल तुरन्त उड़ जाते हैं।

५. शंख-भस्म २० ग्राम, हरताल बर्किय: १० ग्राम, सज्जी खार १० ग्राम, मैंसिल ५ ग्राम—इन सबको पानी में पीस लें। जिस स्थान के बाल उड़ाने हों वहाँ के बालों को उस्तरे से साफ करके सात दिन तक दवा का लेप करें। बाल जीवनभर नहीं उगेंगे।

बालों को लम्बा करना

१. कलौंजी ५० ग्राम को १ लीटर पानी में पीसकर इस पानी से प्रतिदिन सिर धोएँ, एक मास मे ही बाल काफी लम्बे हो जाते हैं।

२. नीम और बेर के पत्तों को पानी में पीसकर सिर पर लगाएँ और २-३ घण्टे पश्चात् सिर धो डालें। इससे बाल लम्बे हो जाते हैं।

३. कनेर के पत्ते ५० ग्राम, तेल सरसों २०० ग्राम। तेल को कड़ाही में

डालकर आग पर चढ़ा दें। कनेर के पत्ते भी इसमें डाल दें। इस तेल को इतना औटाएँ कि पत्ते जल जाएँ; तब उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर शीशी में भर लें। इस तेल की सिर में मालिश करें। बाल जोर-शोर से निकल आएँगे।

४. लहसुन का रस निकालकर निरन्तर सिर में लगाते रहने से बाल पैदा होने लगते हैं। ४-५ मास लगाएँ।

५. सीताफल के बीज और बेरी के पत्ते—दोनों को समभाग लें और पानी डालकर अत्यन्त बारीक पीसकर बालों की जड़ों में इसका लेप करें। बाल खूब बढ़ते हैं।

बालों का गिरना, झड़ना

१. प्याज़ का रस और शहद—दोनों को बराबर मात्रा में मिलाकर सिर में कुछ समय तक निरन्तर लगाएँ। रात्रि में लगाकर सो जाएँ और प्रातः धो डालें। गिरते हुए बालों को रोकने के लिए अद्भुत एवं अद्वितीय चिकित्सा है।

२. आम की गिरी १० ग्राम को आँवले के रस के साथ पीसकर प्रतिदिन सिर पर लगाने से बाल घने और घुँघराले हो जाते हैं। जिन लोगों के बाल गिरते हों या सफेद होने लगे हों, उन्हें लाभ उठाना चाहिए।

बाँझपन

१. कायफल को कूट-पीस कपड़छन कर समभाग मिश्री मिला दें। ऋतु-स्नान के पश्चात् (मासिक आरम्भ होने के ५ दिन पश्चात्) से ६-६ ग्राम दवा चार दिन तक सेवन करें। तत्पश्चात् पुरुष से संग करें। अवश्य गर्भ स्थापित होगा।

२. नागदमनी को गोघृत में मिलाकर योनि में लेप करने से वन्ध्यत्व अति शीघ्र दूर होता है।

बिच्छू दंश

१. मूली का छिलका, मूली का पत्ता अथवा मूली का रस बिच्छू पर डालने से बिच्छू मर जाता है। जो लोग मूली और खीरा खाते हैं, उन्हें बिच्छू नहीं काटता। जिन स्थानों पर बिच्छू अधिक हों, वहाँ के लोगों को मूली और खीरा खूब खाने चाहिएँ।

२. यदि एक बिच्छू को पकडकर घर के भीतर (मिट्टी खोदकर) दबा दें तो

घर के तमाम विच्छू भाग जाते हैं।

३. फिटकरी १० ग्राम को २० ग्राम पानी में अच्छी प्रकार मिला लें। बस, दवा तैयार है। जिस व्यक्ति को विच्छू ने काटा हो उसकी आँख (जिस ओर डंक मारा हो उससे दूसरी ओर की आँख में, यदि दाहिनी ओर काटा हो तो बाईं ओर की आँख) में २-३ बूँद दवा डालें। डालते ही ऐसा प्रतीत होगा कि बिच्छू ने काटा ही नहीं है। रोता हुआ रोगी हँसने लग जाएगा।

४. जमालगोटा दो दाने लेकर उनका छिलका उतारकर अन्दर की मींगी निकाल लें। इन मींगियों को सिलवट्टे पर पानी की दो-चार बूँदें डालकर रगड़ लें और बिच्छू के दंश-स्थान पर लगा दें। बस, ५-७ मिनट में ही आराम आ जाएगा। रोता हुआ मरीज हँसने लगता है। अत्यन्त प्रभावशाली और प्रशंसनीय योग है।

५. चिरचिटा (औंधा, अपामार्ग) की जड को पानी में घिसकर विच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने से दर्द जादू की भाँति दूर हो जाता है।

६. इमली का एक बड़ा बीज लेकर इतना रगड़ें कि लाल छिलका हटकर सफेदी दिखाई देने लगे। इस सफेद स्थान को विच्छू के डंक पर चिपका दें। बीज उस स्थान पर चिपक जाएगा और जबतक ज़हर को पूर्ण रूप से चूस नहीं लेगा, वहाँ से हटेगा नहीं।

७. निर्मली के बीज को घिसकर चिपका दें, यह भी जहर को चूसकर ही उतरेगा।

बिवाई

१. राल सफेद २० ग्राम, घी २० ग्राम, मोम ५ ग्राम। पहले घी को खूब गर्म करें, फिर इसमें मोम डालकर पिघलाएँ। जब मोम पिघल जाए तब राल का बारीक पिसा हुआ चूर्ण भी इसमें डाल दें। बस, मरहम तैयार है। इस मरहम को पैर की बिवाइयों में लगाएँ। अपने गुणों में अद्भुत एवं चमत्कारी दवा है।

२. देसी अजवायन को बारीक पीसकर और शहद में मिलाकर रात्रि में बिवाइयों में भर दें। प्रातः पैरों को गोमूत्र से धो लें। कुछ दिन ऐसा करने से बिवाइयाँ ठीक हो जाती हैं।

३. मोम, राल, गूगल, गुड़ पुराना, सेंधा नमक—सभी वस्तुओं को समभाग लेकर खूब बारीक पीस लें। फिर इसमें दुगुना गोघृत मिला दें। इस

मरहम को बिवाइयों में भरने से बिवाइयाँ ठीक हो जाती हैं।

४. एरण्ड के बीज की गिरी को पीसकर बिवाई में लगाने से बिवाई ठीक हो जाती है।

बुखार

१. कुटकी के आधा ग्राम बारीक चूर्ण को बताशे में भरकर बुखार चढ़ने से पूर्व रोगी को खिला दें। सर्दी लगकर चढ़नेवाला बुखार उतर जाएगा। बुखार की अवस्था में गर्म पानी से खिलाने से बुखार पसीना आकर उतर जाएगा। दिन में ३-४ बार दें।

२. गिलोय हरी १० ग्राम, अजवायन देसी ५ ग्राम—दोनों को रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातः घोट-छानकर और थोड़ा-सा सेंधा नमक मिलाकर रोगी को पिला दें। इस दवा के सेवन से पुराना मौसमी बुखार उतर जाएगा और वर्षों तक बुखार फिर नहीं चढ़ेगा। १५-२० दिन दवा सेबन कराएँ।

३. गेरू ५ ग्राम, नौशादर ५ ग्राम, मग़्ज़ करौंजा २० ग्राम—सबको कूट-पीसकर छान लें। ४ ग्रेन से ८ ग्रेन तक दवा ताज़ा पानी के साथ दें। यदि बुखार चढ़ने से पूर्व दवा दे दी जाए तो बुखार नहीं चढ़ेगा। चढ़े हुए बुखार में देने पर यह दवा पसीना लाकर बुखार को उतार देगी। आयुर्वेदिक कुनैन है।

४. फिटकरी भुनी हुई ३ ग्राम, सुहागा भुना हुआ ३ ग्राम, कलमीशोरा १० ग्राम, कुटकी ६ ग्राम, काफूर १ ग्राम, मग़्ज़ करौंजा ४ ग्राम, अतीस ३ ग्राम—सभी ओषधियों को कूट-पीसकर पूरा एक दिन खरल करें। आधा ग्राम दवा ताज़ा पानी के साथ दिन में ३-४ बार दें। सभी प्रकार के बुखारों के लिए रामबाण दवा है।

५. दालचीनी का चूर्ण १० ग्राम, आक का दूध ढाई ग्राम—दोनों को मिलाकर खुश्क करें। रोगी को १ ग्रेन (आधी रत्ती) दवा पानी के साथ दें। बुखार को उतारने में बेजोड़ है। यह मीठी कुनैन है जो अपने गुणों में कड़वी कुनैन से बढ़कर है।

६. तीन ग्राम मुश्ककाफूर को एक बोतल में डालकर उसमें ताज़ा पानी भर दें और बोतल को अच्छी प्रकार हिलाएँ। यह पानी २०-२० ग्राम रोगी को पिलाएँ। बुखार उतर जाएगा।

७. चिरायता १० ग्राम, वच १ ग्राम—दोनों को २५० ग्राम पानी में उबालें। एक-चौथाई पानी रहने पर छानकर पिला दें। सब प्रकार के ज्वरों=

बुखारों के लिए चमत्कारी ओषधि है, कभी फेल नहीं होती।

८. गिलाय, धनिया, नीम की छाल, पद्माख, लालचन्दन—सबको ६-६ गम लेकर २५० ग्राम पानी में औटाएँ। एक-चौथाई पानी रहने पर उतार लें। गुनगुना रह जाने पर छानकर पिला दें। सब प्रकार के ज्वरों को दूर करने के लिए चमत्कारी ओषधि है। हाँ, जल्दी न करें, धैर्य रक्खें। ५-७ दिन दवा सेवन कराएँ।

भगन्दर

१. हरड का छिलका, बहेड़े का छिलका, आँवला (गुठली-रहित), पीपल छोटी, सोंठ और काली मिर्च—प्रत्येक १० ग्राम, शुद्ध गूगल ५० ग्राम। सबको कूट-पीसकर और घी से स्निग्ध (चिकना) करके ३-३ ग्राम की गोलियाँ बनाएँ। प्रतिदिन १ गोली गर्म पानी के साथ खिलाएँ। इसके प्रयोग से भगन्दर और नासूर नष्ट हो जाते हैं।

२. पुराना गुड़, नीलाथोथा, गन्दाबिरोजा, सरेस—चारों समभाग लेकर खूब रगड़ें। आवश्यकता हो तो पानी के छींटे दे लें। इस दवा का लेप करने से भगन्दर नष्ट हो जाता है।

३. रीठे का छिलका २० ग्राम, नीलाथ्रोथा १० ग्राम—दोनों को अत्यन्त बारीक पीसकर किसी चींनी मिट्टी के बर्तन में डाल दें, फिर इसपर आक का दूध इतना डालें कि सूख जाए। फिर दूसरे दिन इसी प्रकार डालें। २१ दिन तक इसी प्रकार डालकर खरल कर लें।

प्रतिदिन प्रातः-सायं २ ग्रेन (१ रत्ती) दवा हलुवे में मिलाकर खिला दें। भगन्दर के लिए यह गारण्टी की खानेवाली चिकित्सा है।

४. शिलाजीत शुद्ध ताज़ा १ ग्राम की गोली बनाकर और मलाई में लपेटकर रोगी को निगलवा दें। ऊपर से दूध पिलाएँ। ५-७ दिन में भगन्दर से छुटकारा मिल जाएगा।

मक्खी भगाना

१. हरताल पीली १० ग्राम को ४०० ग्राम दूध में डालकर एक स्थान पर रख दें, तमाम मक्खियाँ इसमें आ-आकर मर जाएँगी।

२. कुटकी स्याह (काली) का जोशाँदा बनाकर घर में रखिए। तमाम मक्खियाँ इसमें आकर मर जाएँगी।

२० ग्राम कुटकी को ८०० ग्राम पानी में औटाएँ। जब २०० ग्राम रह

जाए तो उतार लें। बस, यही कुटकी का जोशाँदा है।

मच्छर भगाना

१. चीड़ की लकड़ी के बुरादे की धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

२. छड़ीला और फिटकरी को जलाकर मकान में धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

३. कनेर के पत्तों या गन्धक की धूनी से मच्छर भाग जाते हैं।

४. घोड़े की पूँछ के बाल घर में लटकाने से भी मच्छर भाग जाते हैं।

५. स्ट्रॉनीला आयल १० ग्राम, मूम्फली का तेल ४० ग्राम—दोनों को मिला लें। बस, दवा तैयार है। रात्रि को मुख, हाथ, पैरों पर लगा लें, मच्छर पास नहीं फटकेगा।

मधुमेह

१. मेथी ६ ग्राम लेकर और दरकुचा करके (थोड़ा कूटकर) सायंकाल पानी में भिगो दें। प्रातः इसे खूब घोटें और कपड़े में छानकर बिना मीठा मिलाये पिला दें। दो मास सेवन कराएँ। मर्ज बिल्कुल समाप्त हो जाता हे।

२. ताजा करेलों का रस निकालकर २०-२५ ग्राम की मात्रा में थोड़ा नमक मिलाकर प्रतिदिन प्रातः हल्के नाश्ते के बाद पिला दिया करें। दो मास के निरन्तर प्रयोग से रोग नष्ट हो जाता है। साधारण-सी वस्तु है परन्तु मधुमेह का काल है।

३. हल्दी बारीक पिसी हुई ३ ग्राम को १२ ग्राम शहद में मिलाकर चटाने से प्रमेह और विशेष रूप से मधुमेह ठीक हो जाता है। २-३ मास सेवन करें।

४. बढ़िया पके हुए करेले लेकर उनके बीज निकाल लें। फिर उन्हें छाया में सुखा लें। सूख जाने पर उनमें करेले का रस डाल दें। एक-दो-दिन में जब रस सूख जाए तब पुनः रस डाल दें। इसी प्रकार ७ भावनाएँ दें। यह ६ ग्राम चूर्ण जामुन के पत्तों के रस के साथ खिलाएँ। ३० ग्राम जामुन के पत्तों को पानी में घोटकर लगभग ५० ग्राम पानी तैयार कर लें।

मधुमेह के लिए अद्भुत दवा है। १५ दिन में चीनी पर्याप्त मात्रा में कम हो जाती है। अत्यन्त सस्ता परन्तु चमत्कारी इलाज है। इन्सुलिन का मुँहतोड़ जवाब है।

५. आँवला सूखा १०० ग्राम, सौंफ १०० ग्राम—दोनों को बारीक पीस

लें। ६-६ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः-सायं पानी से खिलाएँ। मधुमेह को दूर करने में अतीव गुणकारी है। ३-४ मास खिलाना चाहिए।

६. बिनौले की गिरी १० ग्राम को तनिक-सा कूटकर रात्रि में २५० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः इसे अग्नि पर रखकर इतना उबालें कि पानी आधा रह जाए। ठण्डा होने पर मलकर छान लें और रोगी को पिला दें। मधुमेह के लिए अतीव गुणकारी है।

७. गुड़मार बूटी १०० ग्राम, जामुन की गठुलियों की मींगी १०० ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी से खिलाएँ। मधुमेह के लिए उत्तम ओषधि है।

मलेरिया ज्वर = बुखार

१. हुलहुल सफेद फूलवाली का पञ्चांग (जड़, फूल, पत्ते, फल डण्ठल) को कूटकर रस निकाल लें। फिर इसे छान लें। ६-६ ग्राम रस दिन में तीन बार पिला दें। हर प्रकार के मलेरिया बुखार को रोकने के लिए यह दवा अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुई है। इससे नया मलेरिया ही नहीं रुकता अपितु, लौट-लौटकर आनेवाला मलेरिया भी दुम दबाकर भाग जाता है, फिर लौटने का नाम नहीं लेता। इस दवा को चढ़े हुए बुखार में भी निर्भय होकर दे सकते हैं। केवल ३-४ दिन के प्रयोग से ही रोगी नीरोग हो जाता है।

नोट—रोगी का पेट साफ रक्खें। शीघ्र पचनेवाला भोजन दें। फलों का रस दें।

२. फिटकरी को भूनकर बारीक पीस लें। बुखार चढ़ने से ३ घण्टा पूर्व १ ग्राम दवा इतनी ही मिश्री मिलाकर ताज़ा पानी से फँका दें। बुखार नहीं चढ़ेगा। यदि चढ़ भी गया तो दो-तीन दिन में ठीक हो जाएगा। दवा प्रातः-सायं देते रहें।

३. काली मिर्च ३ दाने, तुलसी के पत्ते ३ नग—दोनों को घोटकर कई दिन पिलाएँ। अपने गुणों में अद्भुत है।

४. सत्यानाशी के बीज साबुत तीन ग्राम गर्म पानी से खिलाएँ। कितने ही ज़ोर का बुखार हो, पसीना और टट्टी आकर उतर जाएगा।

५. कुटकी लेकर बारीक पीस लें। इसमें समभाग चीनी भी पीसकर मिला लें। २ ग्राम दवा दिन में २-३ बार ताज़ा पानी से दें। मलेरिया के लिए रामबाण है। तीन दिन में हर प्रकार का मलेरिया ठीक हो जाता है।

मसूड़े फूलना

१. यदि मसूड़े फूल रहे हों तो ज़रा-सा नौशादर लेकर इसे भून लें, परन्तु इस प्रकार भूनें कि आधा कच्चा और आधा पक्का रहे। फिर इसे रुई के फाहे में लपेटकर दर्दवाले स्थान पर रख दें और मुँह टेढ़ा करके राल छोड़ दें। पाँच मिनट में सारा गन्दा पानी निकलकर आराम आ जाएगा।

२. पत्थर के कोयले की राख बिल्कुल सफेद १० ग्राम, फिटकरी भुनी हुई ६ ग्राम, शहद २५ ग्राम—सबको मिला लें। प्रातः और सायं मसूड़ों पर मलें। इसके निरन्तर प्रयोग से हिलते दाँत दृढ़ हो जाते हैं। मसूड़ों से खून और पीप आना बन्द होकर मांसखोरा (पायोरिया) समाप्त हो जाता है। इसके प्रयोग से आपका मनमयूर नाच उठेगा।

मस्तिष्क के रोग

१. पीपल के कोमल पत्तों को छाया में सुखा लें, फिर कूट-पीस और छानकर समभाग मिश्री मिला लें। बस, दवा तैयार है। प्रातः-सायं ३ ग्राम ओषधि गोदुग्ध के साथ सेवन कराएँ और इसका चमत्कार देखें। इसके सेवन से उन्माद (पागलपन), मूर्छा, मृगी, भ्रम, स्मृति की न्यूनता, नज़ला, जुकाम, सिर-दर्द आदि अनेक रोग दूर हो जाते हैं। सेवन कीजिए और ऋषि-मुनियों के गुण गाइए। हाँ, कम-से-कम ४० दिन अवश्य सेवन करें।

२. गिरी बादाम १०, ब्राह्मीबूटी ६ ग्राम, काली मिर्च ७ दाने। बादाम और ब्राह्मी-बूटी को रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातः बादाम का लाल छिलका उतार लें। ब्राह्मी को साफ कर लें। फिर तीनों को सिलबट्टे पर पीस, छान और मिश्री मिलाकर ४० दिन पिलाएँ। गर्मियों के लिए एक अद्‌भुत भेंट है। दिमाग़ी कमज़ोरी और इसके कारण होनेवाले सिर-दर्द को ठीक करता है।

३. छोटी इलायची के बीज १ ग्राम, वंशलोचन असली आधा ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर और मक्खन में मिलाकर खिलाएँ। दिमाग़ी कमज़ोरी के लिए चमत्कारी दवा है। एक-दो मास सेवन कराएँ।

मस्से (मुखमण्डल के)

१. चूना और घी—समभाग लेकर दोनों को खूब फेंटकर सुरक्षित रक्खें। दिन में ३-४ बार मस्सों पर लगाएँ। मस्से नष्ट हो जाएँगे, दुबारा नहीं होंगे।

२. गन्धक के तेज़ाब (Sulfuric Acid) को मस्सों पर लगाना मस्सों को

जड़मूल से समाप्त करने के लिए रामबाण हैं।

नोट—बड़ी सावधानी से फुरेरी में बहुत थोड़ी मात्रा में लेकर मस्से पर लगाएँ।

३. सोडा कास्टिक ६ ग्राम को २५० ग्राम की शीशी (उबाले हुए साफ ठण्डे पानी) में घोलकर सुरक्षित रक्खें। फुरेरी से सावधानी के साथ मस्सों पर लगाएँ। मस्सों को दूर करने के लिए रामबाण है।

४. धनिया पीसकर लगाने से अथवा सीपी की राख सिरके में मिलाकर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

मासिक धर्म खोलने के लिए

१. मालकांगनी, राई, विजयसार की लकड़ी और बच, समभाग लेकर पीस लें। प्रातः-सायं ३-३ ग्राम ठण्डे जल या कच्चे दूध के साथ लेने से मासिकधर्म अवश्य खुल जाता है। अनार खाने से खूब लाभ होता है।

२. कलौंजी के ६ ग्राम चूर्ण को पानी के साथ फँकाने से बन्द रजोधर्म खुल जाता है। पेट-दर्द में भी आराम होता है। पेशाब साफ होता है।

३. तिल काले और गोखरू—दोनों १०-१० ग्राम लेकर रात्रि में २०० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः ठण्डाई की भाँति घोट-पीस, छानकर तथा मिश्री मिलाकर पिला दें। मासिकधर्म अवश्य खुल जाता है। मासिकधर्म आरम्भ होनेवाली तिथि से ३-४ दिन पूर्व से खिलाएँ।

४. गाजर के बीज २० ग्राम ठण्डाई की भाँति घोटकर और मिश्री मिलाकर पिलाने से मासिकधर्म खुलकर आने लगता है।

५. पोटाशियम परमेंगनेट (लाल दवा) आधी रत्ती को १ ग्राम गुड़ में रखकर एक गोली बना लें। मासिक की तिथि से ३-४ दिन पहले इस गोली को प्रातःकाल पानी से निगलवा दें। एक ही खुराक में मासिकधर्म खुल जाएगा। अत्यन्त सस्ता योग है।

६. सुहागा भुना हुआ ५ रत्ती प्रातः-सायं गर्म पानी से दें। बन्द मासिकधर्म जारी हो जाएगा, परन्तु गर्भवती स्त्री को कदापि न दें।

७. नीम की छाल २० ग्राम, सोंठ ४ ग्राम, गुड़ ४ ग्राम—तीनों को २५० ग्राम पानी में डालकर उबालें। चौथाई पानी रहने पर उतार लें। ठण्डा होने पर

छानकर पिला दें। एक सप्ताह पिलाने से रुका हुआ मासिकधर्म पुनः चालू हो जाता है।

८. सौंफ ३ ग्राम, हाऊबेर ३ ग्राम—दोनों को २५० ग्राम जल में पकाएँ। जब चौथाई जल रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर २० ग्राम गुड़ मिलाकर पिला दें। दो-तीन बार पिलाने से मासिकधर्म खुल जाता है।

९. आक की जड़ को छाया में सुखाकर कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। बस, दवा तैयार है। ४ ग्रेन से आधा ग्राम (२ रत्ती से ४ रत्ती) तक दवा फँकाकर ऊपर से गर्म दूध २५० ग्राम पिला दें। इस दवा के प्रयोग से स्त्रियों के मासिकधर्म का खुलकर न आना, दर्द से आना, पूरी मात्रा में न आना आदि शिकायतें दूर होती हैं। मन्दाग्नि नष्ट होकर जठराग्नि तीव्र होती है। वायुगोला, कटिपीड़ा, हड़फूटन आदि रोग दूर होकर शरीर में चुस्ती और स्फूर्ति आती है।

१०. कायफल और समुद्रफल—दोनों समभाग लेकर पीस लें। ६ ग्राम दवा गर्म पानी के साथ एक सप्ताह तक देने से रुका हुआ मासिकधर्म चालू हो जाता है।

११. मूली, गाजर, मेथी और सोया—चारों के बीज समभाग लेकर चूर्ण बना लें। ३-३ ग्राम दवा दिन में ३ बार पानी से दें। मासिकधर्म खुल जाता है। गर्भवती सेवन न करे।

१२. काले तिल ३ ग्राम, त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) ३ ग्राम, भारंगी ३ ग्राम—इन सबका काढ़ा (२५० ग्राम पानी में उबालें, जब चौथाई पानी रह जाए तब उतार लें) बनाकर उसमें गुड़ या शक्कर मिलाकर नित्य प्रातः-सायं पीने से रुका हुआ मासिकधर्म होने लगता है। यदि शरीर में रक्त की कमी हो तो दूध, घी, मिश्री आदि पदार्थ खाकर ऊपर से काढ़ा पीना चाहिए। खट्टे पदार्थ नहीं खाने चाहिएँ। उड़द, दूध, दही, गुड़ आदि पदार्थ अधिक खाने चाहिएँ।

मुख की बदबू

जायफल, जावित्री, मरवा के फूल, तुलसी के पत्ते और केशर—सबको समभाग (बराबर-बराबर) लेकर बारीक पीस लें, फिर गुड़ मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बनाएँ। इन गोलियों को मुख में रखने से मुख की बदबू दूर हो जाती है।

मुख के छाले

१. खुम्बी (जिसकी सब्जी बनती है) को सुखाकर कूट-पीसकर बारीक कर लें। बस, दवा तैयार है। जब मुख में छाले हो रहे हों तो एक चुटकी दवा छालों पर बुरक दें और उसे रगड़ दें। दवा छिड़कते ही ठण्डक पड़ जाती है। अद्भुत दवा है। प्रभु ने इसमें अद्भुत गुण भर रक्खा है। प्रयोग करेंगे तो आप स्वयं पुकार उठेंगे—यह दवा है या जादू!

२. नीलाथोथा भुना हुआ ३ ग्राम को ३ किलो पानी में डालकर गरारे करने से हर प्रकार के छाले दूर हो जाते हैं।

३. अरहर के पत्ते, धनिया के पत्ते—दोनों १०-१० ग्राम लेकर आधा किलो पानी में औटाएँ। आधा पानी रहने पर उतार लें। ठण्डा होने पर गरारे (कुल्ले) कराएँ। मुख के छाले तुरन्त दूर होते हैं।

४. चमेली के पत्ते चबाने से मुख के छाले दूर होते हैं।

५. छोटी हरड़ (जंग हरड़) को बारीक पीसकर छालों पर लगाएँ। जो छाले किसी भी दवा से ठीक नहीं हो रहे हों, इस दवा के लगाने से निश्चय ठीक हो जाएँगे।

६. सुहागा भूनकर उसे पीस लें और शहद में मिलाकर छालों पर लगाएँ। अवश्य लाभ होगा।

७. फिटकरी सफेद १० ग्राम, गेरू ८० ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर आधा किलो कच्चे दूध में २५० ग्राम पानी और ३ ग्राम उक्त चूर्ण मिलाकर कुल्ले करें, तुरन्त लाभ होगा।

मुहाँसे

१. जायफल दूध में घिसकर एक मास तक रात्रि में मुखमण्डल पर लगाएँ। मुहाँसे, फोड़े-फुंसी गायब होकर मुखमण्डल पर सौन्दर्य आ जाता है।

२. नींबू का रस कपड़े से तीन बार छना हुआ २० ग्राम, अर्क गुलाब २० ग्राम, ग्लिसरीन २० ग्राम—तीनों को शीशी में डालकर मिला लें। मुखमण्डल का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए अद्भुत वस्तु तैयार है। चेहरे के दाग़, कील, छाइयाँ और मुहाँसे दूर होते हैं। चेहरे की रंगत निखरती है तथा चेहरा रेशम के समान मुलायम हो जाता है।

३. सन्तरे का ताजा छिलका ३० ग्राम, सरसों सफेद १२ ग्राम—दोनों को

खरल में डालकर इतना रगड़ें कि दोनों एकजान हो जाएँ। फिर नींबू का रस डालकर गाढ़ा लेप-सा बना लें। रात्रि को चेहरे को गर्म पानी से धोएँ और तौलिये से पोंछकर यह लेप लगाकर सो जाएँ। प्रातः गर्म पानी से धोएँ। २-३ सप्ताह प्रयोग करें। इससे चेहरे का रंग निखरकर चन्द्रमा की भाँति चमकने लगता है। मुहाँसे, कील, छाई, दाग़ आदि सब दूर हो जाते हैं।

४. सोडा-बाई-कार्ब और गन्धक आँवलासार शुद्ध—दोनों समभाग लेकर मिला लें। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी के साथ फँका दिया करें। इसी दवा को मक्खन या मलाई में मिलाकर रात्रि में सोते समय मुहाँसों, कीलों, छाइयों पर लगाया करें। जिन लड़के और लड़कियों के मुख पर कील, छाइयाँ, फुंसियाँ निकल आती हैं, दाग हो जाते हैं, उन्हें इसका अवश्य प्रयोग करना चाहिए, अत्युत्तम दवा है। एक सप्ताह के प्रयोग से कील-छांइयों, दाग़-धब्बों का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

५. ग्लिसरीन ५० ग्राम, नींबू का रस ५० ग्राम, सोडा-बाई-कार्ब १० ग्राम तीनों को मिला लें। रात्रि में सोते समय मुखमण्डल पर लगाएँ। चेहरा मुलायम और सुन्दर हो जाएगा।

मूढगर्भ

अर्जुन वृक्ष की छाल २० ग्राम, सिरस की छाल २० ग्राम—दोनों को जौकुट करके २५० ग्राम पानी में उबालें। जब चौथाई पानी रह जाए तब उतारें लें। ठण्डा होने पर इसमें रुई की बत्ती भिगोकर २-४ बार योनि में रक्खें। इससे मूढगर्भ की सफाई हो जाती है। अनुभूत योग है।

मूर्छा

१. असगन्ध नागोरी ६ ग्राम, शतावर ६ ग्राम—दोनों दवाओं को कूटकर २५० ग्राम गोदुग्ध में डाल दें। इस दूध में २५० ग्राम पानी भी डाल दें और अग्नि पर औटाएँ। जब पानी जलकर क़ेवल दूध रह जाए तब उतारकर छान लें और ठण्डा करके तथा मिश्री मिलाकर मूर्छा के रोगी को एक सप्ताह तक पिलाएँ। मूर्छा को दूर करने के लिए अत्युत्तम दवा है। यह हिस्टीरिया की रोगिणी के लिए भी लाभदायक है।

२. काफूर ३ ग्राम, हींग ३ ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर ४-४ ग्रेन (२-२ रत्ती) प्रातः-सायं पानी के साथ खिलाएँ। मूर्छा में लाभदायक है।

३. प्रातः-सायं २ ग्रेन केशर अर्क सौंफ के साथ खिलाते रहें, रोग दूर हो जाएगा। मूर्छा की रामबाण दवा है।

४. रीठा को पानी में रगड़कर एक-दो बूँद पानी नाक में टपका दें, तुरन्त होश आ जाएगा। चमत्कारी एवं अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है।

५. सर्पगन्धा और पीपलामूल—दोनों समभाग लेकर बारीक पीसकर कपड़छन कर लें। बस, दवा तैयार है। १ से २ ग्राम दवा अर्क सौंफ के साथ प्रातः-सायं खिलाएँ। अद्भुत योग है। जितनी प्रशंसा की जाए कम है। सहस्रों को लाभ हुआ है।

मृगी

१. लहसुन १० ग्राम, तिल का तेल २०० ग्राम—दोनों को मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करने से २१ दिन में मृगी रोग ठीक हो जाता है।

२. २१ जायफलों की माला बनाकर गले में पहनाने से मृगी दूर हो जाती है।

मेदरोग (मोटापा)

१. मूली के बीजों को अत्यन्त बारीक पीसकर प्रतिदिन ६ ग्राम चूर्ण २० ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ। तत्पश्चात् २० ग्राम शहद का शर्बत बनाकर पिला दें। कम-से-कम ४० दिन पिलाएँ। मोटापे को कम करता है।

२. त्रिफला १० ग्राम को २० ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ। तत्पश्चात् २० ग्राम शहद का शर्बत बनाकर पिला दें। ४० दिन तक सेवन करने से मोटापा कम हो जाता है।

३. बिना बुझा हुआ चूना १५ ग्राम लेकर बारीक पीस लें, फिर २५० ग्राम शहद में मिलाकर एक दिन घोटें और कपड़े में छानकर सुरक्षित रक्खें। प्रातः-सायं ६-६ ग्राम चटाएँ। मोटापा दूर करने के लिए अद्वितीय है।

मोच-चोट

गेहूँ का आटा ५० ग्राम, हल्दी १० ग्राम—दोनों को घीकुंवार (ग्वारपाठा) के गूदे में मिलाकर गोला बना लें, फिर उसमें तिल का तेल मिलाकर चोट या मोच के स्थान को सेकें। पुनः गर्म कर उसको रोटी की भाँति फैलाकर बाँध दें। भयानक-से-भनायक मोच और चोट ठीक हो जाती है। चमत्कारी योग है।

मोटापा

नींबू का रस २५ ग्राम लेकर २५० ग्राम पानी में मिलाएँ, फिर इसमें २० ग्राम शहद मिलाकर खूब गड्डमड्ड करके पिला दें। शरीर में चाहे कैसे भी चर्बी बढ़ गई हो, २-३ मास सेवन करनें से चर्बी घट जाती है और शरीर सुडौल बन जाता है।

मोतियाबिन्द

१. प्रतिदिन असली चन्दन घिसकर माथे पर लगाने से मोतियाबिन्द नहीं होता।

२. अपामार्ग की जड़ को शंहद में घिसकर लगाने से मोतिया कट जाता है।

३. प्रतिदिन चौलाई के पत्तों का रस एक गिलास पीने से मोतिया कट जाता है।

४. शरपुंखा (झोझरु) के बीजों को सुरमे के समान बारीक पीसकर आँखों में दो बार लगाएँ, आरम्भिक मोतियाबिन्द के लिए लाभकारी है।

५. ककरौंदा के ५-७ ताज़ा पत्ते लेकर उनका रस निकाल लें और इसे छानकर ड्रापर द्वारा केवल २-२ बूँदें आँखों में डालें। आरम्भिक मोतियाबिन्द के लिए उत्तम है। नया फूला भी कटता है।

६. हींग, बच, सोंठ और सौंफ—समभाग लेकर कूट-पीस लें। ३ ग्राम दवा शहद में मिलाकर प्रतिदिन चटाएँ। मोतियाबिन्द के लिए लाभदायक है।

७. निर्मली के बीज २० ग्राम लेकर सुर्मे के समान बारीक पीस लें। इसमें समभाग शहद मिलाकर रक्खें और प्रातः-सायं सलाई से लगाएँ। यह दवा आरम्भिक मोतियाबिन्द को नष्ट करती है। यदि इसे निरन्तर प्रयोग किया जाए तो मोतियाबिन्द पैदा ही नहीं होता।

८. तेज तम्बाकू के पत्तों को पीसकर सुर्मा तैयार करें, फिर इसमें ४ गुणा कास्ट्रायल मिलाकर खूब खरल करें और शीशी में सुरक्षित रक्खें। प्रतिदिन रात्रि में सोते समय सलाई से आँखों में लगाएँ। लम्बे समय तक प्रयोग करने से आरम्भिक मोतिया कट जाता है।

मोतीझारा

१. जब दाने अच्छी प्रकार निकल आएँ तब मोतीझारा ज्वर को दूर करने

के लिए लिहसौड़ा के हरे पत्ते १४ नग लेकर मिट्टी के सकोरे में अर्क गावज़बाँ २५० ग्राम डालकर भिगो दें और रोगी को जब प्यास लगे तब मिश्री डालकर यही अर्क पिलाएँ। ३-४ दिन में ही बुखार उतर जाता है।

२. खूबकलाँ ३ ग्राम, अँजीर उत्तम दो, मुनक्का ५ दाने—सबको ४०० ग्राम पानी में पकाएँ। आधा रहने पर खूब मल-छानकर और मिश्री मिलाकर पिला दें। फिर शाम को भी इसी प्रकार पिला दें। ४ दिन दवा देने पर दाने बाहर आने शुरू हो जाते हैं। जबतक दाने निकलते रहें, दवा देते रहें। यदि दस्त लग जाएँ तो दवा बन्द कर दें। प्रतिदिन तुलसी के पत्ते खिलाते रहें। हानिरहित अति सरल चिकित्सा है।

रक्त गिरना, बहना

१. मेथी ३ ग्राम को २५० ग्राम दूध में उबालें। ५-७ उबाल आने पर उतार लें। ठण्डा होने पर छानकर तथा मिश्री मिलाकर पिला दें। शरीर के किसी भी अंग से खून का गिरना एक ही मात्रा में बन्द हो जाता है, दूसरी मात्रा देने की शायद ही आवश्यकता पड़ती है।

२. पीपल के ताज़ा पत्ते अथवा ताज़ा छाल लेकर हमामदस्ते में खूब कूटकर रस निचोड़ लें। इसे ६-६ ग्राम की मात्रा में चार-चार घण्टे पश्चात् दें।

यह एक महात्मा का बताया हुआ चुटुकुला है जो हर प्रकार के बहते हुए रक्त अर्थात् खूनी पेचिश, खूनी पेशाब, रक्तप्रदर, खून थूकना, खूनी बवासीर और नकसीर के खून को आश्चर्यजनक रूप से बहुत शीघ्र रोक देता है। बिल्कुल मुफ्त की दवा है परन्तु हीरों से तोलने लायक़ है।

रक्तचाप (Blood Pressure)

१. सर्पगन्धा (असरौल बूटी) को कूट-पीस, कपड़छन करके रख लें। प्रतिदिन २-२ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी से दें। अद्वितीय दवा है। सारा संसार इसका सिक्का मान चुका है।

२. बालछड़ ५० ग्राम लेकर कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। प्रतिदिन आधा ग्राम से १ ग्राम तक दवा ताज़ा पानी के साथ खिलाएँ। अति प्रभावकारी दवा है।

३. नंगे पैर फिरनेवालों को ब्लडप्रैशर की शिकायत नहीं हो सकती। प्रतिदिन ५-७ किलोमीटर घूमना हृदय के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

४. गेहूँ की बासी रोटी प्रातः दूध में भिगोकर खाएँ। उच्च रक्तचाप (High Blood-Pressure) के लिए सर्वश्रेष्ठ चुटकुला है।

रक्तप्रदर

१. हरी घास का रस १० ग्राम प्रातः-सायं मिश्री मिलाकर पिलाने से कैसा भी भयंकर रक्तप्रदर हो, शान्त हो जाता है।

२. अशोक की छाल ५० ग्राम को डेढ़ किलो पानी में डालकर मन्द आँच पर पकाएँ। जब चौथाई पानी रह जाए तब उतारकर छान लें। फिर इसमें समभाग दूध मिलाकर पुनः पकाएँ। जब पकते-पकते दूधमात्र रह जाए तब उतार लें और ठण्डा होने पर आधा दूध प्रातः पिला दें। आधे को सायं पुनः गर्म तथा ठण्डा करके पिला दें। प्रदर की अचूक, अमोघ और चमत्कारी दवा है। ५-७ दिन सेवन कराएँ।

३. पके हुए गूलर के फल लेकर सुखा लें और पीस-छानकर समभाग मिश्री मिलाकर एक शीशे के बर्तन में भर दें। १० ग्राम प्रातः-सायं दूध या पानी के साथ सेवन कराएँ। रक्तप्रदर के लिए अनुभूत है।

४. नित्य प्रातः-सायं ५-५ ताज़ा गुलाब के फूल ३-३ ग्राम मिश्री के साथ खिलाकर ऊपर से गाय का दूध पिलाएँ। इसके सेवन से १५ ही दिन में प्रदर, धातु-विकार, मूत्राशय का दाह, लाल पेशाब आदि ठीक हो जाते हैं।

५. मुलहठी का कपड़छन चूर्ण ६० ग्राम, सोना गेरू पिसा हुआ २० ग्राम—दोनों को मिलाकर एकजान कर लें। बस, दवा तैयार है।

४ ग्राम दवा चावल के धोवन के साथ दें। (२० ग्राम चावल को २ घण्टे तक २५० ग्राम पानी में भीगने दें। तत्पश्चात् इस पानी को काम में लाएँ) दिन में तीन मात्राएँ ४-४ घण्टे पश्चात् दें। प्रायः तीन मात्राओं में ही रक्त बहना बन्द हो जाता है। सावधानी के तौर पर दवा एक सप्ताह तक प्रयोग कराएँ। भोजन में केवल दूध और चावल ही दें।

यह मासिकधर्म की अधिकता, बिना समय के रक्त आना और कई-कई दिन तक आनेवाले रक्त को रोकने के लिए जादू का प्रभाव रखती है। चाहे खून का फव्वारा चल रहा हो, इसके देते ही रुक जाता है। यह ओषधि निराशा में आशा का संचार कर सबको चकित कर देती है।

६. माजूफल, गेरू, लोधपठानी—तीनों समभाग लेकर कूट-पीसकर

कपड़छन कर ले। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं दूध के साथ एक-दो सप्ताह खिलाएँ।

७. मुलतानी मिट्टी (जिससे स्त्रियाँ सिर धोती हैं, पीली मिट्टी) १० ग्राम रात्रि में २०० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः-काल निथरे हुए पानी को छान लें, मिट्टी को छोड़ दें। सोना गेरू का चूर्ण ३ ग्राम फँकाकर ऊपर से यह पानी पिला दें। कौड़ियों की दवा है परन्तु अत्यन्त लाभदायक है।

८. पत्थर के कोयले की राख (राख बिल्कुल सफेद होनी चाहिए) आधा ग्राम को मक्खन, मलाई अथवा शहद के साथ दें। अनुपम दवा है।

९. काई (यह जोहड़ों, तालाबों, नालों में पानी के ऊपर होती है) १०० ग्राम लेकर सुखा लें, फिर बारीक पीस लें। ३ ग्राम दवा ताजा पानी के साथ दें। हर प्रकार के खून को रोकने के लिए पैनिसिलीन से भी अधिक लाभदायक है।

१०. राई बनारसी १२ ग्राम लेकर उसे अत्यन्त बारीक पीस लें और इसकी आठ पुड़ियाँ बनाएँ। प्रातः-सायं एक-एक पुड़िया बकरी के दूध से खिलाएँ। इसकी कुछ ही मात्राओं से पुराने-से-पुराना प्रदर नष्ट हो जाता है, चाहे वह किसी भी कारण से हो।

११. पुराना टाट या गुड़ की बोरी जलाकर राख कर लें, फिर पीस और छानकर सुरक्षित रख लें। प्रातः निराहार ३ ग्राम दवा पानी से खिलाएँ। रक्तप्रदर के लिए एक अद्वितीय योग है।

१२. असगन्ध नागोरी ३० ग्राम, राल सफेद २० ग्राम, चीनी ६० ग्राम—सबको कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रातः १० ग्राम दवा पानी के साथ दें। इसके प्रयोग से रक्तप्रदर का बहता हुआ दरिया बहुत शीघ्र बन्द हो जाता है।

रक्तशोधक

१. उशबा, चिरायता और गोरखमुण्डी—प्रत्येक १०-१० ग्राम, रसौत शुद्ध ५ ग्राम—सबको बारीक पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। १ गोली प्रातः और १ गोली सायं ताज़ा पानी के साथ दें। अद्वितीय रक्तशोधक और हर प्रकार के चर्म-रोगों में प्रभावकारी है।

२. नित्यप्रति २० ग्राम घी में ८-१० काली मिर्च भूनकर पीने से रक्त शुद्ध होता है और शरीर पुष्ट होता है।

३. सत्यानाशी की जड़ ९ ग्राम, काली मिर्च ९ दाने—दोनों को पीसकर नित्य पिलाएँ। खाने के लिए मूँग की दाल से बनी खिचड़ी दें। २१ दिन में सब

प्रकार के रक्तविकार, कोढ़, खुजली आदि का नाम भी नहीं रहेगा। चमत्कारी ओषधि है।

रतौंधी

१. काली मिर्च को करेले के पत्तों के रस में घिसकर एक सप्ताह तक आँखों में लगाएँ। रतौंधी दूर हो जाती है।

२. लहसुन का रस रात्रि में १-२ बूँद आँख में डालने से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

रसायन

१. पीली हरड़ गुठली-रहित का ३ ग्राम चूर्ण आधा किलो दूध के साथ प्रतिदिन रात्रि में १ वर्ष तक सेवन किया जाए तो मनुष्य बीमारियों से दूर रहता है, यौवन स्थिर रहता है, समय से पूर्व बुढ़ापा नहीं आता।

२. गोरखमुण्डी फूल आने से पूर्व लाकर छाया में सुखा लें। इसी प्रकार काले भाँगरे का चूर्ण बना लें। दोनों को समभाग लें। १० ग्राम चूर्ण गाय के घी भ मिलाकर चटाएँ। पथ्य में केवल दूध-भात लें। कम-से-कम चार मास सेवन करें। इससे वृद्धावस्था नष्ट होकर युवकों के समान बल, वीर्य और उमंग प्राप्त होती है।

रसौली

१. सज्जीखार, मूलीखार और शंख-भस्म—तीनों को समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर लेप करने से प्रत्येक प्रकार की रसौली और गाँठ नष्ट हो जाती है।

२. घियाकुमारी (ग्वारपाठे) का रस १० ग्राम, सुहागा बारीक पिसा हुआ १ ग्राम—दोनों को मिलाकर रात्रि में सोते समय पिला दें। १ मास तक निरन्तर प्रयोग करें। इसके सेवन से रसौली नष्ट हो जाती है। एलोपैथी में ऑपरेशन के अतिरिक्त और कोई ओषधि नहीं है परन्तु आयुर्वेद की यह विशेषता है कि खाने की दवा से ही रसौली नष्ट हो जाती है। हाँ, रसौली बहुत बड़ी और बहुत पुरानी न हो।

यह दवा तिल्ली और वायु-गोला के लिए भी बहुत लाभदायक है।

नाक की रसौली—लहसुन को हुक्के के पानी में घिसकर लगाएँ। नाक के अन्दर की रसौली जड़मूल से समाप्त हो जाएगी।

लक़वा

१. दशमूल की दसों ओषधियाँ ५० ग्राम लेकर ५०० ग्राम पानी में

औटाएँ। जब १०० ग्राम पानी शेष रह जाए तब इसे छानकर इसमें थोड़ा-सा सेंधा नमक और २० ग्राम एरण्ड का तेल मिलाकर पिला दें। इसी प्रकार ५-७ दिन पिलाएँ, लक़वा ठीक हो जाता है।

२. सन के बीज १५ ग्राम अत्यन्त बारीक पीसकर और शहद में मिलाकर खिलाने से कुछ दिन में ही लक़वा ठीक हो जाता है। इसी को २-३ सप्ताह खिलाने से पक्षाघात = अधरंग भी ठीक हो जाता है।

३. शुद्ध कुचले का चूर्ण २ ग्रेन (एक रत्ती) ३ ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ और ऊपर से गर्म दूध पिला दें। लक़वा के लिए अत्यन्त लाभदायक है। दो मास तक खिलाएँ।

४. हरताल बर्क़िय: शुद्ध १० ग्राम, काली मिर्च ४० ग्राम। हरताल को अत्यन्त बारीक खरल करें, फिर इसमें १-१ ग्राम काली मिर्च डालकर खरल करते जाएँ। यहाँ तक कि समस्त मिर्चें समाप्त हो जाएँ। अब छह घण्टे तक पुनः खरल करें। जितना अधिक घोटेंगे उतना ही अधिक लाभ होगा। २ ग्रेन (एक रत्ती) चूर्ण में ३ ग्रेन रससिंदूर मिलाकर बीज-रहित मुनक्का में बन्द करके प्रातः-सायं पानी से खिलाएँ। शत-प्रतिशत सफल चिकित्सा है।

५. जिस ओर लक़वा हो उस ओर जायफल रक्खें।

६. २० ग्राम शहद को ८० ग्राम पानी में औटाकर प्रातः-सायं पिलाएँ।

७. काली हरड़ (जंग हरड़, छोटी हरड़) को मुख में रक्खें। निरन्तर प्रयोग करने से कुछ समय में लक़वा दूर हो जाता है।

८. बच २५ ग्राम, सोंठ २५ ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। १-१ ग्राम दवा प्रातः-सायं शहद के साथ चटाने से अधरंग और लक़वा ठीक हो ज़ाते हैं।

९. रीठे का छिलका ३० ग्राम, गुड़ तीन वर्ष पुराना २० ग्राम—दोनों को घोटकर बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली शहद के पानी के साथ खिलाएँ। लक़वा के लिए ये गोलियाँ रामबाण हैं। इसके समक्ष बड़े-बड़े नुस्खे भी कुछ नहीं हैं।

लू

१. खूब पानी पीकर बाहर निकलने से लू नहीं लगती।

२. कैरी (आमी, कच्चा आम) को भूभल में भूनकर अथवा पानी में उबालकर इसे मसलकर छिलका और गुठली अलग कर दें, फिर ज़रा-सा

नमक, गुड़ १५ ग्राम और पानी २०० ग्राम मिलाकर पिलाने से लू शान्त हो जाती है।

वज्र-देह

चित्रक की छाल का चूर्ण ६ ग्राम को प्रतिदिन गोदुग्ध के साथ सेवन करने से देह विशाल एवं वज्र-तुल्य दृढ़ होती है।

वायुगोला

सज्जीखार ३ ग्राम, पुराना गुड़ ३ ग्राम—दोनों को अच्छी प्रकार रगड़कर गोली बना लें और प्रतिदिन प्रातः गर्म पानी से खिला दें। एक मास तक खिलाएँ। रोग नष्ट हो जाता है।

विष

नियमपूर्वक चन्द्रोदय रस एक वर्ष तक प्रयोग किया जाए तो मनुष्य पर स्थावर और जंगम—किसी भी प्रकार के विष का प्रभाव नहीं होगा।

शक्तिवर्धक

१. बिदारीकन्द का चूर्ण ६ ग्राम, गोघृत १० ग्राम, शहद २० ग्राम—तीनों को मिलाकर चाट लें, ऊपर से गोदुग्ध का सेवन करें। वृद्ध भी जवान हो जाता है। कम-से-कम ४० दिन सेवन करें।

२. शतावर २०० ग्राम, असगन्ध २०० ग्राम—दोनों को बारीक पीस लें। ६ ग्राम दवा आधा किलो गोदुग्ध में डालकर इतना औटाएँ कि दूध आधा रह जाए। २० ग्राम मिश्री डालकर पिलाएँ। ४० दिन तक सेवन कराएँ। शक्ति कर दरिया ठाठें मारने लगता है।

३. काले तिल २० ग्राम, गोखरू २० ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर आधा किलो बकरी के दूध में खीर बनाकर खिलाएँ। इसके १५-२० दिन सेवन करने से हस्त-मैथुन के कारण उत्पन्न हुई कमजोरी दूर हो जाती है।

४. तुलसी के बीज या पत्ते भूनकर और बराबर वजन का गुड़ मिलाकर १-१ ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली गाय के ताजा दूध के साथ लें। मर्दाना कमजोरी दूर होगी और समय से पूर्व बुढ़ापा नहीं आएगा। निरन्तर एक वर्ष तक प्रयोग करते रहें।

५. टोपी उतारे और तेल निकाले हुए भिलावे २५ ग्राम लेकर २-३ घण्टे

हमामदस्ता में कूटें, फिर तिल का तेल ४०० ग्राम लेकर इसमें ५०-५० ग्राम डालते जाएँ और दवा को घोटते-पीसते जाएँ। १-२ घण्टे में दवा तैयार हो जाती है। प्रतिदिन २ ग्राम दवा प्रातःकाल दूध के साथ दें।

इसके सेवन से शरीर में इतनी शक्ति आती है कि सँभालना कठिन हो जाता है। मुखमण्डल अनार की भाँति लाल और शरीर में विद्युत् जैसी शक्ति आ जाती है। यदि नज़ला-जुकाम के कारण बाल सफेद हो गये हैं तो निरन्तर १ वर्ष तक सेवन करने से बाल पुनः काले हो जाते हैं।

नोट—गर्म और पित्त प्रकृतिवालों को यह ओषधि अनुकूल नहीं आती। घी, दूध, चावल का खूब सेवन करें।

६. अश्वगन्धा और विधारा ५००-५०० ग्राम को कूट-पीसकर बोतल में भर लें। प्रातः-सायं १०-१० ग्राम गोदुग्ध के साथ लें। इसके सेवन से बुढ़ापा दूर होता है, बाल काले होते हैं और वात रोग नष्ट होते हैं।

७. सफेद मूसली ८ ग्राम के चूर्ण को घृत और मधु के साथ चटाने से अद्भुत बल और शक्ति बढ़ती है।

शीघ्रपतन, धातुस्राव, प्रमेह

१. सिरस के बीजों की मींगी १० ग्राम, इमली के बीज छिलका-रहित १० ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर वट-वृक्ष के दूध में १-२ दिन खरल करें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। १-१ गोली प्रातः-सायं दूध या पानी से दें। पुराने-से-पुराना धातुस्राव बन्द हो जाता है।

२. राल बारीक पिसी हुई १ ग्राम रात्रि में सोते समय दूध के साथ खिलाएँ। शीघ्रपतन दूर करने के लिए अत्युत्तम है।

३. आम के ताज़ा बौर को छाया में सुखाकर बारीक पीस लें, फिर इसके बराबर मिश्री मिला लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं गोदुग्ध के साथ दें। प्रमेह धातुस्राव, स्वप्नदोष और लिकोरिया = श्वेत प्रदर का शर्तिया इलाज है। स्त्रियों की योनि का ढीलापन भी दूर होता है।

४. रीठे का छिलका ५० ग्राम लेकर उसे सुर्मे की भाँति बारीक घोटें, फिर इसमें १० ग्राम शुद्ध पारा मिलाकर इतना खरल करें कि पारा रीठे में आत्मसात् हो जाए और उसकी चमक शेष न रहे। बस, चमत्कारी दवा तैयार है। १ ग्रेन (आधा रत्ती) दवा ५० ग्राम मक्खन में मिलाकर खिलाएँ। प्रमेह का शर्तिया इलाज है।

नोट—पारा अच्छी प्रकार आत्मसात् न हुआ तो लाभ की बजाय हानि होगी।

५. भिण्डी की कोमल जड़ें लेकर छाया में सुखा लें, फिर बारीक पीसकर समभाग मिश्री मिला लें। ९ ग्राम दवा प्रातः बकरी के दूध के साथ खिलाएँ। प्रमेह कितना ही पुराना हो इसके प्रयोग से नष्ट हो जाता है। एक मास प्रयोग करें।

६. छोटी दुद्धी को पानी से धो लें, फिर खूब घोटकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। १ गोली प्रातः और एक गोली सायं गाय के दूध के साथ खिलाएँ। प्रमेह के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

७. तालमखाने के बीज ६० ग्राम को अदरक के रस की तीन भावनाएँ देकर (तीन बार रस में भिगो और सुखाकर) चूर्ण बना लें। फिर इसे २०० ग्राम शहद में मिला लें। १०-१० ग्राम दवा प्रातः-सायं गोदुग्ध से खिलाएँ। प्रमेह, शीघ्रपतन और स्वप्नदोष के लिए अतीव गुणकारी योग है।

शीतज्वर

१. पाढ़ २५ ग्राम को दरकुचा (थोड़ा-सा कूटकर) करके जोशाँदा तैयार करें। (इस दवा को १०० ग्राम पानी में डालकर औटाएँ। २५ ग्राम रहने पर उतारकर छान लें) इस जोशाँदे में आधा ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर रोगी को पिला दें। यह सर्दी लगकर चढ़ने वाले बुखार की अत्युत्तम दवा है।

२. शतावर ६ ग्राम, जीरा सफेद ६ ग्राम—दोनों को पीसकर अत्यन्त बारीक चूर्ण बनाएँ और ५० ग्राम पानी में घोलकर रोगी को पिला दें। इससे भी निश्चितरूप से सर्दी लगकर चढ़नेवाले बुखार को आराम आ जाता है।

३. शुद्ध कुचले को बारीक पीसकर बारी के दिन २-२ ग्रेन (एक-एक रत्ती) की २-३ खुराक शहद में मिलाकर चटाने से तिजारी, चौथैया और प्रतिदिन आनेवाला बुखार रुक जाता है।

४. सूखी भाँग के आधा ग्राम चूर्ण को गुड़ में लपेटकर बारी के दिन देने से बारी का बुखार निश्चय ही नहीं चढ़ता।

शूल और वायु

१. सोंठ, सुहागा भुना हुआ, काला नमक, हींग भुनी हुई—सभी वस्तुओं को बराबर-बराबर मिलाकर और सहजने के रस में घोटकर २-२ ग्रेन की

गोलियाँ बना लें। २-२ गोलियाँ दिन में २-३ बार भोजन के पश्चात् गुनगुने पानी से दें। इसके सेवन करने से ६४ प्रकार के शूल और ८४ प्रकार की वाय = वायुविकार नष्ट हो जाते हैं।

२. सोंठ बारीक पीसकर और कपड़छन करके मदार (आक, अकौड़ा) के दूध में गूँधकर मूंग के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। एक-एक गोली एक-एक घण्टा पश्चात् ताज़ा पानी से खिलाएँ। हर प्रकार के वायु के दर्द के लिए लाभदायक है।

३. नौशादर डेढ़ ग्राम पानी में घोलकर पिलाने से पेट-दर्द तत्काल बन्द हो जाता है।

शोथ = सूजन

१. भैंस का मक्खन और दूध मिलाकर लेप करने से हर प्रकार की सूजन दूर हो जाती है।

२. सोंठ और पीपल समभाग लेकर चूर्ण बना लें। ६ ग्राम दवा गुड़ में मिलाकर ताज़ा पानी के साथ खिलाएँ। सूजन निश्चय ही दूर हो जाती है।

३. प्रतिदिन १०० ग्राम गोमूत्र पिलाने से हर प्रकार ही सूजन दूर हो जाती है। गोमूत्र का सेवन पथरी को निकालता है, रक्त को शुद्ध करता है। खाज-खुजली और कोढ़ को दूर करता है,दाँतों को मजबूत बनाता है। इस साधारण-सी वस्तु में परमात्मा ने अद्भुत गुण भर दिये हैं। प्रयोग कीजिए और इसके अद्भुत चमत्कार देखिए।

४. आँवले का रस १० ग्राम, घी १० ग्राम—दोनों को मिलाकर पीने से बहुत दिन का चढ़ा हुआ शोथ भी दूर हो जाता है। १५-२० दिन सेवन करें।

श्लीपद = हाथी-पाँव

सरसों का तेल ६ ग्राम, जियापोते का रस ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर पिलाने से हाथी-पाँव की निवृत्ति होती है।

नोट—यही दवा बढ़े हुए प्रोस्टेट ग्लैण्ड को भी ठीक करती है।

श्वास

१.पीपल छोटी, कायफल, काकड़ासींगी—तीनों वस्तुएँ बराबर-बराबर लेकर बारीक पीस लें। ६ ग्राम दवा शहद में मिलाकर मरीज को चटाएँ। इससे

भयंकर-से-भयंकर श्वास का दौरा दूर हो जाता है।

२. धतूरे के पत्ते, भाँग के पत्ते और कलमीशोरा—तीनों समभाग लेकर जौ-कुट कर लें। श्वास का दौरा उठने पर इसकी दो-तीन चुटकियाँ कटोरी में डालकर दियासलाई से आग लगा दें। जब धुआँ निकलना आरम्भ हो जाए तब रोगी से मुँह के रास्ते खिचवाएँ अथवा चिलम में डालकर खिचवाएँ। जहाँ मरीज ने दो-चार बार धुआँ अन्दर खींचा, बस, एक चमत्कार होगा। रोगी ऐसा अनुभव करेगा, जैसे किसी ने जादू कर दिया है। इस प्रयोग से बलग़म अत्यन्त सरलता से निकला जाता है।

३. नये बढ़िया ताज़ा मुनक्का के दानों को धोकर रात्रि में पानी में भिगो दें। प्रातःकाल तक वे फूल जाएँगे। भूख लगने पर दिनभर ये मुनक्के ही खाते रहें। एक मास तक सेवन करें। एक मास में ही फेफड़ों की वर्षों की कमजोरी और विषैले मवाद नष्ट हो जाते हैं, परिणामस्वरूप दमे के दौरे भी बन्द हो जाते हैं। रग-रग में नया खून भर जाता है। दमा के अतिरिक्त पुरानी खाँसी, नजला और पेट की खराबियाँ भी दूर हो जाती हैं।

नोट— भूख के अनुसार ही खाएँ। चबा-चबाकर खाएँ। दिनभर में २५० ग्राम मुनक्का पर्याप्त होगा।

श्वेतप्रदर

१. भिण्डी की सूखी जड़ १०० ग्राम, पिण्डालू सूखा १०० ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें। ६-६ ग्राम चूर्ण प्रातः-सायं ३५० ग्राम गाय के दूध में १० ग्राम मिश्री मिलाकर अथवा मिश्री मिले हुए पानी के साथ २० दिन तक खिलाएँ। श्वेतप्रदर की अनुभूत ओषधि है। इससे सोमरोग भी निश्चय ही ठीक हो जाता है।

२. जलजमनी (सिलौंटा, छिरेंटा, पातालगारूड़ी, छिलहिण्ट, फरीदबूटी) की पत्तियों को पीसकर ६-६ ग्राम की तीन गोलियाँ बना लें। आधा किलो मठा में नमक और जीरा मिलाकर प्रातः, दोपहर और रात्रि में तीनों गोलियाँ खिला दें, एक ही दिन के प्रयोग से श्वेतप्रदर ठीक हो जाता है।

३-३ ग्राम चूर्ण दूध के साथ प्रातः-सायं लेने से भी श्वेराप्रदर अति शीघ्र चमत्कारिक रूप से बन्द हो जाता है।

३. शिवलिंगी के बीज का चूर्ण २ ग्राम प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करने से, गर्भाशय-सम्बन्धी समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं।

४. किशमिश १० ग्राम, भुने चने की दाल १० ग्राम—दोनों को मिलाकर प्रातः-सायं ७ दिन खाने से श्वेतप्रदर समाप्त हो जाता है। चमत्कारी ओषधि है, नाश्ते-का-नाश्ता और दवा-की-दवा! (यह एक खुराक है।)

५. खूब पका हुआ केला १-१ प्रातः-सायं घी के साथ १५ दिन तक खिलाएँ। नीम का पानी उबालकर उससे योनि को धोएँ।

अत्यन्त सरल परन्तु चमत्कारिक प्रयोग है। सैकड़ों रोगियों पर व्यवहार किया गया है।

६. हीराकर्मीम २ ग्राम को बारीक पीसकर ११ पुड़िया बना लें। एक पुड़िया प्रतिदिन २० ग्राम मक्खन में लपेटकर खिलाएँ। अनुपम दवा है।

७. कीकर का पञ्चांग (फूल, पत्ते, छिलका, गोंद, फलियाँ) ५० ग्राम लेकर बारीक कूटकर कपड़छन कर लें, फिर ५० ग्राम खाँड मिला दें। २ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः-सायं दूध के साथ दें। श्वेतप्रदर के लिए अत्युत्तम योग है।

८. चूने की बिना बुझी डली १०० ग्राम लेकर इसे बकरी के दूध में भिगो दें। जब दूध सूख जाए तब पुनः दूध डाल दें। इसी प्रकार ११ बार करें, फिर बारीक पीसकर रख लें। १-१ ग्राम दवा प्रातः-सायं गाय या बकरी के दूध में दें। लिकोरिया = श्वेतप्रदर के लिए रामबाण दवा है।

९. एक साबुत गोला (खोपरा, गिरी) लेकर उसके ऊपर से एक छोटा-सा टुकड़ा काट लें, फिर गिरी के भीतर कमरकस पिसा हुआ जितना आ सके भर दें। अब काटी हुई टोपी को उसपर लगाकर सारी गिरी पर गुँधा हुआ गेहूँ का आटा मोटा-मोटा लेप कर दें और उपलों की नरम आँच में भूभल में रख दें। जब आटा लाल हो जाए तब निकाल लें। आटे को हटाकर गिरी के बराबर मिश्री डालकर खूब बारीक कूट लें। ६ ग्राम से १० ग्राम तक प्रातः- सायं गोदुग्ध से खिलाएँ। लिकोरिया के लिए अत्यन्त गुणकारी है, शक्तिवर्धक है तथा स्त्रियों के सौन्दर्य को स्थायी रखता है।

१०. माजूफल ६० ग्राम लेकर बारीक पीस लें। ३-३ ग्राम दवा दिन में दो बार पानी के साथ दें। श्वेतप्रदर के लिए अद्भुत ओषधि है।

११. बड़ी इलायची के दाने और माजूफल—दोनों समभाग लेकर कूट-पीस कपड़छन कर लें, फिर इन दोनों के बराबर मिश्री भी कूटकर मिला लें। २-२ ग्राम दवा प्रातः-सायं ताजा पानी के साथ दें। श्वेतप्रदर की अद्भुत सस्ती और सुपरीक्षित ओषधि है।

सन्निपात ज्वर (अर्धनारी नटेश्वर रस)

१. नीलाथोथा ५० ग्राम लेकर इसे १०८ दिन तक निरन्तर नींबू का रस डालकर घोटते रहें, बस उत्तम कोटि का रस तैयार हो जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर सन्निपात ज्वर के रोगी की आँखों में दवा डालने से बुखार तुरन्त उतर जाता है।

जहाँ अपना सिक्का जमाना हो और रोगी को आयुर्वेद का गौरव दिखाना हो, वहाँ इस ओषधि का प्रयोग कीजिए। जिस आँख में दवा डाली जाएगी, उधर के हिस्से का बुखार उतर जाएगा। इस ओषधि में क्या चमत्कार है कि आप जिस ओर की आँख में यह ओषधि डाल देंगे उस ओर का ज्वर उतर जाएगा, और जिस ओर दवा नहीं डालेंगे उधर ज्वर चढ़ा रहेगा।

पाठकगण! संसार की सारी पैथियों को पढ़ जाइए, आपको आयुर्वेद के अतिरिक्त ऐसी चमत्कारी ओषधि नहीं मिलेगी।

२. काली मिर्चों को अदरक के रस में खूब बारीक पीसकर सुखा लें और सुरक्षित रक्खें। सन्निपात के बेहोश रोगी को होश में लाने के लिए इस दवा को सुँघाएँ। उत्तम ओषधि है।

सर्पदंश

१. जहाँ सर्प ने काटा हो, उस स्थान पर आक का दूध टपकाते रहें। जब तक खुश्क होता रहे, दूध डालते रहें। जब दूध खुश्क होना बन्द हो जाए, तब समझ लीजिए कि विष का प्रभाव समाप्त हो गया।

२. पागल कुत्ते के काटे पर भी इसी प्रकार ४० दिन तक आक (मदार, अकौड़ा) का दूध टपकाते रहें।

३. रीठे का छिलका ५० ग्राम लेकर बारीक पीस लें, फिर इसे आधा किलो पानी में अच्छी प्रकार मिला लें। इस पानी को थोड़ा-थोड़ा करके रोगी को पिलाते रहें। वमन के द्वारा सारा विष बाहर निकल जाएगा। भयंकर-से-भयंकर सर्पदंश के लिए चमत्कारी दवा है।

३. रीठे का छिलका, नौशादर और काला सुर्मा—तीनों समभाग लेकर अत्यन्त बारीक पीसकर सुर्मा बना लें। इसे आँखों में लगाने से सर्पविष उतर जाता है।

४. सर्प के काटे स्थान पर चीरा देकर उसपर हुक्के की मैल बाँध दें और

हुक्के का बदबूदार पानी पिलाएँ। कै और दस्त होकर सारा विष दूर हो जाएगा।

सिर-दर्द

१. हाथी-दाँत की कंघी को सिर में रगड़ के साथ फेरने से सिर-दर्द दूर होकर मस्तिष्क बलवान् बनता है।

२. रीठे का छिलका १० ग्राम, पानी २५० ग्राम। रीठे को बारीक पीसकर पानी में मिला दें। फिर इस रीठे-मिले पानी को छानकर शीशी में रख लें। पुराना सिर-दर्द हो तो दो-दो बूँद दोनों नथुनों में टपकाएँ। यदि आधे सिर में दर्द हो तो जिधर दर्द हो उससे उलटे नथुने अर्थात् बाएँ भाग में दर्द हो तो दाहिने नथुने में और दाहिने भाग में दर्द हो तो बाएँ नथुने में टपकाएँ। एक सप्ताह प्रयोग करें, सिर-दर्द के लिए रामबाण है।

३. तुलसी के पत्ते छाया में सुखाकर कूट-पीस, कपड़छन कर लें। आवश्यकता पड़ने पर सिर-दर्द के रोगी को नसवार की भाँति सुँघाएँ। सिर-दर्द तुरन्त दूर होगा।

४. नौशादर को पानी में घोलकर नाक में २-२ बूँद डालें और रोगी को कहें कि उसे ऊपर की ओर सुड़के। सिर-दर्द के लिए अनुपम है।

५. उस्तेखद्दूस १० ग्राम, धनिया ५ ग्राम, काली मिर्च २१ दाने—तीनों को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। तीन ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः ताजा पानी के साथ दें। सहस्रों रोगी स्वस्थ हुए हैं। सिर-दर्द के लिए चमत्कारी दवा है।

६. मदार (आक, अकौड़ा) के पत्तों का रस २-२ बूँद दोनों नथुनों में टपकाएँ। पुराने सिर-दर्द के लिए अचूक दवा है।

७. छोटी इलायची के बीजों को अत्यन्त बारीक पीसकर नाक में फूँकें। छींके आकर सिर-दर्द दूर हो जाएगा।

८. आकाशबेल ६ ग्राम को पानी में घोटकर १० दिन तक पिलाएँ, दर्द का नाम भी नहीं रहेगा। यदि पानी के स्थान पर बकरी के दूध में घोटकर पिलाएँ तो सोने पर सुहागा है।

९. सर्पगन्धा और धनिया १-१ ग्राम, काली मिर्च ५ दाने—सबको बारीक पीसकर और २ ग्राम पिसी हुई मिश्री मिलाकर एक पुड़िया बना लें। इसे ताजा पानी से फँका दें। इसके कुछ दिन तक सेवन करने से High blood pressure (उच्च रक्तचाप), हिस्टीरिया और मृगी दूर होती है तथा इनके

कारण होनेवाला सिर-दर्द भी दूर हो जाता है।

१०. यदि आप सिर के दर्द से परेशान हैं, ओषधियाँ खा-खाकर थक चुके हैं तो निम्न चिकित्सा कीजिए—

गेहूँ के आटे को ग्वारपाठे (घीयाकुमारी) के रस में गूँधकर दो बाटियाँ बनाइए। इन बाटियों को उपले की आग पर सेक लीजिए। सिकने पर हाथ से दबाकर शुद्ध घी में डाल दीजिए। प्रातः सूर्योदय से पूर्व खाकर सो जाइए। ५-७ दिन सेवन करने से पुराने-से-पुराना सिर-दर्द दूर हो जाएगा।

सुइयाँ चुभना

सेलखड़ी १०० ग्राम लेकर इसे ग्वारपाठे के रस में घोटकर भस्म बना लें। यह भस्म ५० ग्राम, फिटकरी भुनी हुई ५० ग्राम, गेरू और समुद्रझाग ५०-५० ग्राम—सब वस्तुओं को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें।

६ ग्राम दवा प्रातः दूध की कच्ची लस्सी के साथ सेवन कराएँ। जिनके शरीर में सुइयाँ चुभती हैं, बदन में चकाचौंटी लग जाती है, चिंगारियाँ निकलती हैं, उनके लिए अद्‌भुत ओषधि है। कम-से-कम २० दिन सेवन करें।

सूखा (बच्चों का रोग)

१. अतिबला (कंघी, खरेंटी) की ताजा पत्तियों को सिलबट्टे से पीसकर एक इञ्च की गोल टिकिया बना लें, फिर इसके बराबर गुड़ की भी टिकिया बना लें। जिस बच्चे को सूखे का रोग हो, उसके तालु पर गुड़ की टिकिया रक्खें, फिर इस टिकिया पर अतिबला की टिकिया रक्खें। इसके ऊपर साफ कागज अथवा रुई का फाहा रखकर पट्टी बाँध दें जिससे दवा इधर-उधर सरकने न पाए। यह ओषधि रात्रि में बाँधनी चाहिए।

प्रातःकाल आप देखेंगे कि गुड़ लुप्त हो गया है और अतिबला की टिकिया विद्यमान है। जबतक गुड़ लुप्त होता रहे तबतक प्रतिदिन बाँधते जाएँ अतिबला की प्रतिदिन नई टिकिया बनाएँ। जब गुड़ एक-दो दिन लुप्त न हो रहने लगे, तब बाँधना बन्द कर दें। बच्चा स्वस्थ होकर बलवान् हो जाएगा

यदि आरम्भ में १-२ दिन दवा बाँधने पर गुड़ शेष रहे तो समझ लें, इस बच्चे को सूखा नहीं है, इस-जैसा कोई दूसरा रोग है।

२. जद्‌वार मीठी (निर्विषी, निर्विस) और सर्पगन्धा—दोनों समभाग लेकर बारीक पीसकर मिला लें। चौथाई ग्राम से आधा ग्राम तक दवा माता के दू

अथवा अर्क गुलाब से ४० दिन तक खिलाएँ। दवा अत्यन्त सस्ती है परन्तु सहस्रों रुपये की लागत से बननेवाले नुस्खे को भी मात देनेवाली है।

३. २० ग्राम गधी का दूध प्रतिदिन २ मास तक पिलाएँ, सूखा रोग दूर हो जाएगा।

४. सूर्योदय से पूर्व गूलर के दूध की ३-४ बूँद बताशे में भरकर बच्चे को खिलाएँ। १५-२० दिन के प्रयोग से बच्चा मोटा-ताज़ा हो जाता है।

५. काली गाय का मूत्र सूर्योदय से पूर्व लाया हुआ १० ग्राम, केशर असली १० ग्राम। केशर को गोमूत्र में खरल करके और छानकर शीशी में भर लें। छह मास के बालक को ४ बूँद और छह मास से ऊपरवालों को ८ बूँद माता के दूध से प्रातः-सायं दें। सूखे को दूर करने के लिए अक्सीर है।

सूर्यावर्त (सूर्योदय के साथ आरम्भ होनेवाला सिर-दर्द)

१. धनिया सूखा ४ ग्राम, उस्तेखद्दूस ६ ग्राम, काली मिर्च ७ दाने प्रातः सूर्योदय से २ घण्टा पूर्व तीनों वस्तुओं को पानी के साथ घोट-पीस, छानकर बिना मीठा मिलाये पिला दें। बाद में १-२ बताशे अथवा ज़रा-सी चीनी फँका सकते हैं।

इस दवा के सेवन से सूर्योदय के साथ आरम्भ होनेवाला सिर-दर्द प्रायः पहले दिन ही नहीं होने पाता, अन्यथा दूसरे या तीसरे दिन तो निश्चय ही समाप्त हो जाता है। अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है।

२. सूर्योदय से पूर्व शुद्ध घी की जलेबी खा लेने से भी पहले ही दिन सूर्यावर्त ठीक हो जाता है।

सोज़ाक (सूजाक), मूत्रकृच्छ्र

१. सूरजमुखी के फूल के बीज ६ ग्राम को बासे पानी में पीसकर और छानकर पिलाने से भयंकर-से-भयंकर मूत्रकृच्छ्र भी दूर हो जाता है, पथरी भी निकल जाती है।

२. भुनी हुई फिटकरी २ ग्राम, गेरू २ ग्राम, मिश्री ६ ग्राम—सबको पीसकर एक पुड़िया बना लें। इसे फँकाकर ऊपर से धारोष्ण गोदुग्ध पिलाने से २१ दिन में सोजाक और मूत्रकृच्छ्र ठीक हो जाता है।

३. रीठे का छिलका १० ग्राम, उत्तम शुद्ध कत्था ५ ग्राम, कलमीशोरा ५ ग्राम, शुद्ध नीलाथोथा १ ग्राम—सबको कूट-पीसकर और पानी का छींटा देकर

आधा-आधा ग्राम की गोली बना लें। प्रातः-सायं एक-एक गोली पानी के साथ दें। पुराने-से-पुराना आतशक = उपदंश और सोज़ाक २१ दिन के सेवन से सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

४. फिटकरी और गुड़ को समभाग लेकर १-१ ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रातःकाल निराहार एक गोली खिलाकर ऊपर से आधा किलो छाछ = मठा पिला दें। अत्यन्त सस्ती परन्तु चमत्कारी ओषधि है। ७ दिन में सोज़ाक दूर हो जाता है।

भोजन में गेहूँ के फुलके और दूध ही दें। घी का सेवन न कराएँ। छाछ भी दिन में दुबारा न दें।

५. बड़ी इलायची के बीज, कलमीशोरा—दोनों समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी से खिलाएँ। इसके सेवन से मूत्रेन्द्रिय की मवाद साफ होकर जलन बन्द हो जाती है।

एक सप्ताह पश्चात् राल और मिश्री ५०-५० ग्राम लेकर कूट-पीसकर रख लें। ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं दूध के साथ दें। नये-पुराने सोज़ाक के लिए अद्भुत ओषधि है।

६. केले के कुम्भे से २५० ग्राम रस निकालकर और इसमें थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाने से सोज़ाक जड़ से उखड़ जाता है।

७. सत बिरोजा, छोटी इलायची के बीज, चोबचीनी—प्रत्येक ५० ग्राम, चन्दन का तेल २० ग्राम। पहली तीनों ओषधियों को बारीक पीस और कपड़छन करके इनमें चन्दन का तेल मिला दें।

३-३ ग्राम ओषधि प्रातः और सायं दूध की लस्सी से सेवन करें। केवल एक सप्ताह में ही सोज़ाक ठीक हो जाता है। इससे उत्तम शायद ही और कोई नुस्खा मिले। अपने गुणों में अद्भुत एवं चमत्कारी है।

८. लोहबाण कौड़िया असली बारीक पिसा हुआ ३ ग्राम लें और इसमें चन्दन का तेल ६ ग्राम मिलाकर रात्रि में सोते समय खिलाएँ। प्रातः उठकर स्नान कर लें। सोज़ाक एक ही खुराक में ठीक हो जाता है। यदि आवश्यकता हो तो तीन दिन ले सकते हैं।

९. फिटकरी सफेद १५ ग्राम, मिश्री १५ ग्राम—दोनों को अत्यन्त बारीक पीस लें। रोगी जब प्रातःकाल पहली बार लघुशंका (पेशाब) करे तो ठीक पेशाब करने के समय ३ ग्राम दवा मुँह में डालकर ऊपर से दूध की लस्सी पी

ले। एक सप्ताह तक प्रयोग करें। सोज़ाक का रोग मिट जाता है।

सौन्दर्यवर्धक

१. नीम के पत्ते, हरड़ की छाल, लोध, अनार के पौधे की छाल, आम की छाल—प्रत्येक ५-५ ग्राम लेकर और पानी में पीसकर शरीर पर उबटन करें। कुछ ही दिनों में कुरूपता नष्ट होकर शरीर सुन्दर हो जाएगा।

२. सन्तरे का छिलका ताज़ा १० ग्राम, सफेद सरसों ४ ग्राम—दोनों वस्तुओं को खरल में इतना घोटें कि मिलकर एकजान हो जाएँ। फिर नींबू का रस डालकर गाढ़ा-सा लेप तैयार कर लें। रात्रि में मुखमण्डल को पानी से अच्छी प्रकार धोकर और तौलिये से पोंछकर यह लेप लगाकर सो जाएँ। प्रातः गुनगुने पानी से धो डालें। २०-२५ दिन लगाना पर्याप्त है। इसके प्रयोग से मुखमण्डल चन्द्रमा की भाँति चमकने लगता है। इसे लगाने से चेहरे का रंग निखरता है, मुखमण्डल के दाग़, कील, छाई और मुहाँसे दूर हो जाते हैं।

३. ६ ग्राम सरसों को दूध में पीस लें। इस लेप को प्रतिदिन रात्रि में सोते समय मुखमण्डल पर लगाएँ। इसके प्रयोग से चेहरे के स्याह दाग़ और धब्बे दूर हो जाएँगे तथा मुखमण्डल सुन्दर होकर खिल उठेगा। अपने मुखमण्डल के सौन्दर्य को निखारने के लिए स्त्रियों को अवश्य प्रयोग करना चाहिए। कम-से-कम दो सप्ताह सेवन करें।

४. बादाम की गिरियों को बारीक पीसकर चेहरे पर मलने से चेहरे की रंगत निखरती है, चमड़ी सुन्दर और कोमल हो जाती है।

५. निर्गुण्डी की जड़ के १० ग्राम चूर्ण को गोघृत के साथ पान करनेवाला मनुष्य स्वर्ण के समान कान्तिवाला हो जाता है।

संग्रहणी = पुराने दस्त

१.आम की पुरानी गुठली की गिरि १०० ग्राम लेकर कूट-पीस लें। ६-६ ग्राम दवा दिन में तीन बार दही अथवा लस्सी से दें। प्रशंसनीय योग है।

२. कुड़ा (इन्द्रजौ) की छाल ५० ग्राम लेकर खूब बारीक पीसकर दस पुड़िया बना लें। एक पुड़िया प्रतिदिन गाय के दही से खिलाएँ। सारा दिन लस्सी ही पिलाएँ। भूख लगे तो दही-चावल खिलाएँ। रोग से छुटकारा मिल जाएगा।

३. बेलगिरि, मोचरस, इन्द्रजौ, गुलधावा, आम की गुठली की गिरि—प्रत्येक १०-१० ग्राम, अफीम ५ ग्राम। सबको अलग-अलग कूट-पीस

और छानकर बाद में अफीम मिला दें। १ ग्रेन से २ ग्रेन (आधा रत्ती से १ रत्ती) तक दवा दही की लस्सी के साथ दें। पुराने मरोड़, पेचिश, दस्त और संग्रहणी का नाम भी शेष नहीं रहेगा।

४. २० ग्राम सुगन्धबाला को २५० ग्राम पानी में औटाएँ। जब चौथाई पानी रह जाएं तब उतार और छानकर पिला दें। एक सप्ताह के सेवन से रोग समाप्त हो जाता है।

५. शरपुंखा (सरफोंका, झोझरू) के पत्ते ५० ग्राम को २०० ग्राम पानी में उबालें। जब ५० ग्राम पानी रह जाए तब उतार लें, ठण्डा होने पर मलकर छान लें। सोंठ का कपड़छन चूर्ण ६ ग्राम फँकाकर ऊपर से यह काढ़ा पिला दें। कम-से-कम ४० दिन सेवन करें। अमोघ एवं अचूक उपाय है।

स्वप्नदोष

१. धनिया सूखा ३ ग्राम, छोटी इलायची के बीज आधा ग्राम, मिश्री २ ग्राम—यह एक खुराक है। तीनों को कूट-पीस मिलाकर प्रातः-सायं पानी के साथ खिलाएँ। स्वप्नदोष को नष्ट करने की उत्तम दवा है।

२. बिधारा, असगन्ध नागोरी, शतावर—तीनों समभाग लेकर कूट-पीस लें। फिर इन तीनों के बराबर मिश्री भी मिला दें। प्रतिदिन ३-३ ग्राम दवा प्रातः-सायं पानी के साथ खिलाएँ। स्वप्नदोष को दूर करने के लिए अमोघ ओषधि है।

३. बिनौला की गिरि १० ग्राम को २५० ग्राम दूध में खीर की भाँति पकाएँ। यह खीर प्रातः-सायं ४० दिन तक खिलाएँ। स्वप्नदोष, पेशाब के साथ वीर्य निकलना और मसाने की कमजोरी के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

४. लाजवन्ती के बीज २ ग्राम, कौड़ी पीली सोखता १ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम—यह एक खुराक है। तीनों को कूट-पीसकर प्रातः-सायं ताज़ा जल के साथ प्रयोग कराएँ। स्वप्नदोष और प्रोस्टेट ग्लैण्ड की सूजन के लिए अनुपम ओषधि है।

५. इमली के बीजों को भट्टी में थोड़ा-सा भून लें, फिर उनके छिलके को अलग करके गिरियों को अत्यन्त बारीक पीस लें। इसमें समभाग मिश्री भी मिला लें। ६ ग्राम दवा प्रातः गोदुग्ध के साथ दें। प्रमेह और स्वप्नदोष के लिए अतीव गुणकारी है।

६. बरगद (वट, बड़) के वृक्ष की छाल को सुखाकर बारीक पीस लें और

इसके बराबर मिश्री मिला लें। ६-६ ग्राम दवा प्रातः-सायं गोदुग्ध से खिलाएँ। प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, धातुस्राव और लिकोरिया के लिए रामबाण है।

७. बरगद के कच्चे फलों को छाया में सुखाकर बारीक पीस लें। १० ग्राम दवा प्रातः गोदुग्ध से लें। अपने गुणों में अद्वितीय है। इसके प्रयोग से स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपतन और धातुस्राव दूर हो जाता है।

८. शतावर, असगन्ध और मूसली—प्रत्येक ५०-५० ग्राम, मिश्री १५० ग्राम, पहले शतावर, असगन्ध और मूसली को कूट-पीसकर कपड़छन कर लें, फिर मिश्री को कूटकर मिला दें। प्रतिदिन प्रातः-सायं १०-१० ग्राम दवा दूध के साथ लें। स्वप्नदोष को दूर करने में अत्युत्तम है।

स्मरणशक्ति-वर्धक

उत्तम पके हुए बायबिड़ंग लेकर उनके ऊपर के छिलके को उड़ाकर जो मग़ज़ बाकी रहें उन्हें कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के बराबर वजन की मुलहठी की जड़ का चूर्ण भी इसमें मिला दें। इस चूर्ण में से प्रतिदिन प्रातः ६ ग्राम से १० ग्राम तक चूर्ण ठण्डे पानी के साथ खाना चाहिए। उसके ऊपर थोड़ा-सा ठण्डा पानी और पी लेना चाहिए। चूर्ण पचने के पश्चात् देर में भोजन करना चाहिए। पथ्य में साठी चावल का भात, घी और मूँग लेना चाहिए। आँवले का यूष (रस) भी ले सकते हैं। भोजन एक ही बार करें।

एक मास तक ओषधि का सेवन करने से सर्वप्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है। किसी भी व्याधि को उत्पन्न करनेवाले रोग-कृमि नष्ट हो जाते हैं। स्मरणशक्ति बढ़ जाती है। प्रतिवर्ष एक मास तक सेवन करने से मनुष्य हमेशा नीरोग रहता और दीर्घायु होता है।

स्वरभेद = गला बैठना

१. चोया (न मिलने पर पीपलामूस ले लें), अमलबेद, सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी, तेजपत्र, समाक दाना, इलायची दाना, तालीसपत्र, दारचीनी, ज़ीरा सफेद, चित्रक की जड़ की छाल—सभी दवाएँ १०-१० ग्राम लेकर अत्यन्त बारीक पीस लें। फिर इसमें १२० ग्राम पुराना गुड़ (कम-से-कम एक वर्ष पुराना) मिला लें। प्रतिदिन ४ ग्राम दवा प्रातः-सायं गोदुग्ध के साथ खिलाने से अत्यन्त बिगड़ा हुआ जुकाम, नज़ला, खाँसी और स्वरभेद ठीक हो जाता है।

२. पीपल छोटी, बड़ी हरड़ का छिलका—दोनों को समभाग लेकर पीस

लें। ३ ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातः ताज़ा पानी के साथ दें। बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है।

३. बहेड़े का छिलका, पीपल छोटी, सेंधा नमक—तीनों को समभाग लेकर पीस लें। ६ ग्राम दवा ५० ग्राम गाय के दही के मठे में मिलाकर रोगी को पिलाएँ। यह भी स्वरभेद के लिए उत्तम कोटि की दवा है।

४. सोंठ और मिश्री—समभाग लेकर बारीक पीस लें। फिर इसमें इतना शहद मिलाएँ कि गोलियाँ बन जाएँ। १-१ ग्राम की गोलियाँ बना लें। रोगी को इन गोलियों को चुसाएँ। स्वरभेद की उत्तम दवा है।

५. पान की जड़ और मिश्री को मुँह में रखने से भी स्वरभेद ठीक हो जाता है।

६. बड़ी हरड़ (पीलीवाली, घोड़ा हरड़) को अग्नि में भूनकर मुँह में रक्खें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम हरड़ का चूर्ण पानी के साथ फाँक लें। बैठा हुआ गला खुल जाएगा।

७. कबाबचीनी मुख में रखकर चूसें, गला खुल जाएगा।

८. कुलिंजन और मुलहठी—दोनों समभाग लेकर कूट-पीस कपड़छन कर लें। २-२ ग्राम चूर्ण दिन में ५-७ बार चूसने से स्वर ठीक हो जाता है।

९. चौकिया सुहागा भुना हुआ, लौंग—दोनों समभाग लेकर तुलसी के पत्तों के रस में खूब खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बना लें। प्रातः-सायं दो-दो गोली ताज़ा पानी से खिलाएँ। बैठी हुई आवाज़ को खोलने के लिए अतीव गुणकारी है।

१०. २ ग्रेन (एक रत्ती) हींग गर्म पानी के साथ निगल जाने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

हकलाना

१. तेजपत्र को जिह्वा के नीचे रखने से हकलाना (रुक-रुककर बोलना) बन्द हो जाता है।

२. सुहागा फूला हुआ शहद में मिलाकर ज़बान पर मलने से हकलाना बन्द हो जाता है।

हड्डी टूटना

१. शुद्ध शिलाजीत १ ग्राम से ३ ग्राम तक प्रतिदिन गोदुग्ध के साथ

खिलाने से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है।

२. पीपल के पत्ते २१ लेकर खूब पीसकर और गुड़ मिलाकर २१ गोलियाँ बनाएँ। प्रतिदिन ३ गोलियाँ गोदुग्ध के साथ खिलाएँ। टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है।

३. महुआ की ताज़ा छाल लेकर उसे पानी के साथ पीसें और टूटी हुई हड्डी पर बाँधें। हड्डी जुड़ जाती है। ५-७ दिन प्रयोग करें।

हरणिया (आँत उतरना)

१. झाऊ की पत्तियाँ ६ ग्राम को ठण्डाई की भाँति घोट-पीस और छानकर पिलाएँ एवं पत्तियों को ही पीसकर तथा गर्म करके सुहाता-सुहाता लेप करें। आँत उतरने की शिकायत के लिए गुणकारी है।

२. एरण्ड की जड़ की छाल और सोंठ—समभाग लेकर पानी में पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करें, इससे हरणिया की शिकायत दूर होती है।

हिचकी

१. हल्दी बारीक पिसी हुई ४ ग्राम लें। इसमें तनिक-सा पानी का छींटा लगाकर चिलम में रख लें। इसके ऊपर अग्नि रख लें। अब कश लगवाएँ। २-४ कश लगाते ही भयंकर-से-भयंकर हिचकी जो किसी दवा से बन्द होने में नहीं आ रही हों, तुरन्त बन्द हो जाती है। अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है। अद्वितीय दवा है, जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है।

२. सोंठ का चूर्ण १ ग्राम, मिश्री आधा ग्राम—दोनों को मिलाकर सुँघाने से हिचकी रुक जाती है।

३. पान के बीज १० ग्राम, पीपल छोटी १० ग्राम—दोनों को अत्यन्त बारीक पीसकर आधा ग्राम से १ ग्राम तक दवा ३ ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ। हिचकियाँ आनी बन्द हो जाएँगी।

४. मोर के परों की राख बनाएँ और आधा ग्राम राख शहद में मिलाकर चटाएँ। हिचकी बन्द हो जाती हैं।

५. ग्वारपाठा (घियाकुमारी) का रस २० ग्राम, सोंठ का चूर्ण ३ ग्राम—दोनों को मिलाकर खाने से भयंकर हिचकी भी बन्द होती हैं।

६. गेरू ३ ग्राम, कुटकी ३ ग्राम—दोनों को बारीक पीसकर और १० ग्राम शहद में मिलाकर चटाएँ। हिचकी बन्द हो जाएँगी।

७. कलौंजी (मगरैला) का चूर्ण ३ ग्राम को १० ग्राम ताज़ा मक्खन में मिलाकर खिलाने से हिचकी दूर हो जाती है।

८. बड़ी इलायची ५ नग लेकर और छिलका-सहित कुचलकर २५० ग्राम पानी में खूब उबालें। जब आधा पानी रह जाए तब उतार लें। ठण्डा होने पर इस पानी को निथारकर गुनगुना रहने पर घूँट-घूँट रोगी को पिला दें। हिचकियाँ कितनी भयंकर क्यों न हों, रुक जाएँगी। जब सारे नुस्खे फेल हो जाएँ, उस समय यह नुस्खा कारगर सिद्ध होगा। यह प्रभु की महिमा का मुँह बोलता चमत्कार है।

९. नारियल की ऊपर की जटा जलाकर राख कर लें। आधा ग्राम से १ ग्राम दवा ताजा पानी के साथ खिलाएँ। हिचकी रोकने के लिए रामबाण दवा है।

१०. अकरकरा के १ ग्राम चूर्ण को १० ग्राम शुद्ध शहद में मिलाकर चटानें से हिचकी बन्द हो जाती है।

११. हीरा हींग ४ ग्रेन (२ रत्ती) को मुनक्का में लपेटकर गर्म पानी से खिला दें, हिचकी और पेट-दर्द तुरन्त बन्द हो जाते हैं।

हृदय-रोग

कुटकी २ ग्राम, मुलहठी का चूर्ण ३ ग्राम—दोनों को कूट-पीसकर मिश्री के शरबत के साथ देने से हृदय की गति कम होती है परन्तु शक्ति बढ़ती है।

हृदय-शूल

१. चीतल के सींग की भस्म १ ग्राम से ३ ग्राम तक गर्म घी में मिलाकर खिलाने से हृदय-शूल में तुरन्त आराम आ जाता है, अत्युत्तम एवं चमत्कारी दवा है। इससे सभी प्रकार के शूल ठीक होते हैं। हृदय और कमर के दर्द की अचूक ओषधि है।

२. अर्जुन वृक्ष की छाल का रस ४ किलो और गोघृत १ किलो, दोनों को मिलाकर पकाएँ। जब घी-मात्र शेष रह जाए तब उतारकर छान लें। प्रतिदिन १० ग्राम घी को दूध के साथ सेवन करने से हृदय-शूल और हृदय के सभी रोग दूर होते हैं।

हैज़ा

१. लाल मिर्च १ नग के बीज, मोम देसी ४ ग्रेन (२ रत्ती)। मिर्च के बीजों को मोम में मिलाकर गर्म पानी अथवा अर्क सौंफ के साथ निगलवा दें। ऐसी

२-३ मात्राएँ देने से हैजा ठीक हो जाता है। जब हैजे का रोगी निराशाजनक स्थिति में पहुँच गया हो, उस समय यह दवा रामबाण का काम करती है।

२. चिरचिटा (अपामार्ग, औंघा, पुटखुण्डा) की जड़ ६ ग्राम को अर्क सौंफ या पानी में रगड़कर पिलाने से भयंकर हैज़ा भी दूर हो जाता है।

३. हैज़े के रोगी को गाय के दही की छाछ में नमक, ज़ीरा और काली मिर्च डालकर थोडी-थोड़ी देर में तबतक पिलाते रहें जबतक हैज़ा दूर न हो जाए।

४. मुश्क काफूर आधा ग्राम, सोंठ ३ ग्राम—दोंनों को बारीक पीस लें और इसकी ८ मात्राएँ बना लें। १५-१५ मिनट पश्चात् एक-एक पुड़िया अर्क सौंफ के साथ दें। हैजा के लिए अत्युत्तम दवा है।

५. ब्राण्डी ६ ग्राम, प्याज़ का रस ६ ग्राम—दोनों को मिलाकर मरीज़ को पिला दें। मरीज़ तुरन्त आँखें खोल देगा। आवश्यकता होने पर दूसरी बार भी दवा दी जा सकती है।

होंठ फटना

नाभि में घी, तेल आदि कोई चिकना पदार्थ लगाएँ, होंठों का फटना और दर्द तुरन्त दूर होगा।

इत्योम् शम्

स्वामी जी के अन्य ग्रन्थ

महाभारतम् (तीन खण्ड)
वाल्मीकि रामायण
षड्दर्शन
चाणक्य नीति दर्पण
भर्तृहरिशतकम्
प्रार्थनां लोक
प्रार्थना प्रकाश
प्रभात वन्दन
ब्रह्मचर्य गौरव
विद्यार्थियों की दिनचर्या
मर्यादा पुरुषोत्तम राम
दिव्य दयानन्द
कुछ करो कुछ बनो
आदर्श परिवार
वैदिक उदात्त भावनाएँ
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित
वैदिक विवाह पद्धति
ऋग्वेद सूक्तिसुधा
यजुर्वेद सूक्तिसुधा
अथर्ववेद सूक्तिसुधा
सामवेद सूक्तिसुधा
ऋग्वेद शतकम्
यजुर्वेद शतकम्
सामवेद शतकम्
अथर्ववेद शतकम्
भक्ति संगीत शतकम्
सत्य नारायण व्रतकथा